ओ३म्

क़यामत

जन्नत

दोज़ख़

लेखक :

देवप्रकाश

भूतपूर्व आचार्य अरबी-संस्कृत महाविद्यालय,

अमृतसर.

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर .... 5327 ..
पु. परिग्रहण क्रमांक .....

ओ३म्
गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक ... 5327
दयानन्द महिला महाविद्यालय

क़यामत

जन्नत

दोज़ख़

लेखक :

देव प्रकाश

भूतपूर्व आचार्य अरबी-संस्कृत महाविद्यालय,
अमृतसर.

पुस्तकालय
प्रविष्टि संख्या ... 3717
विषय ... 19.2.39

प्रथमावृति } बसंत पंचमी ... ८ फरवरी १९७३ { मूल्य:– ६ रुपये

प्रकाशक :

देवप्रकाश भूतपूर्व आचार्य अरबी-संस्कृत महाविद्यालय,
अमृतसर.

☐ आर्य-समाज दयानन्द मार्ग, रतलाम.

सर्वाधिकार लेखकाधीन

पुस्तक मिलने का पता–

(१) पं. रूददत्तजी, प्रधान आर्य समाज,
बाजार लक्ष्मणसर, अमृतसर.

(२) आर्य समाज, दयानन्द मार्ग, रतलाम.

मुद्रक :

श्री शारदा प्रिंटिंग प्रेस

☐ ३७, लक्कड़पीठा मार्ग, रतलाम म. प्र.

इस्लामी 'कर्म-फल'

के

सिद्धांत का चित्र

□ ● □

क़यामत (प्रलय) जन्नत (स्वर्ग) तथा दोज़ख़ (नर्क) कुरआन कर्मफल को तो मानता है, परन्तु सब प्राणियों के कर्मों का फल देने के लिये वह एक ही दिन मानता है। जिस को क़यामत कहते हैं। इस क़यामत के मैदान में एक ही बार सब प्राणी एकत्रित किये जायेंगे, और वहां ही सब के कर्मों का फ़ैसला किया जायगा। उस निर्णय के एश्चात जिनके पापों का तौल शुभ क़र्मों से भारी होगा उनको नर्क में और जिनके शुभ क़र्मों का तोल भारी होगा उन्हें स्वर्ग में भेजा जायगा यह लोग नर्क तथा स्वर्ग में सदैव रहेंगे, उससे निकाले नहीं जायेंगे। इन तीनों स्थानों का वर्णन इस पुस्तक में है। इस के पढ़ने से आप को अच्छी प्रकार ज्ञात हो जायगा, कि ऐसा वर्णन जिस पुस्तक में है, वह पुस्तक ख़ुदा की बनाई हुई होना तो एक ओर रहा किसी न्यायशील मनुष्य की बनाई हुई भी नहीं हो सकती। □□□

—देवप्रकाश

सत्य को जानने के लिए पढ़ें ।

यदि आप जानना चाहते हैं–कि कुरआन कैसे निर्मित हुआ उसमें क्या है ? हमारे बनाये 'कुरआन–परिचय' के तीनों भाग को पढिये । इन तीनों पुस्तकों मे धार्मिक जगत में ऐक क्रांति उत्पन्न कर दी है । अतः आप सज्जनों को इन तीनों भागों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये । यह 'कुरआन' की शिक्षा की मुँह बोलती तस्वीर है ।

—देवप्रकाश

कयामत

'**कयामत**' खड़े होने के अर्थ में धातु है । कयामत अर्थात वह निश्चित दिवस जब कि समस्त मृत प्राणी पुनः जीवित हो कर उठ खड़े हो जाएँगे । (करीमुल्लुगात)

'**अल्कयामत**'-कयाम-क़मा-युक़ुमो से धातु है । फिर '**हा**' के अधिवय से '**कयामाह्**' बन गया । जिसका अर्थ है--मनुष्य का एक ही बार खड़े हो जाना और उसके आकस्मिक उपस्थित होने हेतु 'है' को सचेत करने हेतु प्रविष्ट किया गया है, और कयामत (पुनः जीवित होने का दिन है) जिसमें सृष्टि उस अविनाशी और अनादि ब्रह्म के सन्मुख खड़ी हो जाएगी..........लोगों के हिसाब-किताब हेतु उपस्थित होना ।

तफसीर बयानुलकुरआन पारा १ पृ. ८७

'**कयामत**' शब्द कुरआन में ६४ स्थानों पर प्रयुक्त किया गया है, तथा इसके अतिरिक्त कुरआन में 'कयामत' के विभिन्न पर्याय हैं । जैसे:--(१) रोज़े हसरत (२) रोज़े निज़ामत (३) रोज़े हिसाब (४) रोज़े मुहासिब (५) रोजे सवाल (६) रोज़े सबकत (७) रोज़े तनाजा (८) यौमुर्रोब (९) यौमे ज़लज़ला (१०) उलट देने का दिन (११) रोज़े वाकया (१२) रोज़े कारयाह (१३) रोज़े राज़फाह (१४) रोज़े रादफाह (१५) रोज़े गासियाह (१६) रोज़े मुसीबत (१७) रोज़े तामह (१८) रोज़े साफह (१९) रोज़े तलाक़ (२०) रोजे फ़राक (२१) रोज़े मसाक (२२) रोज़े क़सास (२३) रोज़े मनाद (२४) रोज़े मआब (२५)

रोज़े अज़ाब (२६) रोज़े गुरेद (२७) रोज़े करार (२८) रोज़े लका (२९) रोज़े ज़ुज़ा (३०) रोज़े बला (३१) रोज़े गिरिया (३२) रोज़े हशन (३३) रोज़े वईद (३४) रोज़े पेशी (३५) रोज़े वज़न (३६) रोज़े हक (३७) रोज़े हुक्म (३८) रोज़े फसल (३९) रोज़े ज़मा (४०) रोज़े फतह (४१) रोज़े रुसवाई (४२) रोज़े अज़ीम (४३) रोज़े अक़ीम (४४) रोज़े ईर (४५) रोज़े दिन (४६) रोज़े यकीन (४७) रोज़े नशूर (४८) रोज़े मसीर (४९) रोज़े नफ़्ख़ा (५०) रोज़े सहीह (५१) रोज़े रजफ़ा (५२) रोज़े जुम्बश (५३) रोज़े तौबीख़ (५४) रोज़े नशर (५५) रोज़े खौफ़ (५६) रोज़े इज़तराब (५७) रोज़े मुन्तहिब (५८) रोज़े मावी (५९) रोज़े मीकात (६०) रोज़े मियाद (६१) रोज़े मर्साद (६२) रोज़े कलक (६३) रोज़े अरब (६४) रोज़े इफ्तकार (६५) रोज़े इन्कदार (६६) रोज़े इन्तशार (६७) रोज़े इन्तशाक़ (६८) रोज़े वक़ूफ (६९) रोजे ख़रूज (७०) रोज़े ख़लूद (७१) रोज़े तग़ाबन (७२) रोज़ अबूस (७३) रोज़े मालूम (७४) रोज़े मौऊद (७५) रोज़े मस्ऊद इत्यादि ।

मुकद्दमा तफसीरूल फुर्कान, मिर्जा हैरत पृष्ठ ११८--१९

इसके आगे जनाब मिर्जा साहिब ने विवरणात्मक ढंग से कयामत के दिन का विश्लेषण किया है । वह दिन, जिसमें संदेह नहीं है । वह दिन, जिसमें हार्दिक रहस्यों का परीक्षण हो । वह दिन, जिसमें कोई व्यक्ति किसी के कार्य न आए । वह दिन, जिसमें नैत्र ऊपर हो । वह दिन, जिसमें कोई मित्र, किसी मित्र का सहायक न हो । वह दिन, जिसमें कोई किसी का भला न कर सके । वह दिन, जिसमें नर्क की ओर धकेले जाएँ । वह दिन, कि पिता पुत्र के कार्य न आए । वह दिन, जिसमें मनुष्य

अपने माता-पिता और भ्राता से भागे । जिस दिन, न बोलने की और न आपत्ति करने की आज्ञा होगी । जिस दिन, कि प्राणीमात्र निकल खड़े होंगे । जिस दिन, प्राणियों पर अग्नि का संकट होगा । जिस दिन, कि सन्तान और माता--पिता लाभान्वित न होंगे । जिस दिन, कि अत्याचारियों की आपत्ति उनके कार्य न आएगी और उन्हें धिक्कार व बुरा स्थान प्राप्त होगा । जिस दिन, रहस्यों का परीक्षण हो, और हृदय की गुप्त बातें प्रकट होकर हृदय खुल जाएँ । जिस दिन, नेत्र दबे हों और स्वर मौन तथा एक--दूसरे की ओर परस्पर दृष्टिपात न हो और गुप्त बातें स्पष्ट तथा अपराध प्रकट हों । जिस दिन, बन्दे (मनुष्य) ले जाएँ जाये और उनके साथ साक्षी हो । बालक बृद्ध हो जाएँ, दण्ड स्थिर हो और कर्मों के कार्यालय खोले जाएँगे । नर्क प्रकट की जाएगी, जल को उबाला जाएगा, अग्नि धधकेगी, काफ़िर निराश होंगे, रंग परिवर्तित होंगे, ज़बान गूंगी और हाथ--पैर बोलते होंगे ।

मुकद्दमा तफसीरूल फुर्कान पृष्ठ १११

पाठक बन्धुओं ! कुरआन में वर्णित कयामत सम्पूर्ण सृष्टि की समाप्ति के पश्चात ही हो सकती है, किन्तु कुरआन ने सृष्टि समाप्ति का जो स्वरूप वर्णित किया है, उसे हम प्रथम ही लिख रहे हैं । कुरआन में वर्णित है:—

कुल्लो शैइन हालेकुन इल्ला वज्हहू लहुलहुक्मो व इलैहे तुर्जऊन ।

कुरआन पारा २० रकू ९/१२

अर्थात:—प्रत्येक वस्तु विनाश होने वाली है, अतिरिक्त खुदा के अस्तित्व के । उसके हेतु आदेश है और उसी की ओर पुनः जाओगे ।

"आज़मुत्तफासीर" ने लिखा है, कि खुदा के अतिरिक्त

प्रत्येक वस्तु नष्ट होने वाली है, किन्तु उसका मुंह और उसका आदेश (छोड़कर) आज़मुत्तफासीर, पारा २० पृष्ठ १३५

"इब्ने कसीर" ने लिखा है, कि समस्त प्राणी नाशवान हैं, मात्र अल्लाह का अस्तित्व विनाश से पवित्र और सुरक्षित है।

तफसीर इब्ने कसीर पारा २० पृष्ठ ५४

उसकी (खुदा की) सत्ता के अतिरिक्त समस्त वस्तुए नाशवान हैं, क्योंकि अल्लाह के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु सम्भव है, और सम्भव वही होता है, जो विनाशी स्वभावयुक्त होता है।

तफसीर मज़हरी पारा २० पृष्ठ ३१०

इस विषय की एक और अन्य आयत :-

कुल्लो मन इलैहा फ़ आ निम् दा यब्का वज्हो रब्बेका ज़ुलजलाले वल इकराम। कुरआन पारा २७ रकू १/११

अर्थात:—भूमि की सृष्टि नाशवान है। एक दिन आएगा कि इस पर कुछ न रहेगा और समस्त प्राणीमात्र को मृत्यु आ जाएगी। इसी भाति समस्त आसमानवासी भी मृत्यु को प्राप्त होंगे, किन्तु जिसे अल्लाह चाहे, मात्र अल्लाह की सत्ता शेष रहेगी। जो कि आदिकाल से अनन्तकाल तक रहेगी। जो मृत्यु से और नाश से पवित्र व सुरक्षित है।

तफसीर इब्ने कसीर पारा २७ पृष्ठ ५५

उक्त आयतों से यह स्पष्ट हो गया कि वर्तमान सृष्टि में जो भी कुछ उपस्थित और उपलब्ध है, वह समस्त नष्ट होजाएगा, किन्तु उपर्युक्त वर्णित दूसरी आयत में कहा गया है, कि किन्तु जिसे अल्लाह चाहे, वह नाश नहीं होगा। यदि प्रथम आयतानुसार ही इस द्वितीय आयत में यह शब्द समाहित न होते तो खुदा स्वयं घोर संकटग्रस्त हो जाता, क्योंकि उस स्थिति में तो खुदा का

सिंहासन उठाने वाले फरिश्ते भी मृत्यु या विनाश से बच न पाते। इसी स्थिति को सम्भालने हेतु उपर्युक्त द्वितीय आयत में, किन्तु जिस अल्लाह चाहे, शब्दों की वृद्धि की गई है। इसकी व्याख्या हम आगे प्रस्तुत करेंगे। कयामत के दिन खुदा न्याय करेगा और उस न्याय का आधार क्या होगा ? कुरआन और हदीस में इसका वर्णन निम्नानुसार है:--

व इन्ना अलैकुम लहाफेज़ीन करामन कातेबीन यालमूना मा तफअलून्। कुरआन पारा ३० रकू १/७

अर्थात:--निश्चय तुम पर रक्षक हैं, जो लिखने वाले प्रतिष्ठित हैं, जो कुछ तुम करते हो, वह जानते हैं।

व्याख्या:-यद्यपि तुम्हारी गति-विधि-वार्तालाप तथा तौर तरीकों की रक्षा करने वाले फरिश्ते तुम पर नियुक्त हैं, जो अल्लाह के यहां प्रतिष्ठित दण्ड और फल हेतु तुम्हारे कर्मपत्रों में तुम्हारे प्रत्येक कर्म को लिखने वाले हैं। तुम जो कुछ भली-बुरी बात या कर्म करते हो, उन्हें वह जानते हैं।

तफसीर मज़हरी पारा ३० पृष्ठ ३३१

व्याख्या:-किन्तु विशेष रूप से वह तुम्हारे कर्म लिपिबद्ध करते रहते हैं, और तुम्हारी बुराई व रात दिन के कृत्यों को पृष्ठों में विस्तृत रूप से अंकित करते रहते हैं। अर्थात वह फरिश्ते तुम्हारे कृत्यों व गतिविधियों के दैनन्दिनी लेखक हैं। जो कुछ तुम करते हो, उन्हें समस्त का ज्ञान है। यदि सहस्रों आवरणों के मध्य भी कोई कर्म करोगे, तो वह कर्म भी ज्यों का त्यों कर्म पत्र के पृष्ठों में लिखा पाओगे। आज़मुत्तफासीर पारा ३० पृष्ठ ११७

मृत्यु-आगमन कैसे ?

आयत:--व लौ तरा इज़ यतवफ्फ़ल्लाज़ीना कफरूलमलाएकतो

यज़रेबूना वजुहहुम व अदबाराहुम वज़ूक़ू अज़ाबलहरीक।

कुरआन पारा १० रकू ७/३

अर्थात:--ऐ पैगम्बर ! यदि तू देखता कि फरिश्ते किस बुरी तरह काफिरों के प्राण निकालते हैं, व उस समय उनके मुँह व पीठ पर किस बुरी तरह मारते हैं और कहते हैं, कि अपने कुकृत्यों के कारण अग्नि का संकट सहन करो।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १० पृष्ठ १६

एक और आयत, जिसमें फरिश्ते प्रश्न करते हैं:--

इन्नल्लाज़ीना तवफ्फाहो मुल्मलाएकतो जामेली अन्फुसेहिम कालू फ़ी मा कुन्तुम । कुरआन पारा १५ रकू १४/११

अर्थात:--निसन्देह, फरिश्ते जिन लोगों की आत्मा को अपने अधिकार में लेते हैं, वह अत्याचारी थे अपने स्वय के प्राणों पर, फरिश्ते प्रश्न करते हैं-तुम किस धर्म में थे ?

अनुवाद शाह रफीउद्दीन पृष्ठ १२६

मिर्ज़ा हैरत देहलवी उपर्युक्त दोनों आयतों के सन्दर्भ में सैल साहिब के आरोपों के प्रत्युत्तर में लिखते हैं, नर्क का वर्णन करने से पूर्व "**मुन्किर--नकीर**" के विषय में किञ्चित लिखना आवश्यक है। जिसका विश्वास प्रत्येक कट्टर मुसलमान को है, कि यह कब्र का संकट काफिरों को होता है। तथापि सूरत मुफ़ाल में लिखा है, (यह आयत हम पूर्व में लिख चुके हैं) कि यदि तू देखे कि जब फरिश्तें काफिरों की आत्मा को वशीभूत कर लेते हैं, तो उनके मुँह और शरीर पर प्रहार कर कहते हैं, कि तुम इस दण्ड और दाह का मज़ा चखो, और ऐसे ही विचार सूरत मुहम्मद (यह आयत भी पूर्व में लिख चुके हैं) में भी वर्णित हैं। इन उपर्युक्त कुरआनी आयतों में हदीसों को सम्मिलित कर

व्याख्याकारों ने मुन्कीर और नकीर के प्रश्न का निराकरण उपस्थित किया है। तदापि इस कब्र के साँकट को इमाम गज़ाली ने अपनी पुस्तक 'जिनतुल अद्यान' में यों वर्णित किया हैं:-

"यह वह फरिश्ते हैं, जिनके नाम मुन्कीर और नकीर हैं, और जिनकी आकृति अत्याधिक धृणित व भयंकर है तथा जिनके नैत्र भयानक हैं। और एक हदीस में यह भी है, कि यह दोनों अन्धे--गूंगे और बहरे हैं (वाह ! यह तो कब्र में खूब प्रश्नोत्तर करते होगे ?) तात्पर्य यह, कि यह दोनो फरिश्ते शव के कब्र में दफन होने के पश्चात उस शव को कब्र में उठा कर बैठाते हैं। मुसलमानों के शव केवल कफन सहित और बिना सन्दूक के दफन किये जाते हैं और कब्र में एक ओर लहद (कन्दरा) निर्मित की जाती है तथा उसमें मिट्टी नहीं भरी जाती है व लकद (कन्दरा) का निर्माण इसी हेतु ही किया जाता है कि उन फरिश्तों के सन्मुख यह शव कब्र में सुविधानुसार उठ बैठ सकें तब मुन्कीर और नकीर उन मृतकों से यह प्रश्न करते हैं:-- (१) तेरा पालनकर्ता कौन है ? (२) तेरा धर्म क्या हैं (३) तेरा पैग़म्बर कौन है ? और (४) तेरा किब्ला क्या है ? यदि इन प्रश्नों के उत्तर मृतक भलिभांति न देगा, तो संकट के फरिश्ते लौहे के हथोड़ों से ऐसे भयकर प्रहार उनके मस्तक पर करेंगे। कि वह व्यक्ति, जिस पर यह सकट हो रहा है, वह इस पीड़ा से भयकर शोर करेगा, कि उसके स्वर को मनुष्य और जिन्नों के अतिरिक्त समस्त पशु-पक्षी, पूर्व से पश्चिम तक सुनते हैं। (हां मिर्जा साहिब ! मनुष्य और जिन्नों को स्वर नहीं सुनाई देगा ? क्योंकि यदि यह सुन लें तो यथार्थ प्रकट हो जाता है। अतः पूर्व से पश्चिम तक पशु-पक्षी को ही सुनाई देने में लाभ है।) तत्पश्चात प्रत्येक कब्र में ७-७ फनधारी नागों को भेजा

जाएगा, जो कि कयामत तक अपराधियों के शरीरों को काटते रहेंगे। मुन्कीर और नकीर के इन प्रश्नों के उत्तर बालकों को सिखाये जाते हैं। जैसे:-(१) अल्लाहो रब्बी (२) वल्इस्लामो दीनी (३) वल्कुरआनो किताबी, और (४) वल्काबतो किब्ल-की अर्थात (१) खुदा मेरा पालनकर्ता है. (२) मेरा धर्म इस्लाम है, (३) कुरआन मेरी किताब है और (४) काबा मेरा किब्ला है।

इसके आगे मिर्जा साहिब ने अत्याधिक विभिन्न मनघडन्त व्यर्थ की व्याख्याएँ निरूपित की है, जो कि सर्वथा अर्थहीन और निष्प्रयोजनीय ही है। तत्पश्चात अपने मत की पुष्टि हेतु यह भी लिखा है, कि यहूदी भी इस कब्र के संकट को स्वीकारते हैं। मुकद्दमा तफसीरूल फुर्कान पृष्ठ ६७-६८

इसी कब्र के संकट के विषय में मिर्ज़ा साहिब ने अपनी इसी पुस्तक में अबू हुरैरा से उद्धृण लिखा है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया—मौमिन अपनी कब्र में एक हरे-भरे उद्यान मे रहता है, और उसकी कब्र ७० गज़ विस्तृत हो जाती है, तथा पूर्णिमा की चांदनी सदृश्य प्रकाश्य हो जाती है, व काफ़िर की कब्र में यह संकट होना है ७-७ फनधारी नाग कयामत तक उनके शरीर को नोचते रहते हैं।

मुकद्दमा तफसीरूल फुर्कान पृष्ठ ७२

मृत्यु सम्बन्धी एक और आयत :—

व युर्सेलो अलेकुम हफ़ज़तन हत्ता इज़ा जाआ अहदकुमुल्मौतो तवफ्फतोहो रूसूलुना व हुम ला योफर्रेतून् ।

कुरआन पारा ७ रकू ८/१४

अर्थात—वही (खुदा) तुम पर निगरानीकर्ता भेजता हे। यहाँ तक कि जब तुम में से किसी को मृत्यु आ पहुँची है तो हमारे भेजे हुँए उसकी आत्मा को वशीभूत कर लेते हैं और अपने

कर्तव्य पूर्ति में वह कोई न्यूनता नहीं करते। **हफ़ज** से तात्पर्य हैं व कर्मपत्रों में कर्मों को अंकित व लिपिबद्ध करनेवाले, ताकि कयामत के दिन उन कर्मपत्रों को खोला जाए और आज्ञाकारी व अवज्ञाकारी समस्त के सन्मुख प्रकट हो जाए।

इब्ने अबी हातम और इब्ने अबी शैबा ने इब्बे अबास का कथ्य उदधृत किया है, कि **रूसुलुना**, से तात्पर्य हैं, कि प्राण निकालनेवाले के सहायक फरिश्ते।

अबू शैख ने भी नख्ई के उद्धृण से यही उदधृण किया है। सियूती ने वहाब बिन मुम्बा का कथन उदधृत किया है, कि जो फरिश्ते मनुष्य के समीप रहते हैं, वही उसकी मृत्यु को भी लिखते हैं और जब मृत्यु का समय आ जाता है, तो वही फरिश्ते आत्मा वशीभूत कर, **मलकलमौत**, (मृत्यु यम) के सिपूर्द कर देते हैं, अर्थात कर्मपत्र लेखक मृत्यु के फरितों के अधीन होते हैं।

हदीस में वर्णन है, कि मरनेवाले पर ४ फरिश्ते उतरते हैं, एक दाहिने पैर से, दूसरा बांए पैर से, तीसरा बाँए हाथ और चौथा दाहिने हाथ से प्राण खीचता है।

कल्बी का कथन है, कि मलकलमौत आत्मा को वशीभूत कर दया और संकट के फरिश्तों को सिपूर्द कर देता है।

जुबैर ने अपनी तफ़सीर में इब्ने अब्बास का कथन उद्धृत किया है, कि मलकलमौत का अधिकार भूमि के समस्त पदार्थों पर इस भांति है, कि जिस भांति की अपने हाथों में पकड़े हुए पदार्थ पर है।

इब्ने अबी हातम ने ज़ुबैर बिन मुहम्मद के उद्धृण से कहा है, कि या रसूल्लिल्लाह मल्कल्मौत तो एक है और पूर्व व पश्चिम के मध्य दो सेनाएँ युद्ध करती है व परस्पर मृत्यु को प्राप्त करती है। इस एक ही अवसर पर मल्कल्मौत कहां-कहां जाता और किस-किस के प्राण वशीभूत करता है ? हुजूर ने फरमाया-मल्कल्मौत हेतु विश्व इस भांति सीमित कर दिया गया है, जिस भांति तुम्हारे सन्मुख एक थाल होता है। संसार की कोई भी वस्तु मल्कल्मौत से छूट नहीं सकती।

इब्ने अबी दुनिया और अबू शैख ने अशअस बिन असलम का कथन उद्धृत किया है, कि हज़रत इब्राहीम ने मल्कल्मौत से, जिसका नाम अज़राईल है, जिसके दो नेत्र मुख के आगे और दो पृष्ठ भाग में हैं, ज्ञात किया, कि जब एक व्यक्ति पूर्व में और द्वितीय पश्चिम में हो और वबा (महामारी) भूमि पर व्याप्त हो या दो सेनाएँ परस्पर युद्धरत हों, तो आप क्या करते हैं ? अज-राईल ने कहा- मैं अल्लाह के आदेश से आत्माओं को पुकारता हूँ और समस्त आत्माएं मेरी चुटकी में आ जाती है।

मैं कहता हूँ, कि हदीसों और सहाबा की रवायतों के प्रकाश में विषय का यथार्थ यह है, कि जिस भांति भौतिक विश्व में सूर्य का सम्बन्ध एक ही समय में समस्त पदार्थों से समान है, इसी भांति मल्कल्मौत हेतु सम्पूर्ण भूमि और भूमि की दिशाएं हैं।

तफसीर मज़हरी पारा ७ पृष्ठ १५५ से ५८

उपरोक्त वर्णन हमने एक व्यक्ति की मृत्यु से सम्बन्धित किया है, कि व्यक्ति की मृत्यु कैसी होती है। अब सम्पूर्ण सृष्टि का महानाश कैसे होगा ? इसका वर्णन करते हैं:—

एज़श्शम्सो कुव्वैरत व एज़नज़्ज़ मन कदरत व एज़ल ज़िबालो

सूय्यरत व एज़ल इशारो उत्तेलत व एज़ाल वहुशो हुशेरत व एज़ल बेहारो सुज्जेरत व एज़ान्नफुसो ज़ुव्वेजात व एज़ाल मौउदतो सोएलत बेअय्ये ज़म्बिन कुतेलत व एज़ास्सोहोफो नुशेरत व एज़-स्समाओ कुसेतत व एज़ल जहिमो सोहरत व एज़ल ज़न्नतो उदलिफत अलैमत नफ्सुम्मा अहज़रत।

कुरआन पारा ३० रकू १/६

अर्थात:- जिस दिन सूर्य का प्रकाश अन्धकारयुक्त हो जाएगा..... हज़रत इब्ने अब्बास का कथन अबू शैख ने इस भाँति उद्धृत किया है, कि कयामत के दिन खुदा सूर्य-चन्द्रमा और सितारों को प्रकाशहीन कर समुद्र में डाल देगा और एक पश्चिमी वायु प्रवाहित करेगा जो समुद्र को छुएगी और समुद्र अग्नि हो जाएगा, कतिपयों का कथन है, कि जब सूर्य को समुद्र में फेंका जायगा तो समुद्र उष्ण हो कर अग्नि बन जाएगा।

इब्ने अबी हातम ने इब्ने अबी मर्यम का कथन उद्धृत किया है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया- जब सूर्य को प्रकाश-हीन कर नर्क में फेंक दिया जाएगा और जब सितारे टूट-फूट कर नर्क में गिर जाएंगे और ईसा और उसकी माता के अतिरिक्त जिसकी अल्लाह के सदृश्य पूजा की जाती थी, वह भी नर्क में समाहित कर दिये जाएंगे, और जब सितारे टूट पड़ेगें. आसमान से बिखर कर भूमि पर आ पड़ेंगे।

कल्बी का कथन है, कि उस दिन आसमान से सितारों की वर्षा होगी और कोई तारा गिरे बिना न रहेगा, और जब पहाड़

चलाये जाएंगे अर्थात भूमि से चला कर वायु में परमाणुओं के सदृश्य बिखेर दिये जाएंगे, उस दिन उंटनियां बिना ग्वाले के मुक्त कर दी जायेगी।

हज़रत उब्बय बिन काब का कथन है, कि एक तीव्र गति उत्पन्न होगी और परस्पर एक-दूसरे में समाहित हो पड़ेंगे, और यह भी कहा है, कि चौपायों को जीवित कर उठाया जाएगा और परस्पर प्रतिकार लेने हेतु एकत्रित किया जाएगा।

हज़रत इब्ने अब्बास का कथन है, कि जब समुद्र भड़काये जाएँगे, तो वह भड़कती आग बन जायेंगे।

मुजाहिद और मकातल ने कहा– कुछ सागर कुछ सागरों में घुस पड़ेंगे और मीठा व नमकीन जल मिल कर उष्ण जल का एक समुद्र नारकीयों हेतु निर्मित हो जाएगा।

इब्ने अबी हातम व इब्ने अबी दुनिया ने उबय्य बिन काब का कथन उद्धृत किया है, कि कयामत के पूर्व ६ संकेत प्रकट होंगे. लोग बाज़ारों में व्यस्त होंगे कि सूर्य की ज्योति अकस्मात लुप्त हो जाएगी और उसी समय पहाड़ भूमि पर धराशायी हो जायेंगे, भूमि में कम्पन्न उत्पन्न हो उठेगा और मनुष्य व जिन्नात भयभीत हो उठेंगे। जिन्नात मनुष्यों से कहेंगे– हम समाचार लाकर देते हैं। तदापि वह समुद्र तक पहुँचेंगे और समुद्र भड़कती आग की तरह दृष्टिगोचर होंगे। इसी मध्य एकाएक वायु प्रवाहित होगी और समस्त प्राणी मृत्यु के ग्रास हो जाएंगे··· जीवित दफन की गई कन्याओं के सम्बन्ध में प्रश्न किया जायेगा, कि किस अपराध में

उन्हें कत्ल किया गया ? और जब कर्मपत्र निर्णय हेतु विस्तृत किये जाएंगे अथवा जिनके कर्मपत्र होंगे उनको वितरित कर दिये जाएंगे । जब आसमान उखाड़ दिया जाएगा, जैसे--कत्ल किये गये का चर्म उतारा जाता है। यह घटना उस समय घटेगी जब सूर्य का प्रकाश लुप्त हो जाएगा और सितारे टूट कर बिखर जायेंगे और भूमि व आसमान को लपेट दिया जायगा, और इस आसमान को दूसरे आसमान में तथा इस भूमि को दूसरी भूमि में परिवर्तित कर दिया जायेगा, सितारे बिखर जायेंगे, चन्द्र--सूर्य को ग्रहण लग जाएगा, आसमान ताम्र सदृश्य हो जाएगा और ऊपर से हटा दिया जाएगा, पहाड़ गतिशील हो जायेंगे, समुद्र आग बन जायेंगे, भूमि में उँचाई निचाई हो जाएगी और फट जाएगी, उसकी आकृति पूर्वोक्त आकृति से विरुद्ध हो जाएगी, भूमि और आसमान लपेट दिये जायेंगे, और जब अल्लाह के शत्रुओं हेतु नर्क अत्याधिक भड़काया जाएगा, और जब स्वर्ग संयमीयों के समीप कर दिया जाएगा, उस समय प्रत्येक मनुष्य अपनी भलाई-बुराई से अवगत हो जायेगा ।

तफसीर मजहरी पारा ३० पृ. ३१४ से १६

इसी भांति कुरआन पारा ३० की सूरत इन्फितार में भी वर्णन है।

सामुहिक महानाश कैसे ?

मुस्लिम विद्वानों का कथन है, कि ३ नफ्खे होंगे । नफ्ख कहते हैं सूर (नरसिंहा) फूंकने को, जिसको इसराफ़ील फूंकेंगे ।

प्रथम नफ्ख:-

फ़ इज़ा नुफ़ खा फिस्सूरे नफ़्खतु व्व वाहेदातुन व हुमेला तिल्अर्जो वल जिबालो फ़दुक्का दक्तंव्व वाहेदातन ।

कुरआन पारा २६ रकू १/५

अर्थातः– इब्ने उमर का उद्धृण है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया– सूर एक सींग होगा, जिसमें फूंका जायेगा (तिर्मज़ी, अबू दाऊद और दारमी) जब सूर में एक बार फूंक मारी जाएगी उससे तात्पर्य सूर मदहोशी (मूर्छा) है। अर्थात वह सूर, जिसका स्वर सुनकर प्रत्येक जीवित प्राणी बेहोश हो जाएगा। भूमि और पहाड़ों को उनके स्थानों से उठा लिया जाएगा और समस्त को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया जाएगा।

द्वितीय नफ्ख फ़ज़ा :–

व यौमा युनफ़खो फिस्सूरे फ फ़ज़ा मन फिस्समावाते व मन् फिलअर्ज़े इल्ला मा शा अल्लाह्।

कुरआन पारा २० रकू ७। ३

अर्थात्:––और जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी, सो जितने भूमि व आसमान में है, समस्त घबरा जायेंगे किन्तु जिसे खुदा चाहे।

लिखा है, सूर में हज़रत इस्राफ़ील खुदाई आदेश से फूंक मारेंगे, उस समय धरती पर अत्याधिक निकृष्ट लोग होंगे, विलम्ब तक नरसिहा फूंकते रहेंगे, जिससे समस्त परेशान दशा में हो जायेंगे, अतिरिक्त शहीदों के जो खुदा के यहाँ जीवित है।

तफसीर इब्ने कसीर पारा २० पृष्ठ २७

तृतीय नफ्ख साक व कयाम :–

व नुफेख़फिस्सूरे फसएका मनफिस्समावाते वा मन फिलअर्ज़े इल्ला मा शा अल्लाह सुम्मा नुफेख़ा फीहे उख़रा फ़ इज़ा हुम कयामुं य्युनज़रून। कुरआन पारा २४ रकू ७।४

अथात्:--जब सूर में फूँका जाएगा, तो समस्त आसमान और धरती निवासी मर जायेंगे, किन्तु जिन्हें खुदा चाहेगा उन्हें मृत्यु न आएगी।

अधिकांश मुस्लिम विद्वानों का कथन है, कि नफ्खे ३ होंगे। फ़ज़ा, जिससे समस्त सृष्टि में घबराहट उत्पन्न हो जाएगी। द्वितीय नफ्ख़--लौटना है। आयत का अन्तिम भाग 'नुफ़ख़ा फ़ीहे उख़रा फ़ इज़ा हुम कयामुँय्यनज़रून्' अर्थात् उसके मध्य नरसिंहा फूँका जायेगा, कि अकस्मात वह उठ खड़े होंगे। अर्थात् जीवित हो उठेंगे। आयत में एक वाक्य है "किन्तु जिन्हें खुदा चाहेगा" इस वाक्य पर मुस्लिम विद्वानों में परस्पर भयंकर मतभेद है।

सईद बिन जुबैर का कथन है, कि यह वह गाज़ी (जो जहाद (धर्म युद्ध) से जीवित लौट आए) और शहीद (जो युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हो) हैं, जो कयामत के दिन खुदाई सिंहासन के आसपास गर्दनों में तलवारें लटकाए खड़े होंगे। कयामत के दिन फरिश्ते उनके हेतु याकूत (जवाहिरात) की ऊँटनियों, जिनकी वल्गाएँ मोतियों और कजावे इतलस (कीमती वस्त्र) के होंगे, और उनके केश रेशम से अधिक कोमल होंगे। यह लोग ऊँटनियों पर आसीन हों, फरिश्तों से कहेंगे– हमें हमारे रब्ब (प्रभू) के पास ले चलो, देखें वह आज सृष्टि का क्या न्याय करते हैं? तब यह लोग खुदा के निकट पहूँचेंगे, तो वह इन्हें देख कर हँसेगा और बिना हिसाब-किताब स्वर्ग में प्रविष्ट होने की आज्ञा प्रदान कर देगा।

द्वितीय वर्णन हज़रत अन्स का है, कि जब-हज़रत मुहम्मद ने यह (उपरोक्त) आयत पढ़ी, तो उनके सहाबा (मित्रों) ने निवेदन किया– ऐ खुदाई रसूल ! यह कौन लोग हैं? जिन्हें खुदा ने इस महानाश से मुक्त किया? हज़रत ने फरमाया–यह ज़िब्रिल-मेकाईल-अज़राईल और इस्त्राफ़ील व खुदाई सिंहासन को उठाने वाले फरिश्ते हैं।

कतिपय व्याख्याकार कुछ और भी कहते हैं, किन्तु सहीह (प्रमाणिक) हदीस से यह सिद्ध हो चुका है, कि 'इल्ला मा शा अल्लाह' से चारों फरिश्ते आदि और सिंहासन उठानेवाले फरिश्ते तात्पर्य है। आज़मुत्तफासीर पारा २४ पृष्ठ २६६

उक्त विषय में तफसीर मज़हरी के पारा २० पृष्ठ २८७ से २८६ तक सविस्तार सहित लिखा गया है। बैहकी ने भी उक्त चारों फरिश्तें और आठ सिंहासन उठानेवाले फरिश्तें, इस प्रकार कुल १२ फरिश्तों का वर्णन किया है। नफ़खों के मध्य कितना अन्तराल होगा? इस सम्बन्ध में मज़हरी ने कुरआन में वर्णित सूरत नाज़ेयात, पारा ३० की आयत उद्धृत की है।

'यौमा तर्जफुर्राज तत्तबओहर्रादिफ़ह' 'रादेफ़ह' की व्याख्या में लिखते हैं, उस नफ़खा प्रथम के समय से स्वर्ग और नर्क में प्रविष्टि तक ५० हज़ार वर्ष की अवधि होगी, किन्तु हिसाब-किताब तो इस अवधि के किञ्चित समय में होगा। 'राजफ़ह' से तात्पर्य प्रथम नफ़खा और 'रादेफ़ह' से तात्पर्य द्वितीय नफ़ख है। बैहकी ने हज़रत इब्ने अब्बास का भी यही कथ्य उद्धृत किया है, कि

दोनों नफ़्खों के मध्य ४० वर्षों की अवधि होगी। हलीमी ने भी इन्हीं ४० वर्षों का वर्णन किया है। अबू हुरैरा ने भी इसी प्रकार कहा है। तफसीर मज़हरी पारा ३० पृष्ठ २८८

कुरआन की एक और आयतः—

यौमा युन्फ़को फिस्सूरे फ़तातूना अफ़वाजम व फुतेहतिस्समाओ फ़कानत अबवाबम् व सुय्येरितिल्जबालो फ़कानत सराबा।

कुरआन पारा ३० रकू १/१

व्याख्या–जिस दिवस सूर फूँका जाएगा। यह सत्यासत्य को पृथक करने का दिवस है। प्रमाणिक उद्धृण है, कि इब्ने मस्ऊद ने फरमाया– *सूर का आकार सींग के सदृश्य होगा, जिसमें फूँका* जाऐगा। हज़रत इब्ने उमर ने भी ऐसा ही कहा है।

वहब का कथन है, कि सूर की बनावट धवल मोती से होगी, जिसमें शीशे सी चमक होगी, अर्थात सूर फूँकते ही तुम कब्रों से निकल कर यूथ के यूथ होकर हिसाब (न्याय) के स्थान पर आओगे।

अबू ज़र ने हज़रत मुहम्मद के प्रमाण से लिखा है, कि कयामत के दिन लोगों के ३ समूह होंगे। प्रथम समूह उन लोगों का होगा, जो तृप्त–वेशभूषायुक्त और वाहनों पर आसीन होंगे। द्वितीय समूह पैदल दौड़ता होगा और तृतीय समूह मुँह के बल घसीट कर लाया जाएगा। (निसाई–हाकम और बैहकी।)

तफसीर मज़हरी पारा ३० पृ० २६७

कब्र में प्रश्नोत्तर

हदीसः-

अनिल्बरारिब्ने आज़बिन अनिन्नबिय्ये सल्योसब्ने तुल्ला हुल्लाजीना आमनू बिल्कौलिस्साबते काला नज़लत् फ़ी अज़ाबिल्कबरे युकालो लहू मन रब्बोका फ़ याकुलो रब्बे यल्लाहोवन्नबियो मुहम्मदुन फ़ जालेका कौलोहू योसब्नेतुल्ला हुस्लाजीना आमनू बिल्कौलिस्साब्ते फ़िल हयातिद् निया व फिल्आखेरते ।

सुनन इब्ने माज़ा भाग ३ पृष्ठ ४०७

अर्थातः-बरार बिन आज़िब से उद्धृण है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरशाया-खुदा ईमानवालों को सुरक्षित और दृढ़ रखता है। यह आयत कब्र के संकट-विषयक अवतरित हुई। मृतक मनुष्य से पूछा जाता है-तेरा रब्ब (प्रभू) कौन है ? वह कहता है--मेरा रब्ब अल्लाह है, और नबी मुहम्मद है ।

इससे अगली हदीस में इब्ने उमर से उद्धृण है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया-जब कि तुम में से कोई मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, तो सुबह और शाम उसका गन्तव्य उसके सन्मुख प्रस्तुत किया जाता है। यदि वह स्वर्गवासियों में से है, तो स्वर्गवासियों में सही और यदि वह नर्कगामियों में सही, और कहा जाता है-यह तेरा गन्तव्य है, यहां तक कि तू कयामत के दिन उठे ।

काब से उद्धृण है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया--मौमिन की आत्मा एक पक्षी की आकृति में स्वर्ग के वृक्षों में चुगती फिरती है । यहां तक कि कयामत के दिन अपने मूल शरीर में समाहित की जाएगी ।

पृष्ठ ४०६ में अबू हुरैरा से उद्धृत है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया –जो मनुष्य नेक होता है, उसे अपनी कब्र में बैठाया जाता है, न उसको भय और न वह परेशान होता है। तत्पश्चात उसके हेतु एक ओर से नर्क की ओर खिड़की खोली जाती है जिससे वह नर्काग्नि को देखता है, और दूसरी ओर से एक खिड़की स्वर्ग की ओर खोली जाती है, तथा कहा जाता है यही तेरा गन्तव्य है।

आयत –

मिन्हा खलक्नाकुम् वा फ़ीहा नुईदोकुम् वा मिन्हा नुख्रिजोकुम् तारतन उख्रा। कुरआन पारा १६ रकू २।११

अर्थः–इस भूमि से हम (खुदा) ने तुमको उत्पन्न किया, इसी में समाहित करेंगे और इसी से तुमको पुनः निकालेंगे।

इस आयत की व्याख्या में तफसौर कादरी ने यह लिखा है, कि हमने तुम्हें अर्थात तुम्हारे पिता आदम को, मूल सृष्टि व तुम्हारे शरीरों को प्रथम बनावट भूमि की मिट्टी ही है।

'तिवयान' में है, कि जहाँ मरणोपरान्त मनुष्य को गाड़ा जाना होता है, वहाँ की तनिक सी मिट्टी खुदा फरिश्ते के द्वारा मंगवाता है और जिस वीर्य से मनुष्य का शरीर निर्मित होता है, उस पर वह मिट्टी डाल देता है। उससे मनुष्य की उत्पत्ति होती है और जिस स्थान से वह फरिश्ता मिट्टी उठा कर लाता है, उसी स्थान पर मरणोपरान्त वह मनुष्य गाड़ा जाता है।

इसीलिए खुदा ने कहा है, कि तुमको भूमि से उत्पन्न किया है और इसी भूमि में तुमको मृत्यु-पश्चात फिर ले जाएँगे तथा इसी भूमि से तुमको पुनः निकालेंगे हम कर्मफल और दण्ड के हेतु। तफसीर कादरी पारा १६ पृ. ३४-३५

मज़हरी ने लिखा है, कि कयामत के दिन पुनः भूमि से निकालने का तात्पर्य यह है, कि शरीर के बिखरे परमाणु, जो मिट्टी में मिल चुके होंगे, उन्हें एकत्रित कर पुनः नये ढंग से जोड़ा जाएगा और मृत्यु पूर्व जो मूल आकृति थी, वैसे ही निर्मित कर दी जायेगी। तत्पश्चात उसमें आत्मा प्रवाहित कर दी जाएगी।

तफसीर मज़हरी पारा १६ पृष्ठ ४०२

आयत—

यौमा यख़रेजुना मिनल अजदासे सिराअन कअन्नहुम् इला नुसुबिय्योफ़िज़ून। कुरआन पारा २९ रकू २ ८

अर्थः- जिस दिन निकलेंगे वह कब्रों में से दौड़ते हुए अर्थात वह मूर्तियों के स्थानों की ओर दौड़ते हैं।

अनुवाद शाह रफीउद्दीन पारा २९ पृष्ठ ८०६

व्याख्या—जिस दिन कि वह निकलेंगे कब्रों से शीघ्रता करने वाले हज़रत इस्राफ़ील का आमंत्रण स्वीकार कर अर्थात उस ध्वज की ओर जो खड़ा है, दोड़ते हैं। जैसे बिखरी हुई सैन्य जो अपना ध्वज स्थिर देखती है, और उसकी ओर दौड़ती है।

तफसीर कादरी पारा २९ पृ. ५७५

आयत:—

वा अन्नस्साअता आतियातुल लारेबा फ़ीहा वा अन्नल्लाहा यब्अ-सोमन फ़िल कबुर। कुरआन पारा १७ रकू १/८

अर्थ--और निसन्देह, कयामत आनेवाली है और खुदा उठाएगा उन लोगों को, जो कि कब्रों में है।

अनुवाद शाह रफीउद्दीन पृष्ठ ४५८

व्याख्या--यह तर्क इस हेतु है, कि लोग निसन्देह जान लें, कि कयामत आनेवाली है, और यह भी जान लें, कि खुदा अवश्य उन लोगों को जो कब्रों में है, अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार हिसाब लेने और प्रतिकार देने हेतु उठाएगा।

तफसीर कादरी पारा १७ पृ. ७२

इसी विषयक एक और आयत:—

वा यकुलूना मता हाज़लवादो इन् कुन्तुम स्वादेकीन्। मा यन्जु-रूना इल्ला सैहतम् वाहिदातन् ताखुजोहुम् वहुम यखस्सेमून्। फ़ ला यस्ततिऊनन्नोसियतव्व व ला इला आहलेहीम् यर्जोऊन। व नुफेखा फिस्सूरे फ़ इजा हुम मिनल अजदासे इला रब्बेहिम यान्से-लून। कालू या वैलना मम्बासना मिम्मर्कदेना हाज़ा मा वअदर्र-हमानो व सदकल मुर्सलून्। इन कानत इल्ला सैहतम वाहिदतन फ़ इजा हुम जमीउल्लदेना मोहजरून।

कुरआन पारा २३ रकू ३ २

व्याख्या:—

काफ़िर यह कहते हैं- कयामत आने का वचन कब पूर्ण होगा ? यदि सच्चे हों, तो इसके अन्गमन का समय दर्शा दो ?

यह लोग एक कठोर आवाज के प्रतिक्षित हैं, जो उनको आ पकड़ेगी। ऐसी स्थिति में कि वह वाद-विवाद में रत होंगे।

हज़रत इब्ने अब्बास के मत में 'सैहतुम् वाहिदातुन्' से तात्पर्य प्रथम बार सूर फूंका जाना है। अर्थात ऐसी स्थिति में सूर का स्वर उद्घोषित हो, जब कि वह सांसारिक कार्यों में ससग्न हों, लेन-देन, खेतीबाड़ी अथवा अन्य सांसारिक विषयों में वाद-विवाद रत हों, और कयामत के आगमन की हृदय में रञ्चमात्र भी कल्पना न हो।

शैखैन (मुस्लिम व बुखारी के लेखक) ने सहीहैन (मुस्लिम-बुखारी) में कहा है, कि रसूल्लिल्लाह ने फरमाया-कयामत ऐसी स्थिति में आजाएगी, कि दो व्यक्ति वस्त्र विस्तारते क्रय--विक्रय में व्यस्त होंगे, न तो मूल्य निर्धारित कर सके होंगे, न वस्त्र ही समेट सके होंगे, कि अकस्मात सूर का स्वर सुनाई देगा। व्यक्ति ऊँटनी का दूध दोहन कर लौट रहा होगा व उसे पान भी न कर सकेगा, मनुष्य रोटी का ग्रास मुँह में रखने के पश्चात निगल भी न पायेगा कि कयामत आच्छादित हो जाएगी। (रवाहो अबू हुरैरा)।

फ़रयाबी का उद्धृण है, कि रसूल्लिल्लाह ने फरमाया-कयामत ऐसी स्थिति में आच्छादित होगी, कि लोग बाजारों में क्रय--विक्रय कर रहे होगे, वस्त्र नाप रहे होंगे, दूध दुह रहे होंगे, अन्य कार्यों में व्यस्त होंगे और वह कोई उत्तराधिकार लेख न कर सकेंगे, और न अपने निवासों पर लौट ही सकेंगे कि नरसिंहा (सूर) का स्वर सुन कर समस्त मृत्यु को प्राप्त हो जाएँगे। तत्पश्चात पुनः नरसिंहा फूंका जाएगा तो वह अकस्मात अपनी

कब्रों से निकल--निकल कर तीव्र गति से अपने रब्ब की ओर चलने लगेंगे । इन दोनों नरसिंहे फूंकने के मध्य ४० वर्षों का अन्तराल होगा ।

इब्ने अबी हातम ने इब्ने अब्बास से भी ऐसा ही उद्धृण किया है । इब्ने अबी दाउद ने भी अबू हुरैरा से ऐसा ही कथ्य वर्णित किया है । लोग कब्रों से निकल पड़ेंगे और कहेंगे--हाय हमारा दुर्भाग्य हमें हमारे शयनलोक से किसने उठा दिया ?

आयत में "वैल" शब्द प्रयुक्त हुआ है । उसके विषय में इमाम अहमद, तिर्मज़ी जरीर, इब्ने अबी हातम, इब्ने हबान, हाकम, बैहकी, इब्ने अबी दुनिया और मन्नाद ने अबू सईद खुदरी के उद्धृण से कथन लिया है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया--'वैल" नर्क में एक भयंकर घाटी है, जिसमें काफ़िर ४० वर्षों तक लुढ़कता ही नीचे जाएगा, तब कहीं छोर तक पहुँचेगा ।

सत्यान्वेषी कहते हैं. कि काफ़िर जब नर्क में विभिन्न यातनाओं को प्रत्यक्ष देखेगा, तो नर्कसकट की तुलना में उनको कब्र का सकट स्वप्न सदृश्य अनुभूत होगा । उस समय वह कहेंगे-हमको हमारे शयनलोक से किसने उठा दिया ? यह वही कयामत हैं, जिसका अल्लाह ने वचन दिया था और पैग़म्बरों ने सत्य कहा था । बस, फिर एक चीख होगी, तो वह समस्त तत्क्षण हमारे सन्मुख उपस्थित कर दिये जाएँगे । यह कयामत की घटना भयंकर आतंकपूर्ण होगी । उस दिन सम्पूर्ण स्वर्ग निवासी, निस-न्देह अपने मनोरन्जनों में व्यस्त होंगे ।

तफसीर मज़हरी पारा २३ पृष्ठ ३७७ से ८०

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पु
5327
पु परिग्रहण क्रमांक
दयानन्द महिला

इसी विषयक एक और आयत:—

यौमा तोद्दलुल्अर्जो ग़ैरल्अर्जो वस्समावातो वा बर्जू लिल्लाहिल बाहेदिल कहहार। व तरल मुजरेमीना योमाएजिम मुकर्रनीना फिल्असफ़ाद। कुरआन पारा १३ रकू ७/१९

अर्थ:--उस दिन भूमि अन्य भूमि के साथ परिवर्तित की जाएगी और आसमान भी परिवर्तित किये जाएंगे तथा समस्त लोग एक खुदा के सन्मुख होंगे एवं उस दिन तू पापियों को श्रृंखलाओं में जकड़े हुए देखेगा।

अनुवादशाह रफीउद्दीन पारा २३ पृष्ठ ३५६

व्याख्या--जिस दिन इस भूमि को दूसरी भूमि से परिवर्तित कर दिया जाएगा और आसमान को भी। परिवर्तन दो प्रकार के होते हैं। प्रथम परिवर्तन अस्तित्व में अर्थात एक पदार्थ के स्थानापन्न दूसरे पदार्थ को लाना। जैसे-- मैंने दीरम (लघु मुद्रा) को दीनार (स्वर्ण मुद्रा) से परिवर्तित कर लिया, अर्थात दीरम देकर दीनार ले लिया। द्वितीय परिवर्तन गुणात्मक अर्थात पदार्थ के अस्तित्व को सुरक्षित रखा जाए और उसके आकार-प्रकार को परिवर्तित कर दिया जाए। जैसे मैंने छल्ला परिवर्तित कर अंगूठी बना दी।

हज़रत इब्ने मस्ऊद इस आयत की व्याख्या में कहते हैं, कि इस भूमि को परिवर्तित कर ऐसी भूमि निर्मित कर दी जाएगी, जो कि रजत के सदृश्य होगी। जहां न कभी रक्तपात हुआ होगा, न कोई अपराध ही हुआ होगा।

एक अन्य प्रमाण से इब्ने ज़रीर और हाकम ने कहा है. कि हज़रत इब्ने मस्ऊद ने फरमाया--यह भूमि परिवर्तित हो दूसरी श्वेत भूमि हो जाएगी, जैसे शुद्ध रजत।

ज़रीर ने हज़रत अन्स से उद्धृण किया है, कि अल्लाह कयामत के दिन इस भूमि को ऐसी रजतभूमि से परिवर्तित कर देगा, कि जिस पर कोई अपराध न किया गया हो।

हज़रत अली ने फरमाया--भूमि रजत की और आसमान स्वर्ण का होगा।

अक्रमा ने कहा--हमको यह उद्धृण प्राप्त हुआ है, कि यह भूमि लपेट दी जाएगी और इसके समानान्तर एक और भूमि होगी, जिस पर लोगों को ले जाकर एकत्रित किया जाएगा।

सहीहैन (बुखारी–मुस्लिम) में हज़रत सहल बिन सअद का उद्धृण है, कि सहल ने कहा--मैंने स्वयँ सुना कि रसूल्लिल्लाह फरमा रहे थे, कि कयामत के दिन लोगों को एक शुभ्र भूमि पर एकत्रित किया जाएगा।.....जिसमें किसी का कोई भवन--अट्टालिका या गुम्बद आदि अर्थात कोई चिन्ह न होगा।

अबू सालेहा ने इस आयत की व्याख्या में इब्ने अब्बास का कथ्य उद्धृत किया है, कि इसमें न्यूनाधिक कर दिया जाएगा। टीले–पहाड़–घाटियां–वृक्ष इत्यादि समस्त, जो कुछ इस भूमि पर हैं, समस्त समाप्त कर दिवे जाएँगे और अकाज़ (एक वन्य पशु) के चर्म सदृश्य उसको विस्तृत कर विस्तारा जाएगा। वह रजत सदृश्य शुभ्र होगी। जिस पर न कभी रक्त-पात हुआ होगा और न कोई अपराध किया गया होगा।

हाकम ने भी इसी भांति कहा है, और ऐसी ही व्याख्या की है। और यह भी कहा है, कि रसूल्लिल्लाह ने फरमाया– कयामत के दिन चर्म के सदृश्य भूमि को खींच कर फैला दिया

जाएगा। फिर भी किसी व्यक्ति के लिए कदम रखने से अधिक स्थान न होगा। तत्पश्चात सर्वप्रथम मुझे (हज़रत मुहम्मद) पुकारा जाएगा और मैं सज़दे (नतमस्तक) में गिर पड़ूँगा। तत्पश्चात मुझे आदेश होगा, मैं उठ कर खड़ा हो जाऊँगा और निवेदन करूँगा–ऐ मेरे प्रभू ! यह जिब्रील है। हज़रत जिब्रील उस समय रहमान (खुदा) के दाहिनी ओर होंगे, और जिब्रील ने इसके पूर्व रहमान (खुदा) को कदापि न देखा होगा। उन्होंने मुझे यह सूचना दी थी.....अल्लाह फरमाएगा–उसने सत्य कहा था। तत्पश्चात अल्लाह मुझे सफ़ायत (अनुशंसा) करने की आज्ञा प्रदान करेगा और मैं प्रार्थना करूँगा--ऐ मेरे प्रभू ! तेरे बन्दे भूमि के समस्त स्थानों पर हैं, किन्तु आप (अल्लाह) की स्तुति करने का यही सर्वश्रेष्ठ स्थान होगा। जहां पर कयामत के दिन रसूल्लिल्लाह को सम्मानित किया जाएगा।

सही हैन (मुस्लिम व बुखारी) में हज़रत अबू सईद खुदरी के उद्धृण से है, कि रसूल्लिल्लाह ने फरमाया--कयामत के दिन भूमि एक रोटी होगी, जो अल्लाह अपने हाथ से स्वर्ग निवासियों के आथित्य हेतु तैयार करेगा। जैसे तुम लोग यात्रा हेतु अपनी रोटी तैयार करते हो।

हदीस में **'नुजुलाले आहल्लिल्जन्नते'** अर्थात स्वर्ग निवासियों का आथित्य किया जाएगा।

दरावरदी ने कहा-- **'नुजुल'** उसको कहते हैं, जो आथित्यभोजन के पूर्व अतिथि को प्रातःराश (नाश्ता) के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। तात्पर्य है, कि स्वर्गगामियों को स्वर्ग में पहुँचने तक विभिन्न स्थान-स्थान पर **नुजुल** (नाश्ते के रूप में भूमि की रोटी प्रस्तुत की जाएगी और अन्ततः वह स्वर्ग में पहुँच जाएँगे।

इसी भांति इब्ने मर्जान ने 'अलइरसाद' में कहा है- भूमि बदल कर एक रोटी कर दी जाएगी। जिसको मौमिन अपने पैरों के मध्य में से उठाकर खाएगा और सम्भवत हौज़े कौसर का जलपान करेगा।

इब्ने हज़र ने लिखा है, कि मैदाने हशर (कयामत) के समस्त विश्रान्ति स्थलों की पूर्णविधि में मौमिनों को क्षुधा-दण्ड नहीं दिया जाएगा,अपितु अल्लाह अपनी शक्ति से भूमि को प्रकृति को परिवर्तित कर देगा, कि अल्लाह की इच्छानुसार मौमिन अपने पैरों तले से बिना परिश्रम और कष्ट के उठा कर रोटी खाएँगे। इसका समर्थन, सईद बिन ज़बीर का वह कथन, जो इब्ने ज़रीर ने उद्धृत किया है, कि भूमि शुभ्र रोटी हो जाएगी, जो मौमिन अपने पैरों तले से उठा कर खाएंगे। इसी प्रकार मुहम्मद बिन काब का भी कथन है।

बैहकी ने अक्रमा का कथ्य उद्धृत किया है, कि भूमि परिवर्तित हो रोटी के सदृश्य हो जाएगी। जिसको मुसलमान हिसाब से निवृति समय मे खाते रहेंगे।

इमाम बाकर का कथन भी इसी भांति है।

खतीब ने इब्ने मस्ऊद का कथन उद्धृत किया है, कि कयामत के दिन लोगों का हशर (जमाव) ऐसी स्थिति मे होगा कि क्षुधा से अत्यन्त दुखी होगे। ऐसे क्षुधित कभी न हुए होगे। अत्यन्त प्यासे होगे। ऐसे प्यासे कभी न हुए होगे। सर्वथा नग्न होगे। कदापि ऐसे नग्न न रहे होगे और ऐसे क्लान्त-श्रान्त होगे कि कभी ऐसे थकित न हुए होगे। जिसने अल्लाह हेतु भोजन कराया होगा। अल्लाह उस दिन उसे भोजन देगा। जिसने अल्लाह

हेतु जल पिलाया होगा। अल्लाह उस दिन उसे जल पिलाएगा। जिसने अल्लाह हेतु वस्त्र दिये होंगे उस दिन अल्लाह उसे वस्त्र पहिनाएगा। इत्यादि

इब्ने काब ने कहा– आसमान उद्यान हो जाएँगे और समुद्र अग्नि हो जाएँगे तथा भूमि परिवर्तित कर कुछ और कर दी जाएगी। इत्यादि

मुस्लिम ने सोबान के कथन से उद्धृत किया है, कि एक यहूदी विद्वान ने हज़रत मुहम्मद की सेवा में उपस्थित होकर ज्ञात किया, कि जिस दिन भूमि को अन्य भूमि से परिवर्तित कर दिया जाएगा, उस दिन लोग कहां होंगे ? हज़रत ने फरमाया– पुल (नर्क का) से परे अन्धकार में।

मुस्लिम ने हज़रत आयशा का कथन उद्धृत किया है, कि आयशा ने निवेदन किया–या रसूलिल्लाह ! जिस दिन भूमि परिवर्तित कर दी जाएगी, उस दिन लोग कहाँ होंगे ? हज़रत ने फरमाया--सेरात (नर्क पर अवस्थित एक पुल) पर।

बैहकी ने उबय्य बिन काब का कथन उद्धृत किया है, कि पहाड़ और भूमि दोनों मिट्टी हो जाएंगे, जो कि काफिरों के चेहरों पर गिरेगी और मोमिनों के चेहरों पर नहीं गिरेगी। आयत में भी कहा गया है, कि काफिरों के चेहरों पर मिट्टी होगी जिन पर स्याही (कालिमा) चढ़ी होगी।

इब्ने अबी हमजा ने विश्लेषण किया है, कि इस संसार की भूमि नष्ट हो जाएगी और कयामत के दिन नवीन भूमि उत्पन्न की जाएगी।

कर्तबी ने लिखा है, कि साहिबे अफ़सा ने समस्त हदीसों के मतभेदों के निराकरण हेतु भूमि और आसमान का परिवर्तन दो बार होगा। प्रथम बार नफ्खा साक, सूर फूँकने के पूर्व परिवर्तन होगा, कि सितारे झड़ जायेंगे, चन्द्र और सूर्य प्रकाश हीन हो जायेंगे, आसमान ताम्रवर्णी हो जाएगा, उसकी खाल उतार ली जाएगी। पहाड़ उड़े-उड़े फिरेंगे, समुद्र आग हो जाएँगे, भूमि में कम्पन्न उत्पन्न हो खण्ड-खण्ड हो जाएगी, इसका आकार-प्रकार ही परिवर्तित हो जाएगा। तत्पश्चात प्रथम सूर फूँका जाएगा, तो आसमान लपेट दिये जाएँगे, आसमान परिवर्तित हो दूसरा आसमान हो जाएगा, और भूमि को विस्तृत कर विस्तार दिया जाएगा और पूर्वानुसार ही कर दी जाएगी, जैसी कि वह पूर्व में थी, जिसके भीतर कब्रें होंगी, जिनमें मृतकों के शव होंगे। तत्पश्चात पुनः दुबारा सूर फूंकने पर भूमि में द्वितीय परिवर्तन होगा। यह उस समय होगा, जब लोग मैदाने हशर (कयामत) में खड़े होंगे। ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण भूमि जिसको "सहरा" कहा जाएगा और उस पर न्याय होगा, परिवर्तित कर दी जाएगी। उस समय भूमि रजत की होगी। .....और कब्रों से निकल कर न्याय व दण्ड के परिणाम हेतु महान अल्लाह के सन्मुख आएंगे।

तफसीर मज़हरी पारा १३ पृ. ३२३ से २८

भूमि खुदा की मुट्ठी में-

व मा कदरूल्लाह हक्का कदरेहील वल्अर्जो जमीअन कब्जतोहू यौमल कयामते वस्समावातो मत्तविय्यातुन बेयमीनही सुब्हानहू व तआला अम्मा युस्रेकून। कुरआन पारा २४ रकू ७/४

अर्थः- और प्रतिष्ठा न जानी उन्होंने अल्लाह की, जो उसकी

प्रतिष्ठा का अधिकार था। कयामत के दिन सम्पूर्ण भूमि उसकी मुट्ठी में है और आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए हैं। वह पवित्र और उच्चतम है, उनसे जो तुम उसके साथ एकाकार करते हो। अनुवाद शाह रफीउद्दीन पारा २४ पृ. ६४६

व्याख्या:-मूर्तिपूजकों ने वास्तव में अल्लाह की कीर्ति और प्रतिष्ठा को समझा ही नहीं। इस कारण ही वह अन्यान्य को खुदा के साथ एकाकार करने लगे।..... .....बुखारी में है, कि अल्लाह तआला भूमि को अधिकृत कर लेगा और आसमान को अपनी दाहिनी मुट्ठी में ले लेगा तथा फरमाएगा-मैं सम्राट हूँ, कहां है भूमि के सम्राट ?

मुस्लिम की हदीस में है, कि भूमिएं उसकी एक उँगली पर होंगी और आसमान उसके दाहिने हाथ में होंगे। तत्पश्चात फरमाएगा-मैं ही सम्राट हूँ।..... एक कथन में है, कि हज़रत इब्ने उमर ने इसका सम्पूर्ण विवरण दर्शा दिया, कि किस भांति हज़रत मुहम्मद ने इसका वर्णन किया था। अर्थात अल्लाह आसमानों और भूमियों को अपने हाथ में ले लेगा और फरमाएगा-मैं सम्राट हूँ। अपनी ऊँगलियों को कभी खोलेगा और कभी बन्द करेगा।

तफसीर इब्ने कसीर पारा २४ पृष्ट १६

तबरीदे बुखारी ने इस उपरोक्त आयत की व्याख्या में लिखा है-
'अन अबी हुरैरता काला समैतो रसूलिल्लाहे यकुलो यद्बेज्जुहा हुल्अर्जा व यत विस्समावाते बियमीनही सुम्मा यकुलो अनलमलेको एना मुलुकुल्अर्जे।

अर्थात-अबू हुरैरा का कथन है, कि मैंने हज़रत मुहम्मद को फरमाते सुना, कि खुदा तआला भूमि को मुट्ठी में ले लेगा। समस्त

आसमान अपने दाहिने हाथ में लपेट लेगा। तत्पश्चात फरमाएगा--मैं सम्राट हूँ, कहाँ है वह संसार के सम्राट?

तजरीदे बुखारी भाग २, हदीस ५९० पृ. २९३

पाठक बन्धुओं! हमने इस कयामत विषय के सन्दर्भ में गत पृष्ठों में अर्थात यहाँ तक कयामत कैसे होगी, इसका वर्णन किया है। क्योंकि मानवीय सृष्टि की समाप्ति के पश्चात ही कयामत आच्छादित होगी। इसलिए एकाकी मनुष्य की मृत्यु कैसे, और सामुहिक मृत्यु कयामत के पूर्व कैसे होगी? इस पर हम चर्चा कर चुके हैं, जैसे, कि एक--एक मनुष्य की मृत्यु तो प्राणहर्ता फरिश्ता 'मल्कुल्मौत' के हाथों सम्पन्न होगी और सामुहिक मृत्यु अथवा महानाश दूसरी बार इस्राफील द्वारा नरसिंहा फूँकने के परिणामस्वरूप होगी। जिसमें चन्द्र-सूर्य-समुद्र नदियां पहाड़-सितारे-वन-उपवन-पृथ्वी-आसमान और मनुष्य व प्राणी-मात्र समस्त महानाश को प्राप्त हो जाएँगे। तत्पश्चात तीसरी बार नरसिंहा फूँकने पर यह समस्त मनुष्य अपनी-अपनी कब्रों से जीवित होकर दौड़ेंगे। कयामत के दिन हेतु फरिश्तों द्वारा लिखित प्रत्येक मनुष्यों के कर्मों का खुदा के द्वारा न्यायपूर्ण निर्णय होगा। जिन कर्मों को फरिश्ते कर्मपत्र में लिखते जाते हैं, उन्हीं कर्मपत्रों के आधार पर खुदा कयामत के दिन न्याय करेगा। यह भी हम वर्णित कर चुके हैं, कि खुदा भूमि को रोटी बना देगा, जिसे स्वर्गगामी लोग स्वर्ग पहुँचने तक अपने--अपने पैरों तले से प्राप्त कर खाते रहेंगे और यह भूमि और आसमान अन्यान्य भूमि व आसमान से परिवर्तित कर दिये जाएँगे। आसमान ताम्रवर्णी या स्वर्ण का हो जाएगा और भूमि रजत की भांति शुभ्र होकर समतल रूप ग्रहण कर लेगी व इस पर पहाड़ नदी-वन-उपवन इत्यादि कुछ भी न रहेंगे एवं लोग उस समतल

मैदान में खुदा के सन्मुख न्याय हेतु उपस्थित होंगे। इतनी संपूर्ण व्यवस्था हो चुकने पर हम कयामत या खुदा के न्याय दिवस का वर्णन करते हैं, किन्तु आश्चर्य का विषय है, कि सम्पूर्ण कुरआन हदीसों और सम्बन्धित उद्धृणों व कथ्यों में मात्र कब्रों में से जीवित हो दौड़ने का ही उल्लेख है और जो लोग मरणोपरान्त जलाए गये, जल समाधिस्थ हो गए अथवा जिन्हें भयंकर पशु खा गए उनकी कहीं भी रंचमात्र चर्चा तक नहीं है, उनके कर्मों का क्या होगा ? इसी भांति दूसरा आश्चर्य यह है कि मृतक के कब्र में दफनाने के पश्चात उसके शारीरिक अवयव जो कि सड़-गल कर मिट्टी हो चुके हैं उन्हीं में से उसके परमाणु संग्रहित कर उसी मृतक का पुनर्निर्माण करेंगे। यह कैसे सम्भव है ? अतः अब आपके सन्मुख उस कयामत के दिन का वर्णन प्रस्तुत कर रहे हैं, आयतः—

व उरेजू अला रब्बेका सफ्फा। लकद जेतोमूना कमाखलक्नाकुम अव्वला मर्रतिन। कुरआन पारा १५ रकू ६/१८

अर्थातःखुदा के सन्मुख न्याय हेतु पंक्तिबद्ध उपस्थित किये जाएँगे और खुदा उनसे कहेगा—तुम आए हमारे पास नग्न-एकाकी सम्पत्तिहीन-सेवकहीन और प्रतिष्ठा व कीर्ति से रहित।

तफसीर कादरी पारा १५ पृष्ठ ६३३

तफसीर मज़हरी से इस आयत की विस्तृत व्याख्या करते हुए लिखा है, कि जैसे सम्राट के सन्मुख उसकी सैना लाई जोती है। उसी भांति अल्लाह के सन्मुख समस्त लोगों को पंक्तिबद्ध प्रस्तुत किया जाएगा.....और अल्लाह की उपस्थिति आदेश प्रसारण हेतु होगी.....(खुदा फरमाएगा) देखो, अन्ततः तुम हमारे पास आए, जैसा हमने तुमको सर्वप्रथम उत्पन्न किया था।

अर्थात जिस भांति हमने तुम्हें नग्न शरीर–नग्न पांवों और बिना खतने के उत्पन्न किया था। उत्पत्ति के समय तुम्हारे पास सांसारिक धन–सम्पत्ति आदि कुछ भी नहीं था, उसी भांति आज धन सम्पत्तिहीन, नग्न और बिना खतने के हमने तुमको कब्रों से उठाया है।

शैखेन ने सहीहैन (मुस्लिम बुखारी) में और तिर्मज़ी ने सुनन में इब्ने अब्बास का कथन उद्धृत किया है, कि रसूलिल्लाह भाषण देने खड़े हुए और फरमाया-- ऐ लोगों ! तुमको कब्रों से उठाकर अल्लाह के सन्मुख नग्न शरीर-नग्न पांवों और बिना खतने के ले जाया जायगा। तत्पश्चात समस्त सृष्टि के पूर्व इबाहीम को वस्त्र पहिनाये जाएंगे। इस पर आयशा ने निवेदन किया:— पुरूष भी होंगे और स्त्रियाँ भी ? क्या एक-दूसरे को देखेंगे ? हज़रत ने फरमाया-- आयशा ! इस समय का प्रकरण अत्यन्त कठोर होगा। अर्थात किसी की ओर देखने की सुधि ही न रहेगी।

उम्मे सलमा ने कहा-- यह तो बड़ी खराबी होगी ? हममें से प्रत्येक दूसरा, दूसरे को नग्न देखेगा।

एक अन्य उद्धृण में है, कि बीबी ने कहा--हम में से क्या कोई, किसी को नग्न देखेगा। (हजरत ने) फरमाया--अरी ! उस दिन प्रत्येक मनुष्य अपनी स्थिति में होगा कि वह दूसरे को देखने में असमर्थ होगा..... हुज़ूर ने बीबी को उत्तर में फरमाया— हम में से दूसरा, दूसरे को कैसे देखेगा, नैत्र तो ऊपर की ओर आश्चर्यचकित रहेंगे।

तिब्रानी और बैहकी ने सूदह बिन्ते जमअह के कथन से उद्धृत किया है, कि कयामत के दिन लोगों को नंगे पैरों, नग्न शरीर और बिना खतने के उठाया जाएगा और पसीने की बाढ़

किसी के मुँह और किसी की कनपटियों तक वल्गाओं की भांति आई हुई होगी । तफसीर मज़हरी पारा १५ पृष्ठ २२९–३०

तज़रीदे बुखारी में हदीस क्रमांक ९०६:—

अन् आयशात कालत् काला रसूलुल्लाहे तहसेरूना कुफ़ातन उरातन् उज़लन् कालत् फ़कुल्तो या रसूलिल्लाहेहिर्जालो वन्निसाओ यन्ज़ुरो बाज़ोहुम् इला बाज़िन,फ़कालाल्मरो अशद्दो ।

अर्थात:--रसूलिल्लाह ने फरमाया-- तुम कयामत के दिन नँगे पैर, नग्न शरीर और विना खतने के उठाए जाओगे । आयशा ने कहा-- क्या पुरूष और स्त्रियाँ एक-दूसरे को देखेंगे ? आपने फरमाया– उस दिन ऐसी कठोरता होगी कि एक दूसरे को क्या देखेंगे ।

हदीस क्रमाँक ९०७:–

अन अबी हुरैरतह अन्ना रसूलिल्लाहे सल्लअम काला या रकूनासो यौमल कयामते हत्ता यज्हबो अर्कोहुम फ़िल्अर्ज़े सबईन जिराअन व युल्जिबोहुम हत्ता यब्लुग़ा आज़ानेहीम् ।

अर्थात:–अबू हुरैरा का उद्धृण है -रसूलिल्लाह ने फरमाया-कयामत के दिन लोग पसीना-पसीना होंगे । पसीना भूमि पर ७०हाथ तक फैल जाएगा और वल्गा की भांति उनके मुँह तक, यहाँ तक कि उनके कानों तक पहुँचा हुआ होगा ।

तज़रीदे बुखारी भाग २ पृष्ठ ३९१

खुदा का कयामत-क्षेत्र में आगमन

फ़ यौमएजिम् वक्अतिल वाक़या वन्शक्क़िस्समाओ फ़ हैया यौमाएजिम् वाहियातुंव्व वल्मलको अला अर्जाएहा । व यहमिलो अर्श रब्बेका फ़ौकहुम यौमएजिम् समानीयह ।

कुरआन पारा २९ रकू १/५

अर्थातः—पस, उस दिन हो पड़ेगी, हो पड़ने वाली अर्थात कयामत और आसमान फट जाएगा, और उस दिन वह निष्क्रिय होगा, और फरिश्ते उसके किनारों पर होंगे, और उठाएंगे तेरे पालनकर्ता का सिंहासन अपने ऊपर ८ व्यक्ति।

अनुवाद, शाह रफीउद्दीन पारा २९ पृष्ठ ८०१

व्याख्या:--पस, उस दिन अर्थात सूर फूंकने के दिन वह प्रतिक्षित घड़ी आ जाएगी, जिसका अनुमान कुरआन और हदीस के माध्यम से अनिवार्य है, और आसमान फट जाएगा, और असक्त होकर उसकी बन्दिश ढीली हो जाएगी, जो शक्ति और दृढ़ता अब है, वह नहीं रहेगी।

फ़रा ने कहा-- आसमान की निर्बलता, फट जाने के कारण होगी। आसमान की जो दिशाएं और ओर-छोर फट जाने के उपरांत शेष रहेंगे, उन पर फरिश्ते होंगे, और तुम्हारे प्रभू के सिंहासन को अपने ऊपर अथवा उन फरिश्तों, जो आसमान के किनारों पर होंगे ८ मलाएका·······उठाये होंगे।

अबू दाऊद और तिर्मज़ी ने हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुतलब का कथन उद्धृत किया है। अब्बास ने कहा—मैं बतहा में एक समुदाय के साथ बेठा हुआ था। रसूलिल्लाह भी वहीं विराजित थे। एक बादल गुज़रने लगा। लोगों ने उसकी ओर दृष्टिपात किया। रसूलिल्लाह ने फरमायाः- तुम इसको क्या कहते हो ? लोगों ने उत्तर दिया— **सहाब** (बादल)। फिर फरमाया— और **मुज्न** (बादल) भी कहते हो ? लोगों ने कहा—**मुज्न** भी कहते हैं। फिर फरमाया—**अनान** (बादल) भी कहते हो ? लोगों ने कहा— **हां, अनान** भी कहते हैं। फिर (हज़रत ने) फरमाया—क्या तुमको ज्ञात है, कि भूमि

और आसमान के मध्य कितना अन्तराल है ? लोगों ने कहा—नहीं । फिर फरमाया—दोनों के मध्य का अन्तराल ७१–७२ या ७३ वर्षों की राह का है, और निचले आसमान से ऊपर आसमान का अन्तराल भी इसी भांति है । यहाँ तक कि आपने ७ आसमान इसी भाँति गिने । फिर सातों आसमान के ऊपर एक समुद्र है, जिसके ऊपर और नीचे के तल का अन्तराल भी इतना ही है, जितना कि एक आसमान से दूसरे आसमान का है । फिर समुद्र के ऊपर ८ पहाड़ी बकरे हैं जिनके खुरों और कुल्हों (पुट्ठों) का फासला दो आसमानों मध्यवर्ती यात्रा के समानान्तर है । उसके ऊपर (अल्लाह का) सिहासन हे, जिसके ऊपर और नीचे का अन्तराल भी दो आसमानों की मध्यवर्ती यात्रा के समानान्तर है । उसके ऊपर अल्लाह है ।

बगवी ने भी इस हदीस को इसी प्रकार उद्धृत किया है ।

बग़वी का कथन है, कि अब तो सिहासन को उठाने वाले ४ फरिश्ते हैं । कयामत के दिन उनकी सहायतार्थ अल्लाह ४ और नियुक्त करेगा, उनकी आकृति भी बकरों सदृश्य होगी । हदीस में यह भी आया है, कि एक की आकृति पुरुष की, दूसरे की सिह की, तीसरे की बैल की और चौथे की गिद्ध की ।

हज़रत इब्ने अब्बास ने इस आयत की व्याख्या में कहा है, कि कयामत के दिन खुदा के सिहासन को ८ मलाएका अर्थात् मलाएका की ८ टोलियाँ होगी, जिनकी सख्या खुदा के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता ।

तफसीर मज़हरी पारा २९ पृष्ठ ७२–७३

आज़मुत्तफासीर ने इस आयत के विषय में लिखा है, कि

जिस दिन आसमान खण्ड-खण्ड और कण-कण होकर गिर पड़ेगा, तो उस दिन अल्लाह तआला के महान सिंहासन को उसके भार के कारण ८ फरिश्ते अपने मस्तक और कँधों पर उठाएँगे, जिसको आज ४ फरिश्ते उठाए खड़े हैं। यद्यपि हदीस में है, कि हजरत मुहम्मद ने फरमाया-आज सिंहासन उठानेवाले ४ फरिश्ते हैं। जब कयामत का दिन होगा तो खुदा तआला उनको ४ फरिश्तों की सुविधा देगा और वह कुल मिलकर ८ हो जाएँगे।

मुआलिम में लिखा है, कि उस (कयामत) दिन सिंहासन उठानेवाले ८ फरिश्ते होंगे, जिनकी आकृति पहाड़ी बकरों के सदृश्य होगी, उनके खुरों से घुटनों तक इतनी लम्बाई होगी, जितनी एक आसमान से दूसरे आसमान तक।

हजरत जाबर फरमाते हैं, कि रसूल्लिल्लाह ने फरमाया-मुझे (खुदा ने) आदेश हुआ है, कि सिंहासन उठानेवालों में से एक फरिश्ते की आकृति का वर्णन करूँ। उसके कान से गर्दन तक इतनी दूरी है, कि यदि कोई मनुष्य वर्षों तक निरन्तर ७०० वर्षों तक निरन्तर चले तो उस फासले को पार कर सकता है।

हजरत इब्ने उमर फरमाते हैं, कि सिंहासन उठानेवाले ८ फरिश्ते हैं। प्रत्येक के एक नेत्र का १०० वर्षों का अन्तराल है। सिंहासन उठानेवाले ८ फरिश्तों की गणना में व्याख्याकारों में मतभेद है।

हजरत हसन बसरी ने लिखा है, कि मुझे ज्ञात नहीं कि वह ८ व्यक्ति हैं, या ८ हजार हैं, या ८ पंक्तियां या ८ हजार पंक्तियां हैं।

जुहाक का कथन है, कि वह ८ पंक्तियां है, जिसकी संख्या खुदा के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता। इस पर व्याख्या-

कार का मत है, कि प्रमाणिक हदीस में स्पष्टतः उल्लेख है, कि इस समय ४ फरिश्ते हैं और कयामत के दिन ४ और मिला कर ८ हो जाएँगे। अतः ८ को ही स्वीकारना आवश्यक है।

एक हदीस में यह भी आया है, कि सिंहासन को उठाने-वाले ८ फरिश्ते हैं, जिनके पैर ७ वीं भूमि के नीचे और मस्तक ७ वें आसमान के ऊपर हैं।

अन्य रवायात (उद्धृणों) में आया है, कि सिंहासन उठाने वालों में से एक की आकृति मनुष्य सी, दूसरे की बैल सी, तीसरे की सिंह सी और चौथे की गधे सदृश्य है।

आजमुत्तफासीर पारा २९ पृष्ठ ५८-५९

इब्ने कसीर ने इस आयत की व्याख्या में कहा है, कि कयामत के दिन ८ फरिश्ते खुदा के सिंहासन को उठाए होंगे। पस, तात्पर्य या तो महान सिंहासन का उठाना है, अथवा उस सिंहासन से अभिप्राय है, जिस पर कयामत के दिन अल्लाह तआला लोगों का न्याय करने हेतु आसीन होंगें।.....

तफसीर इब्ने कसीर पारा २९ पृ. २८

हक्कानी ने इसी आयत की व्याख्या में लिखा है, न्याया-लय हेतु विश्व के पालनकर्ता का सिंहासन लाकर रखा जाएगा, जिसको ८ फरिश्ते उठाए होंगे और प्रत्येक के साथ हजारों की टोलियां होगी। तफसीर हक्कानी पारा २९ पृष्ठ ५२

खुदा का प्रत्यक्ष दर्शन

आयतः-

वजूहुई यौमएजिन नाजिरातुन इला रब्बेहा नाजिरा।

कुरआन पारा २९ रकू १/७

अर्थ:-कितने मुंह उस दिन स्वस्थ और खुदा की ओर देखने वाले हैं ? शाह रफीउदीन पारा २६ पृष्ठ ८१६

व्याख्या:-अधिक मुँह उस दिन (कयामत) स्वस्थ-सुन्दर और मुस्कराते होंगे अर्थात नैत्रों से अपने प्रभू की ओर देखेंगे।........

इब्ने उमर का कथन है, कि रसूलिल्लाह ने फरमाया-- खुदा के समीप सर्वाधिक प्रतिष्ठित वह स्वर्ग निवासी होगा, जो प्रात: और सांय अल्लाह के दर्शन करेगा।

हजरत जुरैर बिजली ने फरमाया-हम हजरत मुहम्मद की सेवा में बैठे हुए थे, हुजूर ने पूर्णिमा की ओर देख कर फरमाया-निसन्देह, तुम अपने प्रभू को इसी भांति देखोगे जिस भांति तुम इस पूर्णिमा के चन्द्र को देख रहे हो और देखने में कोई व्यवधान नहीं होगा। तफसीर मज़हरीं पारा २६ पृष्ठ २१५

इब्ने कसीर ने लिखा है, कि उस दिन अधिकाँश लोग वह होंगे, जिनके मुँह स्वस्थ-सुन्दर और प्रसन्न होंगे और अपने प्रभू के दर्शन से प्रतिष्ठित हो रहे होंगे। जैसा कि शीघ्र ही तुम अपने प्रभू को स्पष्ट: सन्मुख देखोगे। अत्याधिक प्रमाणिक हदीसों से निरन्तर प्रमाणयुक्त जो हदीसों के लेखकों ने अपनी पुस्तकों में वर्णित की है, सिद्ध हो चुकी है, कि ईमान वाले अपने प्रभू के दर्शन से कयामत के दिन कृत्य कृत्य होंगे। इन हदीसों को न तो कोई हटा सकेगा और न कोई नकार ही सकेगा :

बुखारी और मुस्लिम में अबू हुरैरा से वर्णित है, कि लोगों ने पूछा-या रसूलिल्लाह ! क्या हम कयामत के दिन अपने प्रभू को देखेंगे ? आपने फरमाया-जब आसमान स्वच्छ और मेघहीन हो, तब सूर्य और चन्द्र को देखने में कोई बाधा रोकती है ?

उनने कहा-नहीं। आपने फरमाया-इसी भाँति तुम अल्लाह तआला को देखोगे।

सही है न (बुखारी व मुस्लिम) में हज़रत जुरैर से वर्णित है; कि हज़रत मुहम्मद ने पूर्णिमा के चन्द्रमा को देखा और फरमाया—तुम इसी भाँति अपने प्रभू को देखोगे, जिस भांति इस चन्द्रमा को देख रहे हो।

तफसीर इब्ने कसीर पारा २९ पृष्ठ ७६

इसी भांति तफसीर हक्कानी में भी पारा २९ पृष्ठ १३५ में लिखा है तथा आजमुत्तफासीर पारा २९ पृष्ठ १६० में भी यही व्याख्या है और मुआलेमुन्तन्ज़ील पारा २९ पृष्ठ १९३ में भी ऐसा ही है। तफसीर जलालैन पारा २९ पृष्ठ ४८२ में भी ऐसा ही वर्णन है।

खुदा के सिंहासन के आस पास फरिश्ते।

आयतः--

व तरल मलाएकता हाफ्फीना मिन्होलिल अर्शे युसब्बेहुना बेहम्दे रब्बेहिम् व कुजेया बैनाहुम बिल्हक्के।

कुरआन पारा २४ रकू ८/५

अर्थः—और देखेगा तू फरिश्तों को, कि सिंहासन को आसपास से घेरे होंगे और अपने प्रभू की पवित्रता और प्रशसा का गुणगान करते हैं तथा उनके मध्य सत्य के साथ न्याय किया जाता है।

अनुवाद शाह रफीउद्दीन पारा २४ पृष्ठ ६५१

व्याख्याः—ऐ हमारे नबी ! (हज़रत मुहम्मद !) कयामत के दिन तू जिधर दृष्टिपात करेगा, फरिश्ते ही दृष्टिगोचर होगें। उस दिन समस्त फरिश्ते महान सिंहासन की परिक्रमा कर रहे होगे

और अत्याधिक प्रिय और मनमोहक स्वर में खुदा की पवित्रता व स्तुतिगान कर रहे होंगे।

आज़मुत्तफासीर पारा २४ पृष्ठ २६८

आयत :--

अल्लाज़ीना यहमलुनलअर्शा व मन हो लहू युसब्बेहुना बेहम्दे रब्बेहीम् । कुरआन पारा २४ रकू १/६

अर्थ:–वह लोग, जो सिंहासन को उठा रहे हैं और जो उसके आस पास हैं, पवित्रता का बखान करते हैं, उसकी प्रशंसासहित।

अनुवाद शाह रफीउद्दीन पारा २४ पृष्ठ ६५२

व्याख्या:–सिंहासन को उठानेवाले चारों फरिश्ते और उसके आसपास के श्रेष्ठ फरिश्ते एक ओर तो खुदा की पवित्रता का बखान करते हैं, और समस्त दोषों से पृथक दर्शाते हैं। दूसरी ओर समस्त ईमानदार पुरुष व स्त्रियों के हेतु पापों की क्षमा-याचना करते रहते हैं।………इससे यह प्रमाणित हो गया कि वर्तमान में सिंहासन को उठाने वाले ४ फरिश्ते हैं, और कयामत के दिन सिंहासन को ८ फरिश्ते उठाएँगे, जैसा कि कुरआन में वर्णित है। तफसीर इब्ने कसीर पारा २४ पृष्ठ ३१-३२

आयत:-

व जा आ रब्बोका वलमलको सफ्फन सफ्फा वाजीआयौमए-एजिन बिजहन्नमा । कुरआन पारा ३० रकू १ १४

अर्थ:–और तेरा पालनकर्ता आएगा तथा फरिश्ते पंक्तिबद्ध आएँगे व उस दिन नर्क को उपस्थित किया जाएगा।

अनुवाद शाह रफीउद्दीन पारा ३० पृ. ८४४

व्याख्या:-और फ़रिश्ते पंक्ति-पंक्ति होकर आएँगे। इब्ने ज़रीर व इब्ने मुबारक ने जुहाक का कथन उद्धृत किया है, कि क़यामत का दिन होगा, तो ख़ुदाई आदेश से संसार का आसमान फट जाएगा और मलाएका (फ़रिश्ते) उसके किनारों पर रह जाएँगे। तत्पश्चात प्रभू की आज्ञा से उतरेंगे और भूमि को समस्त पदार्थों सहित घेर लेंगे। इसके पश्चात ७ तों आसमान फट जाएँगे और फ़रिश्ते क्रमबद्ध उतर कर पंक्तिबद्ध होते जाएँगे और पश्चात सबसे महान फ़रिश्ता उतरेगा, जिसके बाएँ ओर नर्क होगा। जब भूमिनिवासी नर्क को देखेंगे, तो यत्र-तत्र भागेंगे किन्तु उनको भूमि पर प्रत्येक ओर फ़रिश्तों की ७ पंक्तियां दृष्टिगोचर होगी.....और उस दिन नर्क को लाया जाएगा।

हज़रत इब्ने मस्ऊद का कथन है, कि रसूल्लिल्लाह ने फ़रमाया-उस दिन नर्क को इस भांति लाया जाएगा, कि उसकी ७० हजार वल्गाएं होगी और प्रत्येक वल्गा को ७० हज़ार फ़रिश्ते खींचते होंगे। (मुस्लिम व तर्मज़ी)

इब्ने वहब ने लबाबुल्अहवाल में ज़ैद बिन असलम का कथन उद्धृत किया है, कि रसूल्लिल्लाह के पास ज़िब्रील आए, तो हज़रत अली ने हज़रत मुहम्मद से ज़िब्रील के आगमन का कारण पूछा। हज़रत ने फ़रमाया-नर्क को ७० हजार वल्गाओं से खींच कर लाया जाएगा, ७० हजार फ़रिश्ते वल्गाएं खींचते होंगे, कि अकस्मात फ़रिश्तों के हाथों से वल्गाएं छूट पड़ेंगी किन्तु फ़रिश्ते तत्क्षण पुनः थाम लेंगे। यदि वह न थाम ले तो समस्त समुदाय को नर्क भस्मीभूत कर दे।

क़र्तबी का कथन है, कि नर्क को उसके उत्पत्ति स्थान से बन्दी बना कर क़यामत के क्षेत्र में लाया जाएगा और पुल सरात के अतिरिक्त स्वर्ग जाने का अन्य कोई मार्ग नहीं रहेगा।

अबू नईम ने काब का कथन उद्धृत किया है, कि कयामत का दिन होगा, तो फरिश्ते उतर कर पंक्तिबद्ध हो जाएँगे, तो खुदा जिब्रील से फरमाएगा–नर्क को लाओ। जिब्रील नर्क को ७० हजार वल्गाओं से जकड़े हुए लाएंगे। जब मनुष्यों से नर्क का अन्तराल १०० वर्षों की यात्रा का रह जाएगा, तो नर्क एक साँस लेगा, जिससे सृष्टि का हृदय धड़कने लगेगा, तत्पश्चात दूबारा साँस लेगा, तो कोई उत्कृष्ट फरिश्ता और पैगम्बर भी घुटनों पर बैठे बिना न रह सकेगा और फिर सीतरा साँस लेगा तो हृदय उछल कर कंठ तक आ जायेंगे, किसी को सुधि न रहेगी, प्रत्येक मनुष्य घबरा जाएगा। यहां तक कि इब्राहीम निवेदन करेंगे-मेरे प्राण बचाओ। इसी भाँति हजरत मूसा व ईसा भी कहेंगे, किन्तु हजरत मुहम्मद कहेंगे–मेरी उम्मत को बचाओ।

तफसीर मज़हरी पारा ३० पृष्ठ ४०४

☐ न्याय तुला ☐

आयत:--

व नज़ाउल मवाजीनल्किस्ता लियौ मिल्कयामते फ़ला तुज़्लमो नफ़्सुन शैआ। कुरआन पारा १७ रकू ४/४

अर्थ:–हम न्याय-तुला में रखेंगे कयामत के दिन और किसी पर कोई अत्याचार न किया जाएगा।

अनुवाद शाह रफीउद्दीन पारा १७ पृ. ४४६

व्याख्या:--कयामत के दिन न्याय--तुला स्थापित की जाएगी। यह तुला एक ही होगी किन्तु जो कर्मफल इसमें तौले जाएंगे वह अत्यन्त होगे इसलिए तुला हेतु बहुवचन तुलाएं प्रयुक्त किया गया। उस दिन किसी पर रंचमात्र भी अत्याचार न होगा।

सहीहैन (बुखारी व मुस्लिम) में है, कि रसूल्लिल्लाह फरमाते हैं, कि कतिपय वाक्य, जो उद्‌बोधन में भारहीन और तुला में भारयुक्त है, वह खुदा को प्रिय है। जैसे:-(१) **सुब्हानल्लाहे व बेहम्देही'** (२) **सुब्हानल्लाहिल्अजीम'** अर्थात (१) अल्लाह पवित्र है, अपनी प्रशसा सहित (२) अल्लाह महान पवित्र है।

मसनद अहमद में है, कि रसूल्लिल्लाह फरमाते हैं, कि मेरी उम्मत के एक व्यक्ति को अल्लाह तआला समस्त कयामत-वालों के सन्मुख अपने पास बुलाएगा और उसके अपराधों के ९९ खाते, उसके सन्मुख खोले जाएँगे। जहाँ तक दृष्टिपात होगा, वहां तक एक-एक खाता होगा। तत्पश्चात खुदा उससे पूछेगा-क्या तुझें अपने किये गये अपराधों में से किसी से अस्वीकृति है ? मेरी ओर से नियुक्त फरिश्ते जो तेरे कर्मलेखन हेतु निश्चित थे, उन्होंने तुझ पर कोई बलात् व अत्याचार तो नहीं किया ? उत्तर देगा-या खुदा ! न अस्वीकृति का अवसर है और न यह कह सकता हूँ कि बलात् व अत्याचारयुक्त लिखा गया। अल्लाह फरमाएगा-भला तेरे पास कोई आपत्ति है अथवा कोई भलाई भी है ? वह घबराहट में कहेगा-या खुदा ! कोई नहीं। संसार का पालनकर्ता कहेगा-क्यों नहीं, निसन्देह तेरी एक भलाई हमारे पास है, और आज तुझ पर कोई अत्याचार न होगा। तब एक छोटा सा रूक्का निकाला जाएगा, जिसमें **'अशहदो अल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाहो व अन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहे'** अंकित होगा। अल्लाह तआला फरमाएगा-इसे प्रस्तुत करो। वह कहेगा-ऐ खुदा ! यह रूक्का उन खातों की प्रतिस्पर्धा में क्या करेगा ? अब समस्त खाते तुला के एक पलड़े में रखे जाएँगे और वह रूक्का दूसरे पलड़े में रखा जाएगा। उस रूक्के का भार उन समस्त खातों से बढ़ जायगा और वह खातों का पल्ला उपर उठ जाएगा

क्योंकि खुदा, रहमान और रहीम के नाम से कोई पदार्थ भारी न होगा। इब्ने माजा और तिर्मजी में भी यही उद्धृण है। (क्या सरल-सुविधायुक्त और श्रेष्ठ न्याय है, कि समस्त पाप-दोष एक ओर और खुदा (मुहम्मद) का नाम एक ओर बस, समस्त पाप क्षमा ?)

मसनद अहमद में है, कि कयामत के दिन जब तुला स्थापित की जाएगी तब एक व्यक्ति को लाया जाएगा और एक पलड़े में रखा जाएगा और जो कुछ उस पर गणना की गई है, वह भी रखा जायगा, तो वह पलड़ा झुक जाएगा और उसे नर्क की ओर भेज दिया जाएगा। उसने पीठ फेरी ही होगी, कि खुदाकी ओर से उद्बोधनकर्ता उद्घोषक फरिश्ता उद्बोधन करेगा और कहेगा--शीघ्रता न करो। इसकी एक वस्तु शेष रह गई है। फिर एक पर्चा निकाला जाएगा, जिसमें 'ला इलाहा इल्लल्लाह' होगा, वह उस व्यक्ति के साथ तुला के पलड़े में रखा जाएगा तो वह नेकी का पलड़ा झुक जायगा।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १७ पृ. १६-१७

● कर्मों का तौल ●

आयत:—

फ़ अम्मा मन सकोलत मवाजीनोहु फ़होवा फ़ी ईशतिर्राजिया व अम्मा मन ख़फ़्फत मवाज़ीनोहु फ़ उम्मोहु हाविया।

कुरआन पारा ३० रकू १/२६

अर्थात:—उस दिन जिसके कर्मों का तौल भारी होगा अर्थात नेकी का पलड़ा झुक जाएगा, तो वह भली जिन्दगानी अर्थात स्वर्ग में होगा और वह जिसके कर्मों का तौल भारहीन होगा अर्थात भलाई

न रखता होगा या उसकी बुराईयाँ नेकियों से अधिक होंगी, तो उसका स्थान हाविया (धधकती अग्नि) होगा।

तफसीर कादरी पारा ३० पृष्ठ ६४६

व्याख्या:–'मवाज़ीन' मौज़ूम का बहुवचन है। इससे अभिप्राय वह कर्म है, जिन्हें मनुष्य के सन्मुख तौला जायगा अथवा 'मवाज़ीन' मीज़ान का बहुवचन है। इससे अभिप्राय भलाईयुक्त पलड़ा है।

सहीह हदीस में है, कि मीज़ाने अदल की ज़बान भी होगी व दो पलड़े भी। (जैसे साधारण रूप में प्रायः तुला के होते हैं)

इब्ने मरदूया ने हज़रत आयशा के कथन से और इब्ने मुबारक ने ज़हद में, अबू शैख ने तफसीर (व्याख्या) में तथा आजरी ने इब्ने अब्बास के उद्धृण से लिखा है कि रसूलिल्लाह फरमा रहे थे—अल्लाह ने तुला के दो पलड़े भूमि व आसमान की भांति उत्पन्न किये हैं।

पस, वह भले जीवन में होगा अर्थात जिसके भले कर्मों का पलड़ा भारहीन होगा, जिसके पास ईमान के अभाव में कोई भलाई न होगी और वह फ़ासिक मोमिन भी सम्मिलित है, जिसका अपराधों का पलड़ा नेकियों से भारी होगा, किन्तु जिनकी भलाईयों का पलड़ा भारी होगा, इसमें मात्र वह मुसलमान सम्मिलित हैं, जो मासूम (निर्दोष) हो या जिनके अपराध क्षमा कर दिये गये हों अथवा उनकी भलाईयां अपराधों से भारी हों।

इब्बे अब्बास का कथन है, कि कयामत के दिन लोगों का हिसाब होगा। जिसकी एक भलाई भी पापों से अधिक होगी, वह स्वर्ग में जाएगा और जिसके अपराध भलाईयों से अधिक होंगे, वह नर्क में जाएगा तथा जिसकी भलाई व बुराई समान होगी, वह एराफ (स्वर्ग-नर्क के मध्य) वालों में है।

'फ़ उम्मोहु हाविया' इसमें निवास स्थान को माँ इस कारण कहा है, कि सन्तान के ठहरने का स्थान मां ही होता है और हाविया नर्क के स्थानों में से है।

हज़रत अन्स ने कहा— तुला के दोनों पलड़ों के मध्य एक फ़रिश्ता खड़ा होगा। यदि नेक कर्म भारी होंगे, तो वह फरिश्ता ऐसे उच्च स्वर से घोषित करेगा, कि जिसे सम्पूर्ण सृष्टि सुन लें, कि अमुक व्यक्ति सौभाग्यशाली हो गया और यदि तौल न्यून हो गया तो वही फ़रिश्ता कहेगा- अमुक व्यक्ति दुर्भाग्यवान होगया।

ग़ज़ाली ने कहा— ७० हजार व्यक्ति बिना हिसाब के स्वर्ग में जाएँगे। तफ़सीर मज़हरी पारा ३० पृ. ५१० से १४

इसी विषय के सन्दर्भ में तज़रीदे बुखारी में एक अत्याधिक विस्तृत हदीस उल्लेखित है, जिसे हम आप पाठकों के ज्ञातव्य हेतु उस हदीस के आवश्यक अंश प्रस्तुत कर रहे हैं:—

हज़रत मुहम्मद ने फरमाया— **'अना सय्येदुन्नासे यौमल्क-यामते'** अर्थात मैं कयामत के दिन लोगों का प्रमुख रहूंगा (हदीस ५७०) आपने कहा— अल्लाह तआला अगले और पिछले समस्त लोगों को एक समतल भूमि में एकत्रित करेगा। जहां उद्घोष-कर्ता अपनी घोषणा समस्त को सुना सके और समस्त को देख सके तथा सूर्य वहां पर समीप हो, ऐसे स्थान पर समस्त को एक-त्रित करेगा। पस, लोगों को उस समय दुख और कष्ट पहुँचेगा, जिन्हें वह सहन करने की शक्ति न रखेंगे और लोग कहेंगे—क्या देखते हो तुम, तुम्हें भयकर कष्ट हो रहा है? क्या तुम ऐसे व्यक्ति को नहीं ढूंढते कि जो पालनकर्ता से तुम्हारी सिफ़ारिश(अनुशंसा) करे? कुछ लोग कहेंगे-आदम के पास चलो। तब वह आदम के पास पहुँच कर उससे कहेंगे:--आप मनुष्यो के पिता हैं, आपको

खुदा ने अपने हाथों से निर्मित किया है और अपनी आत्मा आप में फूँकी है, आप पालनकर्ता से हमारी सिफारिश कर दीजिए, क्या आप हमारी पीड़ा और असीम कष्ट को नहीं निहारते हैं ? पस, आदम कहेंगे :—

फ़य्याकुलो आदमोइन्ना रब्बि कद गज़े बल्यौमा गजबन लम यग़ज़ब् कब्लहू अर्थात मेरा पालनकर्ता इस भाँति क्रोध में है, कि इससे पूर्व कभी ऐसा क्रोधित न हुआ। **'व इन्नहु कद नहानी अनि-सज्रते फ़ असेतोहू नफ़्सी--नफ़्सी'** अर्थात उसने मुझे पौधा खाने से मना किया था किन्तु मैंने उसकी अवज्ञा की, नफ़्सी–नफ़्सी, मेरे अतिरिक्त और किसी के पास जाओ। फिर वह हज़रत नूह के पास जाएँगे और सिफारिश हेतु कहेंगे। हज़रत नूह भी उन्हें वही उत्तर देंगे, जो आदम ने दिया था और कहेंगे--**'व इन्नहु कद कानत् रब्बि दावत्तु न दओतह् अला कौमी नफ़्सी–नफ़्सी'** अर्थात खुदा ने मेरी एक ही प्रार्थना स्वीकार की थी, सो मैं अपनी जाति पर संकट आमन्त्रण करने हेतु कार्य ले चुका, तुम किसी ओर के पास जाओ। फिर वह हज़रत इब्राहीम के पास जाएँगे और सिफारिश हेतु कहेंगे। हज़रत इब्राहीम भी वही उत्तर देंगे और अन्त में कहेंगे–**नफ़्सी इन्नी कद कुन्तो कज़ब्तौ सलासाकज़ बातिन नफ़्सी नफ़्सी'** अर्थात मैं ३ असत्य बोल चुका हूँ। अतः तुम किसी और के पास जाओ, **नफ़्सी-नफ़्सी**। फिर यह लोग हज़रत मूसा के पास पहुँचेंगे, तो हज़रत मूसा भी वही उत्तर देंगे और अन्त में कहेंगे--**व इन्नी कद कतल्तो नफ़्सन लम् ओमर बेकत्लेहा नफ़्सी-नफ़्सी'** अर्थात मैं एक प्राणी की हत्या कर चुका हूँ, जिसका मुझे आदेश न था, **नफ़्सी-नफ़्सी**, अतः तुम और किसी के पास जाओ। फिर वह हज़रत ईसा के पास जायेंगे और कहेंगे, तो हज़रत ईसा भी उन्हें वही उत्तर देंग और कहेंगे--**नफ़्सी-नफ़्सी**

तुम हज़रत मुहम्मद के पास जाओ। तब वह लोग हज़रत मुहम्मद के पास गए और वही बात कहेंगे। तब हज़रत मुहम्मद सिंहासन के नीचे आकर नतमस्तक हो गिर जाएँगे। फिर कहा जाएगा -ऐ मुहम्मद ! अपना मस्तक उठा, जो मांगे दिया जाएगा, सिफ़ारिश करो, स्वीकृत की जाएगी, **'फ़ अर्फ़ओ रासी फ़ अकुलो उम्मती या रब्बो उम्मती'** अर्थात पस, मैं अपना मस्तक उठाऊँगा और ३ बार कहूँगा मेरी उम्मत ! मेरी उम्मत ! मेरी उम्मत ! पस, कहा जाएगा-ऐ ! मुहम्मद अपनी उम्मत के उन लोगों हेतु, जिन पर हिसाब नहीं स्वर्ग में प्रविष्ट करो। खुदा तआला फरमाता है-**"असा अय्यब्असाका रब्बोका मुकामम्महमूदा"** अर्थात निकटता में ही तुझको तेरा खुदा उत्कृष्ट स्थान पर पहुँचा देगा।

तज्रीदे बुखारी भाग २ पृ. २७९-८२

इसी सन्दर्भ में एक और आयत.—

वल वज्नो यौमएज़िन निल्हक्क फ़मन सकोलत मवाज़ीनोहू फ़ उलाएका हुमुल मुफ्लेहून् व मन खफ्फत मवाज़ीनोहू फउलाएकल्लाज़ीना खसेरू अन्फुसेहुम् बे मा कानू बे आयातेना यज़्लेमून् ।

कुरआन पारा ८ रकू १/८

अर्थातः—उस दिन तौल भी सम्पन्न होगा। पस, जिस व्यक्ति का पलड़ा भारी होगा, ऐसे लोग सफल होंगे और जिस व्यक्ति का पलड़ा भारहीन होगा, ऐसे लोग होंगे, जिन्होंने स्वय की हानि कर ली। इस कारण, कि वह हमारी आयतों की अवहेलना करते थे।

व्याख्याः—कयामत के दिन भलाई—बुराई न्यायानुसार तौली जाएगी। अल्लाह तआला किसी पर अत्याचार न करेगा। जैसा

कि कुरआन में अन्य स्थान पर कहा गया है, कि कयामत के दिन हम न्यायतुला पर रखेंगे और अल्लाह तआला कणमात्र भी अत्याचार न करेगा। ..... कोई कहता है, कि कर्मपत्र तौले जाएँगे, कोई कहता है, कि कर्म तोले जाएँगे, कोई कहता है, कि स्वयं कर्म के कर्ता तौले जाएंगे। इन तीनों कथनों का इस भांति समन्वय किया जा सकता है, कि हम कहें, कि यह समस्त सत्य है। कभी कर्म तौले जाएंगे, कभी कर्मपत्र तौले जाएंगे और कभी स्वय कर्म का कर्ता तौला जाएगा। सत्य क्या है और क्या नहीं ? बस, अल्लाह ही जानता है।) इन तीनों बातों के हेतु उदाहरण भी उपलब्ध है।

प्रथम कथन का अभिप्राय यह है, कि कर्म यद्यपि निराकार पदार्थ है, किन्तु कयामत के दिन खुदा तआला इन्हें शरीर प्रदान कर देगा। जैसा कि सहीह हदीस में है। सूरत बकर और सूरत आले इमरान में कयामत के दिन २ सायबानों या दो बादलों की या पंख फैलाए पक्षियों के दो समूहों के रूप में आएंगे और हदीस में है, कि कुरआन अपने कंठस्थकर्ता और अनुकरणीय के पास एक सुन्दर-आकर्षक और प्रकाशवान युवक के रूप में आएगा। यह उसे देख कर पूछेगे, कि तू कौन है ? वह कहेगा—मैं कुरआन हूँ, जो तुझे रात्रि को नींद से रोकता था और दिन में जलपान से रोकता था।

हज़रत बरा वाली हदीस, जिसमें कब्र के प्रश्नोत्तर की चर्चा है, उसमें यह भी है, कि मौमिन के पास एक सुन्दर सुगंधित नवयुवक आएगा। वह उससे पूछेगा—तू कौन है ? वह उत्तर देगा—मैं तेरा सुकर्म हूं, और काफ़िर व मुनाफ़िक के पास इसके प्रतिकूल व्यक्ति के आगमन का वर्णन है।

द्वितीय कथन का अभिप्राय, जैसा कि हदीस में है, कि एक व्यक्ति के सन्मुख उसके अपराधों के ९९ वें खाते खोले जाएँगे. जिनमें से प्रत्येक इतना विशाल होगा, कि जहां तक दृष्टि पहुँच सके । फिर एक पर्चा भलाई का लाया जाएगा, जिसमें 'ला इलाहा इल्लल्लाह' होगा । वह कहेगा—या खुदा ! इतना सा पर्चा इन विशाल खातों की प्रतिस्पर्धा में क्या अस्तित्व रखता है ? अल्लाह तआला फरमाएगा:— तू इससे निर्भय रह तुझ पर अत्याचार न किया जाएगा । वह पर्चा उन खातों की प्रतिस्पर्धा में नेकी के पलड़े में रखा जाएगा, तो वह समस्त खाते ऊपर हो जाएगे और यह पर्चा सर्वाधिक भारयुक्त हो जाएगा । (तिर्मज़ी)

तृतीय कथन भी अपनी सत्ता रखता है । जैसा कि हदीस में है, कि अत्याधिक हृष्ट-पुष्ट अपराधी मनुष्य अल्लाह के सन्मुख लाया जाएगा । किन्तु एक मच्छर के पंख के समान भी भार खुदा के पास उसका नहीं होगा । फिर आपने यह आयत पढ़ी '**फला नुकीमो लहुम यौमल्कयामते वज़ना**' अर्थात हम कयामत के दिन उनके हेतु कोई तौल निश्चित नहीं करेंगे । तफसीर इब्ने कसीर पारा ८ पृष्ठ ४१-४२

तफ़सीर मज़हरी ने इस आयत के सम्बन्ध में लिखा है, कि और उस दिन ठीक-ठीक तौल होगा अर्थात जिस दिन पैगम्बरों और उनकी उम्मतों से प्रश्न होगा । उस दिन न्याय तुला से कर्मों का ठीक-ठीक तौल अवश्य होगा ।

हदीस ज़िब्रील में हज़रत उमर बिन खत्ताब के कथन से उल्लेखित है, कि हज़रत ज़िब्रील ने कहा :— मुहम्मद ! ईमान से अभिप्राय क्या है ? रसूलुल्लाह ने फरमाया:-ईमान,

यह है तुम अल्लाह को, उसके फरिश्तों और उसके पैग़म्बरों को स्वीकारो और स्वर्ग-नर्क और तुला पर विश्वास रखो तथा मरणोपरान्त शारीरिक उत्पत्ति को स्वीकार करो व इस बात पर भी विश्वास रखो, कि प्रत्येक भली-बुरी वस्तु भाग्य के अन्तर्गत है, अर्थात अल्लाह के भविष्य निर्धारित भाग्य से कोई पदार्थ पृथक नहीं। यदि तुमने ऐसा कर लिया तो बस, पूर्णतः मुसलमान हो। हज़रत ज़िब्रील ने कहा-जी हां, आपने सत्य फरमाया (रवाहुल बैहकी)

हज़रत सलमान के कथन से और अबू शैख ने अपनी व्याख्या में हज़रत इब्ने अब्बास के उल्लेख से लिखा है, कि तुला के एक ज़बान और दो पलड़े होंगे। (आगे पूर्वोक्तानुसार ही वर्णन है। जो कि हम तफसीर इब्ने कसीर से लिख चुके हैं।)

आगे है, कि इब्ने अबी दुनिया ने हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर का कथन उद्धृत किया है, कि कयामत के दिन खुदा की ओर से हज़रत आदम के ठहरने का एक स्थान विशेष निश्चित होगा। वह हरे वस्त्र पहने ऐसे ज्ञात होंगे कि जैसे कोई खजूर का लम्बा पेड़। अपने स्थान पर खड़े-खड़े नर्क की ओर जाने वालों को निहारते होंगे। इसी मध्य में हज़रत मुहम्मद की उम्मत के एक व्यक्ति को नर्क की ओर ले जाते देख कर पुकारेंगे-अहमद! मैं उत्तर दूंगा--मनुष्यो के पिता! मैं यह हूं। हज़रत आदम कहेंगे- तुम्हारी उम्मत के इस व्यक्ति को नर्क की ओर ले जाया जा रहा है। मैं यह सुनते ही तत्क्षण शीघ्रता से तैयारी कर फ़रिश्तों के पीछे जाऊंगा और कहूंगा—ऐ अल्लाह के दूतों। ठहर जाओ। फरिश्ते कहेंगे— हम नहीं ठहरते हैं, हमें जैसा आदेश होता है, वैसा ही करते हैं (रावी ने कहा) जब रसूलिल्लाह निराश हो जाएंगे, तो बांए हाथ की मुठ्ठी में सम्मानित दाढ़ी पकड़ कर

खुदा के सिंहासन की ओर मुंह कर निवेदन करेंगे–मेरे मालिक ! तूने मुझसे वायदा किया था, कि मुझे मेरी उम्मत में अपमानित न करेगा। तत्काल सिंहासन की ओर से उद्घोष होगा, कि मुहम्मद का कहना मानो और तौल के स्थान पर उस बन्दे को पुनः ले आओ। तत्पश्चात मैं अगुली के एक पौरे के समान एक रुक्का अपनी गोदि से निकाल कर बिस्मिल्लाह कह कर तराज़ू के दाहिने पलड़े में डालूंगा, जिससे भलाईयों का पलड़ा झुक जाएगा। उसी क्षण घोषणा होगी, कि सफल हो गया, इसे स्वर्ग की ओर ले जाओ। वह व्यक्ति फरिश्तों से कहेगा—ठहर जाओ, ज्ञात कर लेने दो, कि यह व्यक्ति कौन है ? जिसकी अल्लाह की दर्गाह में इतनी प्रतिष्ठा है। फिर हज़रत मुहम्मद से पूछेगा–आप कौन हैं ? मैं उत्तर दूंगा—मैं तेरा नबी मुहम्मद हूँ और यह तेरी वह दरूदें थी; जो तू मुझ पर पढ़ता था।

तिब्रानी ने हज़रत इब्ने अब्बास की रवायत से लिखा है कि शपथ है उसकी, कि जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं। यदि समस्त आसमान और भूमि और उनके भीतर की सृष्टि और दोनों के मध्य के संसार और भूमि के नीचे की सृष्टि समस्त को लाकर तुला के एक पलड़े में और 'ला इलाहा इल्लिल्लाह' की शहादत (साक्षी) दूसरे पलड़े में रख दी जाए, तो यह उन समस्त से भारी होगा। तफ़सीर मज़हरी पारा ८ पृष्ठ २६८ से ७०

● न्यायालय ●

आयतः—

व अश्रकतिल्अर्ज़ो बिनूरे रब्बेहा व बुजेअल किताबो व जेआ बिन्नबीय्यीना वश्शोहदाये व कुज़ेया बैनाहुम बिल्हक्के व हुम ला युज़्लेमून। कुरआन पारा २४ रकू ७/४

अर्थः—और प्रकाशित हो जाएगी भूमि अपने पालनकर्ता के प्रकाशसहित और कर्मपत्र रखे जाएँगे व पैगम्बरों तथा साक्षियों को लाया जाएगा, और उनके मध्य सत्यपूर्ण निर्णय किया जाएगा और कोई अत्याचार न किये जाएँगे।

अनुवाद शाह रफीउद्दीन पारा २४ पृष्ठ ६५०

व्याख्या—सबसे अन्त में मृत्यु के फरिश्ते की आत्मा भी अधिकृत की जाएगी, मात्र अल्लाह ही शेष रह जाएगा..... फिर कहेंगाः- आज मैंने समस्त हेतु सर्वनाश का आदेश दे दिया। तत्पश्चात अल्लाह तआला अपनी सृष्टि को पुनर्जीवित करेगा। सर्व प्रथम हज़रत इस्राफिल (फ़रिश्ता) को जीवित करेगा और उसे आज्ञा देगा— दुबारा नफखा (नरसिंहा) फूँके। यह तीसरा सूर होगा और सूर फूँका जाएगा, और समस्त लोग उठ खडे होगे, और दृष्टिपात करने लगेंगे अर्थात कयामत की हृदयद्रावक स्थिति को निहारने लगेंगे। जैसा कहा गया है, कि एक ही कठोर ध्वनि होगी, जिससे लोग तत्क्षण ही एक क्षेत्र में एकत्रित हो जाएंगे.... मसनद अहमद में है, कि एक व्यक्ति ने हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर से कहा—आप फरमाते हैं, कि इतने-इतने समय तक कयामत आ जाएगी ? आपने अप्रसन्न हो उत्तर दिया— हृदय तो चाहता है, कि तुमसे कोई बात न कहूं, मैंने तो कहा था, कि अत्याधिक किञ्चित अवधि में हम-तुम आदेश देखेंगे। पुनः कहा--मैंने रसूलिल्लाह से सुना, कि मेरी उम्मत में दज्ज़ाल आएगा और वह ४० तक रहेगा। मैं नहीं जानता कि ४० दिन, ४० माह अथवा ४० वर्ष होगा। तत्पश्चात अल्लाह हज़रत ईसा को भेजेगा, उनकी आकृति हज़रत उर्वह बिन मस्ऊद सक़फ़ी सदृश्य होगी और दज्ज़ाल उनके हाथों से मारा जाएगा, फिर ७ वर्ष तक लोग इस भांति परस्पर मिलेजुले रहेंगे, कि सम्पूर्ण संसार में परस्पर कोई

ईर्ष्या-द्वेष न रहेंगे । पश्चात अल्लाह स्याम देश की ओर से एक मन्द शीतल बयार(वायु)प्रवाहित करेगा जिससे समस्त ईमानवालों की आत्मा अधिकृत कर ली जाएगी । यहां तक कि जिसके हृदय मे राई के दाने के समान भी ईमान होगा, वह भी मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा, तत्पश्चात दुराचारी लोग शेष रह जाएंगे, जो अपनी दुराचारिता में पक्षियों सदृश्य भारहीन और मूर्खता में माँसाहारी पशुओं सदृश्य मूर्ख होंगे, न भलाई को भलाई और न बुराई को बुराई समझेंगे, तत्पश्चात शैतान प्रकट होगा और कहेगा:—तुम लज्जित न हो, कि तुमने मूर्तिपूजा त्याग रखी है ? यद्यपि वह उसके भरमाने में आकर मूर्ति पूजा प्रारम्भ कर देंगे । फिर सूर बजेगा, तब समस्त मृत हो जाएंगे । द्वितीय सूर बजने पर समस्त पुनर्जीवित हो उठेंगे, तत्पश्चात कयामत हो जाएगी, और कयामत के दिन जब अल्लाह अपनी सृष्टि हेतु पधारेगा, उस समय उसके प्रकाश से सम्पूर्ण भूमि आलोकित हो उठेगी । कर्मपत्र लाये जाएंगे, पैग़म्बरों को प्रस्तुत किया जाएगा, जो साक्षी देगें कि उन्होंने अपने समुदायों को खुदाई आदेश पहुँचा दिया था, और बन्दों के भले-बुरे कर्मों के निरीक्षक फरिश्ते उपस्थित किये जाएंगे और निष्पक्ष न्यायसंहित सृष्टि के निर्णय किये जाएंगे ।

तफसीर इब्ने कसीर पारा २४ पृ० २० से २२

उक्त आयत की व्याख्या अन्यान्य तफसीरों में भी उपरोक्तानुसार ही है । इसके आगे कर्मपत्र सम्बन्धी विवरण है ।

कर्म-पत्र

आयतः—

व कुल्ला इन्सानिन अल्ज़म्नाहो ताइरहु फी उनोकेही व नुख़रेजो लहू यौमल्कयामते किताबइंय्यल्काहो मन्शूरा । इकरा किताबका

कफ़ा बिनफ़्सेकल्योमा अलैका हसीबा ।

कुरआन पारा १५ रकू २/२

अर्थः-और प्रत्येक व्यक्ति के गले में हमने कर्मपत्र लगा दिया और हम उसके हेतु कयामत के दिन एक पुस्तक निकालेंगे, कि देखेगा तू उसको खुला हुआ, कि अपनी पुस्तक पढ़, पर्याप्त है यह पुस्तक आज के दिन तेरे प्राणों को हिसाब लेने हेतु ।

अनुवाद शाह रफीउद्दीन पारा १५ पृष्ठ ३८६-८७

व्याख्याः-हमने प्रत्येक मनुष्य का कर्म उसके गले की माला बना कर रखा है ।

इब्ने अब्बास-कल्बी और मकातल ने कहा--भलाई हो या बुराई, मनुष्य के साथ रहेगी । यहां तक कि उसका हिसाब ग्रहण किया जाएगा ।

हसन ने कहा-'ताईर' से तात्पर्य है, बरकत और नहुसत (बृद्धि और अपशकुन) से है । 'अहले हकीकत' (सत्यवादी) कहते हैं, कि 'ताईर' वह भाग्यसूचक विषय है, जिसका निर्धारण कर लिया गया है, कि मनुष्य उसे निश्चित करेगा और उसका फल भी निश्चित प्राप्त करेगा, चाहे वह सौभाग्यपूर्ण हो या दुर्भाग्य-पूर्ण ।

अबी ऊबेदा और कतेबो ने कहा 'ताईर' से अभिप्राय भाग्य है, अच्छा हो या बुरा । सम्पूर्ण अंगों में गला ऐसा अंग है, कि उसमें पड़े हुए हार या तौक (लौहे का पट्टा) मनुष्य की सुन्दरता और विकृति से विशेष सम्बध्ध है । अरबनिवासी इसी कारण पृथक न होने वाली वस्तुओं हेतु कहते हैं, कि यह वस्तु गले में पड़ गई पृथक न होगी ।

मुजाहिद ने कहा--जो शिशु उत्पन्न होता है, उसके गले में एक पत्र पड़ा होता है, जिसमें सौभाग्य-दुर्भाग्य अंकित होता है।

और कयामत के दिन उसके हेतु हम एक पुस्तक (कर्म-पत्र) निकालेंगे जो उसको खुला हुआ प्राप्त होगा।

बग़वी ने लिखा है-असार अकवाले साहबा में वर्णित है, कि जब मनुष्य की आयु पूर्ण हो जाती है, तो अल्लाह फरिश्ते को आज्ञा देता है, कि इस व्यक्ति का कर्मपत्र कयामत के पूर्व नहीं खोला जाएगा। (कयामत के दिन) उससे कहा जायेगा-अपना कर्मपत्र पढ़ अथवा यह तात्पर्य है, कि उस कर्मपत्र के प्रारम्भ में लिखा होगा, कि अपना कर्मपत्र पढ़। आज तेरी आत्मा स्वयं तुझसे हिसाब समझने को पर्याप्त है।

बैहकी ने हज़रत अन्स के कथन से लिखा है, कि रसूलिल्लाह ने फरमाया-समस्त कर्मपत्र खुदाई सिंहासन के नीचे हैं। जब कयामत के दिन समस्त लोगों को एक मैदान में हिसाब समझने हेतु खड़ा किया जाएगा, तो अल्लाह एक हवा भेज देगा और वायु कर्मपत्र उड़ा कर लोगों के दाहिने व बांए हाथों में पहुँचा देगी।

हसन ने कहा-जिसने तेरी आत्मा को स्वयँ ही तुझ पर हिसाब लेने वाला निर्मित कर दिया, उसने अवश्य ही तेरे हेतु न्याय किया है। (बग़वी)

इब्ने जरीर ने कतादा का कथन उद्धृत किया है, कि जो व्यक्ति संसार में अशिक्षित होगा, उस दिन वह भी शिक्षित होगा।

इब्ने मुबारक ने हसन का कथन उद्धृत किया है, कि प्रत्येक मनुष्य के गले में एक माला लटका दी गई है। जिसमें

उसके कर्म लिख दिये जाते हैं। फिर लपेट कर उसके गले में डाला जाता है। फिर कयामत के दिन उसे उठा लिया जाएगा, तो उस कर्मपत्र को उसके सन्मुख खोल दिया जाएगा और कहा जाएगा, कि अपनी पुस्तक को पढ़।

हज़रत अबू अमामा के उद्धृण से कहा है, कि रसूल्लिल्लाह ने फरमाया–मनुष्य के सन्मुख उसका कर्मपत्र खुला हुआ लाया जाएगा, तो वह पढ़ कर कहेगा -मैंने अमुक अमुक भलाईयाँ की थी, वह इसमें अंकित नहीं है। अल्लाह फरमाएगा–चूंकि तू लोगों की चुगली करता था, इसलिए मैंने वह तेरी भलाईयां मिटा दी। तफसीर मज़हरी पारा १५ पृ. ५० से ५२

☐ काफिरों के कर्म न तौले जाएँगे ☐

आयतः–**फ़ाहवेतत् एमालोहुम् फ़ ला नुकीमो लहुम् यौमल्कयामतें वजना।** कुरआन पारा १६ रकू १२/३

अर्थातः–जो लोग कयामत को वास्तविक अर्थ में नहीं स्वीकारते सो इसलिए उनके समस्त शुभकर्म व्यर्थ हो गए। कयामत के दिन हम उनके शुभकर्मों का रचमात्र भी तौल स्थापित नहीं करेंगे। अर्थात वह कार्य जो सांसारिक लाभ हेतु उन्होंने किये थे, या वह कर्म जो परलोक के फल प्राप्ति हेतु किये थे, उनको उनके फल से वंचित कर दिये जाएँगे, क्योंकि शुभकर्म स्वीकृति की बुनियादी शर्त ईमान है और वह काफ़िर थे। तौल स्थापित न करने का तात्पर्य, यह है कि अल्लाह के यहाँ उनका कोई मूल्य न होगा। अल्लाह उनके कर्मों का विश्वास नहीं करेगा।

बग़वी ने अबू सईद खुदरी का कथन उद्धृत किया है, कि कयामत के दिन लोग अपने कर्म लेकर आएँगे, जो उनकी दृष्टि

में तिहामह पर्वत होंगे किन्तु तौलने के पश्चात उनका कोई भार ही न होगा। इस आयत का यही अभिप्राय है, कि हम उनके हेतु कयामत के दिन कोई तौल स्थापित न करेंगे।

तफसीर मज़हरी पारा १६ पृ. २८७-८८

☐ कयामत के दिन काफिरों की नेकी न रहेगी ☐

आयतः-**इन्नल्लाहा ला अज़्लेमो मिस्काला जर्रतिन।**

कुरआन पारा ५ रकू ६/३

अर्थातः-काफिर की भलाई का फल उसको संसार में ही धन के रूप में प्राप्य होगा। कयामत के दिन पहुँचेगा तो उसकी कोई भी भलाई शेष न रहेगी, कि उसका फल पा सके।

तफसीर मजहरी पारा ५ पृ. ८१

पशुओं का भी न्याय होगा—

आयतः--**इला रब्बेहिमयोहश्रेरून।**

कुरआन पारा ७ रकू ४/१०

अर्थातः-फिर समस्त को उनके मालिकों के पास एकत्रित किया जाएगा।

इब्ने अबी हातम, इब्ने ज़रीर और बैहकी ने अबू हुरैरा का कथन वर्णित किया है, कि कयामत के दिन सम्पूर्ण सृष्टि उठाई जाएगी, चौपाए, कीड़े-मकोड़े और पक्षी समस्त को एकत्रित किया जाएगा। अल्लाह का न्याय यहाँ तक पहुँच जायगा, कि अल्लाह बिना सींगोंवाली का प्रतिकार सिंगवाली से दिलवाएगा।

अबू हुरैरा का उद्धृण है, कि रसूलुल्लाह ने फरमाया--कयामत के दिन सर्वप्रथम जिस अभियोग का निर्णय किया

जाएगा, वह दो बकरियों का होगा।

तफसीर मजहरी पारा ७ पृ. १३८

अंगों की साक्षी—

आयतः--

हत्ता इजा मा जाऊहा शहेदा अलेहिम समओहुम व अब्सारोहुम् व जलूदोहुम बिमा कानू यामलून व कालू लिजलूदेहीम् लिमा शहित्तुम अलैना कालू अन्तकनल्ला हुल्लाजी अन्तका कुल्ला शेईव्व व हु आ खल्काकुम अव्वला मर्रातिव्व व अलैहे तुर्जाऊन।

कुरआन पारा २४ रकू ३/१७

अर्थः—जब वह खुदा के सन्मुख उपस्थित होंगे, तो साक्षी देंगे उनके कान-आँखे और त्वचा, जो वह करते थे। वह लोग विस्मित होकर अपने अंगों से कहेंगे--क्यों तुमने हमारे विरूद्ध साक्ष्य दी। इस पर वह कहेंगे--हमको अल्लाह ने शक्ति दी। वह अल्लाह, जिसने प्रत्येक पदार्थ को उत्पन्न किया है। उसी ने तुमको प्रथम बार उत्पन्न किया था और उसी के पास पुनः लाये गये हो।

तफसीरे इब्ने कसीर पारा २४ पृ. ६६-७०

व्याख्याः--अर्थात उन मुशरिकों से कहो--कयामत के दिन उनका एकत्रित होना नर्क की ओर होगा, और नर्क अधिकारी उन समस्त को एकत्रित करेगा। जैसा कुरआन में वर्णित है, कि हम दोषियों को तीव्र तृष्णा की स्थिति में नर्क की ओर हांक ले जाएँगे और उन्हें नर्क के किनारे खड़ा कर दिया जाएगा, और उनके शारीरिक अंग-कान-आँखे और त्वचा उनके कर्मों की साक्षियां देंगे। उनके भूत-भविष्य के समस्त दोष प्रकट हो जाएँगे और शरीर का प्रत्येक अंग पुकार कहेगा, कि इसने मुझसे यह पाप किया है। उस समय वह अपने अंगों की ओर ध्यान देकर

उनकी निन्दा करेंगे, कि तुमने हमारे विरूद्ध साक्ष्य क्यों दी ? वह कहेंगे--खुदाई आदेश के पालनार्थ हमने साक्ष्य दी। उसने हमें वाणी की शक्ति दी और हमने सत्य-सत्य कह सुनाया।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा २४ पृ. ७०

उपरोक्तानुसार ही इस आयत की व्याख्या तफसीर मज़हरी पारा २४ पृष्ठ ३७७-७८ पर भी है।

इसी विषय पर एक और आयतः—

अल्यौमो नख्तेमो अला अफ़वाहेहिम व तुकल्लिमोना ऐदीहीम व तश्हदो अर्जुलोहुम बिना कानू यक्सेबून।

कुरआन पारा २३ रकू ४/३

अर्थः—आज हम उनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे, जब कि वह अपनी शिर्क (खुदा के अतिरिक्त) को नकारते हैं, और हमसे वार्ता करेंगे उनके हाथ और साक्ष्य देंगे उनके पैर, उस वस्तु से जो कि वह ससार में करते थे।

तफसीर कादरी पारा २३ पृष्ठ ३०९

व्याख्याः—उस दिन हम (खुदा) उनके मुँह पर मुहरें लगा देंगे और हमसे उनके हाथ वार्ता करेंगे, और जो कुछ वह ससार में करते थे, उसकी साक्ष्य उनके पैर देंगे।

हज़रत अन्स का कथन है, कि हम रसूलिल्लाह के समीप बैठे थें। आपने मुस्कराते हुए फरमाया—क्या तुम्हें ज्ञात है, कि मैं किस कारण से मुस्करा रहा हूँ ? हमने निवेदन किया—अल्लाह और उसका रसूल ही जाने। फरमाया—मुझे इस बात पर मुस्कराहट आई, कि एक बन्दा अपने प्रभू से कहेगा, कि ऐ मेरे प्रभू !

क्या तूने मुझ पर अत्याचार न करने का आश्वासन नहीं दे रखा है, अर्थात क्या तूने यह नही फरमा दिया है, कि कयामत के दिन किसी पर अत्याचार न किया जाएगा। अल्लाह फरमाएगा—क्यों नहीं। बन्दा निवेदन करेगा-मैं अपने विरुद्ध किसी की साक्ष्य स्वीकार नहीं करूँगा, अतिरिक्त जो कि मेरे ही शरीर का भाग हो। अल्लाह फरमाएगा-आज तेरी आत्मा और कर्मपत्र लेखन-कर्ता फरिश्ते तेरे विरुद्ध साक्ष्य देने हेतु पर्याप्त हैं। फिर अल्लाह उसके मुँह पर मुहर लगा देगा और अगों को आदेश दिया जाएगा, कि तुम बोलो। खुदा के आदेशानुसार अंग बन्दे के कर्मो के विषय में बोलेगे। तत्पश्चात बन्दे को वाणी की शक्ति दी जाएगी। वह अपने अंगों से कहेगा-तुम मर जाओ, नष्ट हो जाओ, तुम्हारी ओर से ही तो मैं प्रतिकार कर रहा था। (मुस्लिम)

अहमद-नसाई और हाकम व बैहकी ने मुआविया बिन हिदह का उद्धृण कहा है, कि कयामत के दिन तुम ऐसी स्थिति में आओगे, कि तुम्हारे मुँह पर मोहरा चढा होगा और सर्वप्रथम मनुष्य की जघा और हथेली वार्ता करेगी।

इब्ने जरीर और इब्ने हातिम ने हजरत अबू मूसा अश-अरी के उद्धृण से कहा है, कि कयामत के दिन मौमिन को हिसाब के हेतु बुलाया जाएगा और उसका प्रभू एकान्त में उसके कर्म उसके सन्मुख लाएगा। मौमिन स्वीकार करेगा, कि मेरे प्रभू! मैंने ऐसा किया था। अल्लाह उसके दोषों पर आवरण डाल देगा और क्षमा कर देगा, और सम्पूर्ण सृष्टि में उसके दोषों की किसी को सूचना न होगी, और उसकी भलाईयाँ लोगों पर प्रकट होंगी। जब काफिर व मुनाफ़िक को हिसाब हेतु बुलाएगा, उसका प्रभू उसके समक्ष उसके कर्म रखेगा। वह उन कर्मो को अस्वी-

कार करेगा, तो अल्लाह उसके मुँह पर मुहर लगा देगा । सर्व प्रथम उसकी दाहिनी जघा बोलेगी इत्यादि ।

तफसीर मज़हरी पारा २३ पृष्ट ३८४ से ८६

□ भूमि भी साक्ष्य देगी □

पाठक बन्धुओं ! आपने कयामतोपरान्त इस्लाम के खुदा का न्यायालय-न्याय पद्धति और न्याय हेतु व्यवस्था देखली, कि खुदा न्याय करने के पूर्व किस भाँति मोमिनों काफिरों और मुनाफिकों के साथ व्यवहार करेगा और किनके मुँह पर मुहर और मोहरा चढ़ा देगा, किसको एकान्त में तलब कर उसके दोष-पाप उसे दर्शा कर उन पर आवरण डाल देगा, कि सम्पूर्ण सृष्टि में किसी को कानों कान खबर तक न होगी और साक्षियो के रूप में शारीरिक अंगों की साक्ष्य ली जाएगी और अब आप पढ़िए कि खुदा के सन्मुख भूमि भी साक्षी के रूप में उपस्थित हो कर अपनी साक्ष्य देगी । आयतः-

यौमएज़िन तुहद्दिशो अखबारहा ।

कुरआन पारा ३० रकू १/२४

अर्थः-उस दिन भूमि अपने समाचार कहेगी ।

व्याख्याः-बग़वी ने लिखा है, कि वाक्य-रचना में तनिक उलट-फेर है । मूल कथन इस भांति थाः-

यौमएज़िन तुहद्दशो अखबारहा व कालल् इन्सानो मालह ।

अर्थातः-उस दिन भूमि सूचना देगी और जो कुछ उस पर किया गया होगा, उसका वर्णन करेगी, तो मनुष्य कहेगा-इस भूमि को क्या हो गया, कि अपने ऊपर किये हुए कर्मों को दर्शा रही है ।

हज़रत अबू हुरैरा का उद्धृण है, कि रसूलिल्लाह ने यह (उपरोक्त) आयत पढ़ी और फरमाया-क्या तुम्हें ज्ञात है, कि

भूमि के समाचार क्या होंगे ? सहाबा ने निवेदन किया-अल्लाह और उसका रसूल ही जानता है। तो फरमाया-भूमि के समाचार यह होंगे, कि जिस पुरुष और स्त्री ने भूमि के ऊपर जो कुछ किया होगा, भूमि उस पर साक्ष्य देगी और कहेगी-- अमुक व्यक्ति ने ऐसा--ऐसा किया था। यही भूमि के समाचार होंगे।

अहमद-निसाई-इब्ने हवान और बैहकी ने वर्णन किया है और तिर्मजी ने उद्धृत करने के उपरान्त इसे सत्य कहा है।

तफसीर मज़हरी पारा ३० पृ. ५०१

कयामत के दिन जब खुदा द्वारा कर्मपत्रों के और साक्षियों के आधार पर निर्णय दिया जा चुकेगा, तो उसके पश्चात क्या होगा ? पढ़िए:—

खुजूहो फगुल्लूहो सुम्मल जहीमा सल्लूहो सुम्मा फ़ी सिलसिलातिन ज़र्ओहा सब्ऊना ज़राअन फस्लोकूहो इन्नहू काना ला यौमेनो बिल्लाहिल्अज़ीम। कुरआन पारा २९ रकू १/५

अर्थात:--फिर नर्क के फरिश्तों को आदेश होगा, कि लो इसको और फिर गर्दन में इसके हाथ बांधों, फिर महा अग्नि में इसको डाल दो, फिर अग्नि-शृंखलाओं में, कि जिसका नाप ७० गज़ होगा, नोशेरवानी गज़ से, प्रत्येक गज़ ७ बांस के समानन्तर है और प्रत्येक बाँए बूफ़ से मक्का तक है, तो लाओ तुम उसे, उस शृंखला में बांध कर, उसके शरीर पर अत्यन्त शक्ति से लपेट दो, कि वह हिल न सके।

क़ाबुल अहबार ने कहा-संसार में जितना इस्पात है, एकत्रित करें, तो उस शृंखला की एक कड़ी के समान न है यदि उसकी एक कड़ी संसार के पहाड़ों पर रख दें, कि वह राँगे के सदृश्य पिघल जायें। (इतना महान विद्वान व्यक्ति क्या

असत्य थोड़े ही बोलेगा ?) निस्सन्देह, यह व्यक्ति पूज्य खुदा के प्रति ईमान नहीं लाता था।

तफसीर कादरी पारा २६ पृष्ठ ५७०-७१

व्याख्या:— अल्लाह नर्क के चौकीदारों को आदेश देगा — इसको बन्दी बना लो और इसके हाथ गर्दन से बांध कर जकड़ दो, पश्चात भयकर धधकती अग्नि में इसको झोंक दो। 'जहीम' का तात्पर्य भयकर धधकती अग्नि से है और 'सुम्मा' शब्द से तात्पर्य यह है कि आगामी सकट गत सकट से अत्यन्त भयकर होगा। जैसे प्रथम संकट बन्दी होना, फिर हाथों को गर्दन से बांधना, तत्पश्चात नर्क में डालना और इसके बाद एक श्रृंखला में बांधा जाना और भी कठोर होगा।

इब्ने अबी हातम और बैहकी ने औफ़ी के उद्धृण से इब्ने अब्बास का कथन उद्धृत किया है, कि श्रृंखला काफ़िर के गुदा से प्रविष्ट कर नाक के नथुनों से निकाली जाएगी। इस भांति उसे श्रृंखला में पिरोया जायगा कि वह अपने पैरों पर खड़ा न हो सके।

इब्ने अबी हातम ने इब्ने ज़रीर के ढंग से इब्ने अब्बास का कथन कहा है, कि जंजीर गुदा स्थान से प्रविष्ट कर मुँह से निकाली जाएगी, जिस भाँति टिड्डी को लकड़ी में पिरोते हैं, उसी भांति काफ़िर को श्रृंखला में पिरोया जाएगा और उसके पश्चात् उसे भूना जाएगा।

नूफ़े बक्काई स्यामी का कथन है—श्रृंखला ७० ज़रा की होगी और प्रत्येक जरा ७० बांह का होगा और प्रत्येक बांह कूफ़े से मक्का तक की यात्रा के समान होगी।

सूफ़ीयान ने फरमाया- प्रत्येक ज़रा ७० ज़रा का होगा।

हसन बसरी ने कहा—अल्लाह जाने, कौन सा ज़रा होगा।

मैं (तफसीर लेखक) कहता हूं, सम्भवतः नर्क के चौकीदारों का ज़रा अभिप्रेत हो अथवा नर्क में काफ़िर का ज़रा इतना बड़ा हो जाए, क्योंकि हदीस में आया है, कि नर्क के भीतर काफ़िर की डाढ़ ओहद पहाड़ के समान और उसकी त्वचा की मोटाई ३ दिवसीय मार्ग के अनुमान पर होगी :

(रवाहो मुस्लिम अन अबी हुरैरा मर्फुअन) अर्थात इसको मुस्लिम ने अबी हुरैरा से प्रमाणिक कहा है । अहमद- तिर्मज़ी और बैहकी ने इब्ने उमर का कथन उद्धृत किया है और तिमज़ी ने इस हदीस को प्रमाणिक कहा है । रसूलिल्लाह ने मस्तक की ओर संकेत कर फरमाया- उस शृंखला का इतना गोला आसमान से छोड़ा जाए तो रात्रि होने के पूर्व भूमि पर पहुँच जाएगा, जब कि भूमि और आसमान के मध्य ५ हजार वर्षीय मार्ग है, परन्तु यदि वह शृंखला का गोला नर्क में एक छोर से लटकाया जाएगा, तो रात-दिन चल कर ४० वर्षों में नर्क के तल तक पहुँचेगा।

इब्ने मुबारक ने काब का कथन उद्धृत किया है, कि इस शृंखला की एक कड़ी संसार के सम्पूर्ण इस्पात के समान होगी।

अबू नईम ने मुहम्मद बिन मुकन्दर का कथन उद्धृत किया है, कि संसार का सम्पूर्ण भूत और भविष्य का इस्पात संग्रहित किया जाए, तो नर्क की इस शृंखला की एक कड़ी के के भी समान्तर नहीं होगा।

इसलिए कि वह प्रतिष्ठायुक्त अल्लाह पर ईमान न रखता था। तफसीर मज़हरी पारा २९ पृ ७६-७७

काफिरों का मुंह के बल उठना—

तजरीदे बुखारी में एक हदीस:—

अन सिब्ने मालेकिन् अन्ना रजोलुन काला या नबिय्यलाहे कैफा योहस्रूल काफ़िरो अला वज्हैही यौमल्कयामते काला अलै सल्लजी अशाहो अलर्रिज्लैने फ़ीदुनिया कादेरन् अला अंयुम्शीहो अला वज्हैही यौमल्कयामते। (हदीस क्रमाँक ५७७)

अर्थात:— अन्स बिन मालिक से उद्धृण है, कि एक व्यक्ति ने निवेदन किया— हे अल्लाह के नबी ! कयामत के दिन काफ़िर अपने मुँह के बल किस भांति उठाए जाएँगे ? फरमाया— वह खुदा, जिसने उनको संसार में पांवों के बल चलाया, क्या वह इस पर सामर्थ्य नहीं रखता, कि कयामत के दिन उनको मुँह के बल चलाए। तजरीदे बुखारी भाग २ पृष्ठ २८७

कयामत के दिन मृत्यु का वध

पाठक बन्धुओं ! कयामत के दिन खुदा द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि का न्याय और निर्णय सम्पन्न किये जाने के तदोपरान्त कयामत क्षैत्र में स्वर्ग और नर्क के मध्य मृत्यु को लाकर उसका वध किया जायगा। इस सम्बन्ध में कुरआन में आयत है:—

अल्लजी खलकल्मौता वल्हयाता।

कुरआन पारा २९ रकू १/१

अर्थात जिसने मृत्यु और जीवन को उत्पन्न किया।

व्याख्या:— सहीह बुखारी व मुस्लिम में हज़रत इब्ने उमर का कथन है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया— जब नर्कगामी नर्क में और स्वर्गगामी स्वर्ग में जा चुकेंगे, तब मृत्यु को लाकर स्वर्ग और नर्क के मध्य में वध कर दिया जाएगा। तत्पश्चात उद्घोषक घोषणा करेगा— ऐ स्वर्ग निवासियों और नर्क निवासियों ! अब भविष्य में मृत्यु नहीं आएगी।

सहीहैन (मुस्लिम--बुखारी) में हजरत इब्ने के उद्धृण से एक हदीस है, कि हजरत मुहम्मद ने फरमाया – कयामत के दिन मृत्यु को चितकबरे मैंढे की आकृति में लाकर नर्क और स्वर्ग के मध्य खड़ी कर दी जाएगी और (खुदाई) आदेशानुसार उसका बध कर दिया जाएगा।

हाकम ने इस हदीस को सत्य कहा है । इस प्रकार के अन्यान्य कई हदीसें व उद्धृण हैं। तफसीर मजहरी पारा २६ पृ. २२-२३ मृत्यु के वध से सम्बन्धित बुखारी की एक हदीस:—

अन् अबी सईदिल्खुदरी काला, काला रसुल्लुल्लाहे यौतिबिल्मौते कहैते कब्शे अम्लाहा फय्युनादि मुनादेयन् आहललजन्नते फ़ यकूलो हल् तातेफ़ ना हा जा फ़ यकुलूना नाअम् हाजल्मौतो···
·······इत्यादि। (हदीस क्रमांक ५७४)

अर्थात:–अबू सईद खुदरी से उद्धृण है, रसूलिल्लाह ने फरमाया–मृत्यु चितकबरे मेंढे की आकृति में लाई जाएगी, पस, उद्घोषक नर्क और स्वर्ग निवासियों को उद्घोषित करेगा, पस, वह कहेगा-- इसको जानते हो ? उत्तर देंगे-- हां यह मृत्यु है, और समस्त लोगों ने इसको देखा है । पस, उसका वध कर दिया जाएगा। तत्पश्चात कहेगा— ऐ नर्क व स्वर्ग के निवासियों । अब किसी को मृत्यु नहीं आएगी । तजरीदे बुखारी भाग २ पृष्ठ २८४

पाठक बन्धुओं ! कुरआन परिचय के इस कयामत अध्याय में इस्लाम के सर्वसम्मत और सर्वमान्य कयामत के सिद्धान्त को विश्लेषित किया है, कि किस भांति विश्व में कयामत आच्छादित होगी और कयामत को प्रभावशील करने के पूर्व इस्लाम व कुरआन के अल्लाह को क्या-क्या तैयारियां करना पड़ेगी और किस भाँति ८ फरिश्तोंयुक्त सिंहासन से खुदा कयामत के क्षैत्र में पदार्पण कर फरिश्तों व कर्म पत्रों के आधार पर काफिरों व मुसल-

मानो के कर्मफलों को जांच कर अपने मौलिक ढंग से न्याय कर निर्णय सुनाएगा और उन्हें स्वर्ग व नर्क का निवासी घोषित करेगा।

कयामत के पूर्व व पश्चात तथा उसी दिन किस भांति मनुष्यों की व्यक्तिगत और सामुहिक मृत्यु होगी और किस प्रकार धरती-आसमान-सूर्य---चन्द्र ग्रह-नक्षत्र समुद्र, वन-उपवन और पहाड़ एवं सम्पूर्ण सृष्टि का महानाश होगा और खुदा अपने न्यायकरण हेतु किस भांति धरती और आसमान को रजत व स्वर्ण का निर्मित कर लोगों को कब्रों से पुनर्जीवित कर उठाएगा और अपने रसूल हजरत मुहम्मद की सिफारिश व शारीरिक अगों-फरिश्तों व भूमि की साक्ष्य के आधार पर मनुष्यों के कर्मपत्रों को माध्यम बनाकर कर्मफलों की जांच कर न्याय करेगा ? कुरआन और इस्लाम के खुदा के न्याय के कतिपय उद्धृण हमने प्रस्तुत किये हैं, जिनसे सहज ही आपको सिंहासनारूढ़ कुरआनी खुदा कितना निष्पक्ष सत्यवादी और न्यायकर्ता है ? कि खुदा लोगो को उनके कर्मों के तौल के आधार पर दण्ड व फल देगा किन्तु आश्चर्य की बात है कि मौमिनों के हेतु हजरत मुहम्मद की सिफारिश मान कर उन्हें स्वर्ग दे दिया जाएगा और अन्यान्यों हेतु कोई सिफारिश व सफाई मान्य न होगी। यदि उनके दोष नेकियों से रचमात्र भी अधिक होंगे, तो उन्हें अनादिकाल तक नर्कागिन में श्रृंखलाबद्ध कर डाल दिया जाएगा। इसका विवरण आप आगामी अध्याय में पढ़ेगे।

हमने इस विषय पर कोई समीक्षा या टिप्पणी नहीं की है, क्यों कि ऐसे निरर्थक और अर्थहीन विषय पर किसी प्रकार की समालोचना करना, समालोचना का अपमान समझते हैं। इस हेतु एक बात की ओर आपका ध्यानाकर्षण करना चाहते

हैं, कि जिस न्यायाधीश के न्याय का माध्यम यह हो, कि न्याय-तुला के एक पलड़े पर सम्पूर्ण सृष्टि के समस्त पदार्थों अर्थात:- धरती, आसमान, सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, समुद्र, पहाड़, वन, उपवन आदि को रख दिया जाए और दूसरे पलड़े पर एक छोटे से सफेद रूक्के पर मात्र 'कलमा शहादत' अंकित कर रख दिया जाए, तो इस रूक्के का भार सृष्टि के सम्पूर्ण पदार्थों से अधिक होगा। जो न्यायाधीश इस भाँति पूर्वाग्रह से अनुप्रेरित हो, उससे निष्पक्ष न्याय की आशा क्या कल्पना भी नहीं की जासकती है। कि अन्धेर नगरी, अनबूझ राजा, टके सेर भाजी और टके सेर खाजा, किन्तु यहां तो यह युक्ति भी साधारण ज्ञात होती है, क्यों कि इससे तो भाजी और खाजा का मूल्य भी समान न रखा ?

हम इससे आगे कयामत के न्याय से उत्पन्न स्वर्ग व नर्क नामक दो फलों को प्रस्तुत कर रहे हैं। अब आप कुरआन में वर्णित इस्लामी स्वर्ग में भ्रमण कीजिए।

जन्नत

ओ३म्

—: ईश-विनय :—

—□—

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतंगमय।

हे सत्य-स्वरूप भगवन् ! हमें असत्य से सत्य की ओर, हे प्रकाशदाता प्रभु ! अँधकार से ज्योति की ओर, हे मुक्त स्वभाव परमेश्वर ! हमें मृत्यु से निकाल कर अमृत की ओर ले चलो।

जो धर्म अथवा मज़हब एक ईश्वर को जगतकर्ता प्रभु को कर्मफल-दाता भी माने। इस स्थिति में उन्हें जीव की, जो इस शरीर को चलाने वाला और जीवन देने वाला है, उसे अनादि और कर्म करने में स्वतन्त्र स्वीकारना आवश्यक हो जाता है। ऐसा मानने पर ही सांसारिक सुख-दुख और मोक्ष की गुत्थी सुलझ सकती है।

विभिन्न मज़ाहिब (सम्प्रदाय) ईश्वर को कर्मफल-दाता मानते हैं किन्तु उनकी कर्मफल-व्यवस्था ईश्वर के गुण, कर्म-स्वभाव के अनुकूल और न्याययुक्त नहीं है और न किसी सत्यान्वेषी-बुद्धिजीवी के मानने योग्य ही है।

ऐसी स्थिति में हम उन मतों को ईश्वर की ओर से नहीं मानेंगे। क्योंकि जब उनके कर्मफल और उसकी मर्यादा ही युक्ति-सगत नहीं है, तो हम ऐसे मतों का धर्म ईश्वर प्रदत्त नहीं मान सकते।

इस भाग में हम इस्लाम मज़हब के कर्मफल को पाठकों के समक्ष पस्तुत कर विवेचन करेंगे कि क्या इस्लाम द्वारा प्रतिपादित कर्मफल ईश्वरीय न्याय के अनुकूल और युक्तिसगत है ?

इस्लाम का धार्मिक ग्रंथ मुख्यतया कुरआन है, जिसे वह खुदा की ओर से मानते हैं । कुरआन में दोज़ख (नर्क) और बहिश्त (स्वर्ग) का वर्णन किया गया है । दोज़ख, काफ़िरों के लिये दण्ड–विधान हेतु और बहिश्त मुसलमानों के कर्मफल हेतु कहा गया है ।

इस विषय को प्रारम्भ करें इसके पूर्व यह बता देना आवश्यक है कि बहिश्त में कौन जायेंगे:—

वा मय्यूते इल्लाहा व रसूलहू युद् खिल्हो जन्नातिन तज्री मिन तहतेहल अनहारो खालेदीना फीहा व जालेक लफौजुल् अजीम । व मय्या सिल्लाहा व रसूलहू व यतअद्दा हुदूदहू युद् खिल्हो नारन खालिदन फ़ीहा व लहू अज़ाबुम्मुहीन् ।

कुरआन, पारा ४, सूरत निसा, रकू २/१३

अर्थात–जो कोई अल्लाह की और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे उनके अहकाम में, अल्लाह उसे बहिश्तों (स्वर्गों) मे दाखिल करेगा । जिसमें उसके वृक्षों के नीचे बराबर नहरे जारी है । स्थिति यह है, उसमें दाखिल होने वाले हमेशा उसीमें रहेंगे और आज्ञाकारियों का उसमें सदा रहना बड़ा छुटकारा (मुक्ति) है, और जो कोई अल्लाह की व उसके रसूल का आज्ञा भग करे, जैसे—ऐनिया बिन हुसैन फजारी, कि लड़कों और औरतों की मीरास (सम्पत्ति में से भाग) देने पर राज़ी न हुआ और बोला मैं मीरास न दूंगा.....हक तआला (खुदा)

ने यह आयत भेजी कि जो व्यक्ति खुदा और रसूल की आज्ञा न माने और उसकी सीमा से गुज़र जाये, जो हलाल और हराम एवँ मीरास अपितु समस्त निश्चित आज्ञाओं की अवज्ञा करे, अल्लाह उसे आग में, कैसी आग में कि हमेशा उसके मध्य में रहेगा उचित मज़हब यह है कि दोज़ख की आग में सदा रहना हराम वस्तुओं को हलाल कर लेने के कारण से होता है।

तफसीर कादरी, पृष्ठ १५४, भाग १

खुदा की आज्ञा भग करना तो एक आड़ मात्र ही है वास्तव में तो रसूल की आज्ञा भग करना ही है। ऐनिया को एक मीरास देने के इन्कार पर सदा के लिए दोज़ख में जाना पड़ा। फिर लिखा :—

लाकिनिर्रसूलो वल्लजीन आमनू मअहू जाहदू बि अमवालेहिम व अनफ़ुसेहिम, व उलाएका लहुमुल खैरातो व उलाएका मुफ्लेहून।

कुरआन पारा १०, सूरत तौबा, रकू ११/१७

अर्थात—अल्लाह का रसूल और जो लोग उसके साथ ईमान लाये हैं और अपनी जान व माल सहित जिहाद (धर्मयुद्ध) किया है, उन लोगों के और उस गिरोह (समुदाय) के हेतु दोनों जहान की नेकियाँ हैं। अर्थात- दुनिया में लूट का माल और विजय तथा परलोक में बहिश्त और प्रतिष्ठा, वे हैं छुटकारा पाने वाले और लक्ष्य को पहूँचने वाले।

तफसीर कादरी, पारा १० पृष्ठ ४०६

ऐसी और भी बहुत सी आयतें हैं, परन्तु इन दोनों उपरोक्त आयतों से ही आपको ज्ञात हो गया होगा कि स्वर्ग में कौन जायेगा।

तजरीद बुखारी में पृष्ठ १०१ भाग १ में हदीस क्रमांक २६९ में:- फकाला रूसूलुल्लाहे सल्ला फइन्नल्लाह कद हर्रमन्नारो अला मन काला ला इलाहा इल्लिल्लाहो यब्तगी बिजालिका वज्हुल्लाहे। अर्थात--जिसने ला इलाहा इल्लिल्लाह' कहा, उस पर खुदा ने दोजख को हराम कर दिया। जब कि उससे खुदा कि रजा मतलूब हो। यहूदी ईसाई और मूर्तिपूजक सब नर्क में जायेंगे।

हदीस बड़ी लम्बी है उसका सारांश यह है कि उक्त यहूदी, ईसाई और मूर्तिपूजक केवल एक प्रश्न पूछने के पश्चात सब नर्क में जायेंगे। प्रश्न यही होगा कि तुम किसे पूजते थे। देखिए, तजरीदे बुखारी बाब तफसीरुल कुरआन, हदीस क्रमांक ५५२, पृष्ठ २७२, भाग २।

--अब स्वर्ग की सैर कीजिए--

आयत:—

व बश्शे रिल्लजीना आमनू व अमिलुस्सालेहाते अन्न लहुम जन्नातिन तजरी मिन् तहतेहल अनहारो कुल्लमा रूजेकू मिन् हा मिन् समरतिर्रिजकन कालू हाज़ल्ल जी रूजिकना मिन् कब्लो व ऊतूबेही मुतशा बिहन व लहुम फिहा अज्वाजुम्मतहहर तुंव्व हुम फ़िहा खालिदून।

कुरआन, पारा १, रकू ३/३

अर्थात—ऐ रसूल! और खुशखबरी दे उन लोगों को जो खुदा की तौफ़ीक (प्रदत्त शक्ति) से खुदा, रसूल और कुरआन। का फ़राइज (अनिवार्य कर्तव्य) और सुन्नते (हजरत मुहम्मद के कुरआन से अतिरिक्त अन्य आदेश) नेक काम बजा लाये। अन्य आदेश पूर्ण करने से शुभ संदेश का विषय (मजमून बिशारत यह

है कि निसन्देह, अंत में उनके लिये बाग है, जिनमे कि हर प्रकार के मेवे होंगे, उनके वृक्षों के नीचे से या उनकी खिड़कियों से या झरोंखों के नीचे से पानी की, दूध और शराब तहूर तथा शहद की नदियाँ बहती है। जब जन्नती (स्वर्ग-निवासी) लोगो को उन वृक्षों से रोज़ी (पकवान) दिये जायेगे, तो वे बने-बनाये और चुने हुए खाने को देखकर कहेंगे-यह वह मेवा है, जो पूर्व दिया और खिलाया था हमें इससे पहले दुनियाँ ! (बाजो (अन्यो) ने कहा है कि बहिश्त में) किन्तु पहला कथन अवसर और अशहर (प्रमाणिक और विख्यात) है। और लायेगे मोमिनों के सामने बहिश्त के मेवों में से, दुनिया के मेवों के सदृश्य रग और आकृति में, परन्तु स्वाद में भिन्न होंगे। इस कारण कि दुनिया के सब मेवों का मज़ा (स्वाद) जन्नत के एक मेवे में है, और बहिश्त के रहने वालों के लिये है; बहिश्त के उद्यानों में पत्नियाँ, हूरें और स्त्रियाँ पाक (पवित्र) जो हर नेक दृश्य या उन दोषो और आपत्तियों से पाक (निर्मल) जो सांसारिक औरतों के लिये होती है। और जन्नती लोग बहिश्तों में हमेशा रहने वाले हैं।

तफसीर कादरी पृष्ठ ८

यह है शुभ सूचना किन्तु हम मुसलमानों से कहेंगे कि यह शुभ सूचना केवल कल्पना मात्र है, इसमें कोई यथार्थता नहीं है। मिलने-मिलाने को कुछ नहीं केवल सब्ज़ बाग ही है दुनिया के लोगों के लिये, जैसा कि प्रसिद्ध शायर ने कहा:—

ज़ाहिद हमें मालूम है जन्नत की हकीकत, लेकिन—
दिल के खुश रखने को गालिब यह खयाल अच्छा है।

इस आयत की व्याख्या तफसीर मजहरी में अत्याधिक विस्तृत है। नेक एमाल क्या है ? नेक एमाल उनको कहते हैं जिनको शरीअत (मुस्लिम धर्म शास्त्र) ने अच्छा कहा है।

खायेंगे-पीयेंगे किन्तु पैशाब-पाखाना, मुँह और नाक की रेज़श (गंदगी) और जुमला आलाय शों (समस्त गदगियों) से पाक साफ होंगे..... उनका खाना-पीना डकार से हज़म हो जाये करेगा और उनका पसीना मुश्क (कस्तूरी) की सुगंध सा होगा।

यदि जन्नत की कोई स्त्री धरती पर झाँक भी ले तो आकाश से धरती तक उसकी चमक और सुगन्ध फैल जाये।

हज़रत अली से रवायत है कि जन्नत में एक बाज़ार होगा, उसमें खरीद-फरोख्त तो कुछ होगी नहीं किन्तु उसमें स्त्री-पुरूषों की सूरतें होंगी। जो कोई जिस सूरत को चाहेगा उसमें दाखिल हो जायेगा।

तफसीर मज़हरी पृष्ठ ६२-६६

हूर के लिये देखो **तज़रीदे बुखारी भाग २, बाब जहाद की फजीलत ३७ क्रमांक ३६**। अर्थ ऊपर लिख दिया है पृष्ठ ६५ के हवाले में।

बहिश्त की चौड़ाई—

व जन्नतिन अर्ज़ो हस्समावातो, वल् अर्ज़ो उइद्दत् लिल्मुत्तकीन्।

कुरआन पारा ४, सूरत आलेइमा, १४/५

अर्थात-और जल्दी करो उस काम में जो तुम्हें बहिश्त में पहूँचाये, कि उसकी उत्कृष्टता के कारण उसकी चौड़ाई आसमान है। अर्थात— आसमानों के सदृश्य और ज़मीन, खुदा ने जन्नत की यह लम्बाई- चौड़ाई बयान फरमाई-इस कारण कि उसकी लम्बाई (विस्तार) की कैफियत मनुष्य की बुद्धि में नहीं आ सकती।

तफसीर कबीर में लिखा है कि यदि आसमानों और ज़मीनों के तबक-तबक (खड खड) करें तो ऐसी स्थिति में उन तबकों में से प्रत्येक अणु-परमाणु से मरक्कब (एकत्रित) हो और

उन तबकों को बराबर बिछाकर परस्पर मिला दें यहाँ तक कि सब मिल कर एक तबक हो जाये तो बहिश्त की चौड़ाई इस कदर हो सकती है ।(लम्बाई तो मनुष्य—बुद्धि से परे वस्तु है, खैर कम से कम स्वर्ग की चौडाई तो समझ में आई) ऐसी बहिश्त तैयार की गई है शिरक (दूसरे खुदा) से परहेज़ करने वालों के लिये ।

सोने के कंगन—

आयत—

इन्नल्लाहा युदखिलल्लाज़ीन आमनू व अमेलूस्सालेहाते जन्नातिन तज्री मिन तहतेहल अनहारो युहल्लुना फ़ीहा मिन असाविरा मिन ज़हबिव्व लोलुआ, व लिबासुहुम फ़ीहा हरीर ।

क़ुरआन पारा १७, सूरत हज्ज, रकू ३/१०

अर्थात— निसन्देह खुदा उन लोगों को दाखिल करेगा जो खुदा और रसूल का ईमान लाये और उन्होने नेक काम किये, जन्नतों में उनके मकानों के नीचे से नहरे जारी हैं और आरास्ता करेंगे (शृंगार करेंगे) और जेवर पहिनायेंगे उन्हें बहिश्त में सोने के कंगन और सजायेंगे उन्हें मोतियों से और जन्नत में उनकी पोसाख असली रेशम की होगी ।

तफसीर कादरी पृष्ठ ७६, भाग २

(हदीस में आया है कि जो कोई दुनिया में रेशमी वस्त्र पहिनता है वह आखिरत में उससे वंचित रहेगा ।)

☐ दोपहरी गुजारने की जगह ☐

असहाबुल जन्नते यौमएज़िन खैरुम्मुस्तकर्रव्व अहसनो मकीला ।

क़ुरआन पारा १९ सूरत फ़ुर्कान रकू ३/१

अर्थात-बहिश्त के रहने वाले उस दिन बेहतर ठिकाने में है और बेहतर है वह जगह दुपहरी काटने में । खुदा बहुत जानने वाला,

हिकमत वाला है।सब साधन सोच लेता है। अरबकी बादेसमूम (गर्मलू) से झुलसे हुए लोगों के लिए दुपहरी व्यतीत करना बड़ा मुश्किल था।

तफसीर कादरी पृष्ठ १३८, भाग २ में लिखा है कि इससे इस्तराहत (अच्छा आराम) मुराद है। इसलिए कि बहिश्त में नींद और सोना नहीं होगा। (नींद न आना बहिश्तियों के लिए बवाले जान तो न हो जायेगा ?)

—बागों में तकिया लगाये होंगे—

आयतः—

जन्नाते अदनिम्मु फत्तहतल्लहुम् लअब्वाब, मुत्तकेईन फीहा यदऊना फीहा बिफाकिहतिन् कसीरतिंव्व शराब व्व इन्द हुम कासिरातुत्तर्फे अतराब।

कुरआन पारा २३, सूरत स्वाद, रकू ४।१३

अर्थात—ठहरने के लिये बाग हैं, उनके लिये दरवाजे खोले गये हैं, उन बागों में वह तख्तों पर तकिया लगाये होंगे नाजो नेमत वालों की तरह आराम के लिये। उन बागों में मेवे बहुत चाहते होंगे, इसलिए कि मेवाखोरी लज्जत (आनन्द) के लिये होती है और खाना (भोजन) तनपवरी (शरीर पालन) के लि°, और जन्नत में शरीर पालन नही होगा इस कारण मेवों की ओर बहुत इच्छा करेंगे और पीने की वस्तु बहुत चाहेंगे, और उनके पास नीची दृष्टियाँ रखने वालीयाँ होंगी··· ··· ···सब समान आयु की होंगी ·· आयु तैंतीस वर्ष की होगी अपने पतियों के समान। तफसीर कादरी, पृष्ठ ३३६, भाग २

☐ विवाह कर देंगे ☐

आयत–

व जव्वज्ना हुम बिहूरिन ईन।

कुरआन पारा २५, सूरत दुखान, रकू ३।१६

अर्थात-और हम (खुदा) बड़ी आँखों वाली गौरी स्त्रियों के साथ परहेज़ गारों का जोड़ा करेंगे ।

तफसीर कादरी, पृष्ठ ४१८, भाग २

— शराब, शहद आदि की नहरें —

आयत:—

मसलुल जन्नतिल्लति वुएदल मुत्तकून फीहा अनहा रुम्मिम्मा इन गैरे आसिनिन व अनहारुम्मिहलब निन लम यतग़य्यरो तामहू व अनहारुम्मिन खमरिल्लज्जतिल्लिश्शारि बीन व अनहारुम्मिन असलिम्मु मुसफ्फा व लहुम फीहा मिन कुल्लिस्समराते व मगफ़िरतुम्मिर्रबिहिम ।

कुरआन पारा २६, सूरत मुहम्मद, रुकू २।६

अर्थात—यह सब जो हमने तुम पर पढ़ा बहिश्त की शिफ़त (विशेषता) है, जिसका परहेज़गारों को वादा दिया गया है। उस बहिश्त में नहीं बिगड़ने वाली पानी की नहरें हैं । अर्थात—उसका रंग, बू और मज़ा खराब नहीं होगा और उसमें दूध की नहरें हैं, जो कदापि मीठा होने से नहीं बदले, अर्थात जमाना गुज़रने से तेज और खट्टा नहीं हुआ, और उसमें शराब की नहरें हैं, खुशमजा और लज्जतदार पीनेवालों के लिये, कि उसके पीने से खुशी होगी, खुमार नहीं, और स्वच्छ शहद की नहरें हैं, मोम आदि से साफ उत्पन्न किया हुआ, और परहेज़गारों के लिये जन्नत में उन पीने की वस्तुओं के साथ समस्त मेवे हैं, जो वह चाहे सुन्दर रंग, स्वादिष्ट व सुगंधित, और उनके रब्ब (खुदा) की ओर से उनके लिये है गुनाहों का पोशिदा होना, अर्थात-हक्त आला (खुदा) उनके गुनाह (पाप-अपराध) छुपाएगा, न उन पर अज़ाब (कष्ट या दंड) करेगा और न अताब (क्रोध) ।

तफसीर कादरी, पृष्ठ ४३७, भाग २

यदि स्वर्ग में भी गुनाह साथ रहे, तो स्वर्ग काहे का, उन गुनाहों का कोई भी प्रभाव नहीं, न तो खुदा दंड ही देगा और न क्रोध ही करेगा। दुनिया में तो यह कहा गया है कि:-

शराब रिज्सुम्मिन अमलिश्शैताने फ़जतनेबूहो।

कुरआन पारा ७, सूरत माएदा, रकू १२/२

अर्थात शराब पीना नापाक (अपवित्र) शैतान का काम है। यह कहकर संसार में शराब पीना बन्द करवा दिया परन्तु स्वर्ग में शराब की नहरें बहादी कि आनन्द से पियो। कहा गया है कि स्वर्ग को शराब पीने से नशा नहीं चढ़ता! हजरत! जो व्यक्ति नियमित और प्रतिदिन पीने का आदि है, पियक्कड़ है, उसे तो यहाँ संसार में भी शराब का नशा नहीं चढ़ता। इस पर कहा जाता है कि खुदा की इच्छा है। तुम कौन होते हो दखल देने वाले। अच्छा भाई लोगो! हम भी दखल नहीं देते हैं, तुम जानो और तुम्हारा खुदा! हमें क्या? जब तुम्हारा खुदा ही तुम्हें शराब पिलाता है, तो वाकई हम कौन होते हैं एतराज़ करने वाले।

— खुदा ने मुसलमानों की जानें मोल ले रखी है —

आयतः-

इन्नल्ला हशतरा मिनलमोमिनीना अन् फुसहुम् व अमवालुहुम् बिअन्न लहुमुल जन्नत, युकातेलूना फ़ी सबीलिल्लाहे फ़यक्तलूना व युक्तलून वादन अलैहे हक्का।

कुरआन पारा ११, सूरत तोबा, रकू १४/३

अर्थात-निसन्देह, अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानें और माल इस बादे पर) खरीद लिये हैं, कि उनके लिये (उसके) इवज़ (बदले) जन्नत (स्वर्ग) है।

जान ओ माल खर्च करने के बदले में उनको जन्नत देने को, खुदा ने खरीद-फरोख्त (क्रय-विक्रय) करार दिया है।..... (लिखा है) कि सर्व प्रथम जिसने रसूलिल्लाह (हज़रत मुहम्मद) के हाथ पर अपना हाथ मारा (अर्थात बैअत (प्रतिज्ञा) की) वह बरा बिन मारूर या अबुलहशीम या असअद थे, और शर्त यह की थी, कि जिसमें (मुसीबत में) वह अपने परिवार की रक्षा करेंगे, उससे रसूलिल्लाह की भी रक्षा करेंगे और तमाम इन्सानों के मुकाबिल आपकी हिमायत करेंगे·····वह लोग अल्लाह की राह पर लड़ते हैं, जिसमें कत्ल (हत्या) करते हैं और कत्ल किये जाते हैं। यह प्रारम्भिक वाणी है, इसमें खरीदने की ग़रज़ को ज़ाहिर किया गया है।

तफसीर मज़हरी, पारा ११, सूरत तौबा, पृष्ठ ४१८-१९

इस आयत के अनुसार मुसलमानों को कुरआन के खुदा ने मोल ले लिया है, और जो खरीदा गया हो उससे यह आशा करना कि वह सत्यासत्य का निर्णय करने को तत्पर होगा या हो जायेगा। यह विचार करना भी निरर्थक और कल्पना से भी परे हैं जो बिक चुका है, वह स्वतन्त्र नही हो सकता। यही कारण है कि मुसलमान जिसके (खुदा के) हाथ बिक चूके हैं इसलिए जो उसने कहा, उसी को ही एकमेव प्रमाण मानते हैं और यह लोग असत्य से इन्कार नही कर सकते। जेसा कि हजरत ने फरमाया है:-

अन इब्ने अब्बास काल रसूलुल्ला हो मन जहदा आयतम्मिनल कूरआने फकद हल्ला जरबा उनकेही।

इब्ने माजा भाग २, पृष्ठ २६० अनुवाद मोलवी वहीदूज्जुमान अर्थात जिस व्यक्ति ने कुरआन की एक आयत का भी इन्कार किया उसको गर्दन मारना हलाल हो गया।

तफसीरे कशाफ और ऐनलमुआनी के माध्यम से तफसीर कादरी में लिखा है, कि एक एराबी ने हज़रत मुहम्मद से पूछा (जब हज़रत मुहम्मद यही आयत पढ़ रहे थे) कि यह खरीदो-फरोख्त कब हुई थी, तो आपने (हज़रत मुहम्मद) ने फ़रमाया कि मीसाक के दिन जब तमाम ज़ुर्रिय्यात (रूहों को) अलस्तोवि रब्बेकुम का खिताब सुनाया था।

तफसीर कादरी, पारा ११ पृष्ठ, ४१४, भाग १

यह कुरआन की एक गाथा है, कि सृष्टि के आरम्भ के दिन जब सब रूह उत्पन्न हुए, तो खुदा ने उन रूहों से कहा–कि क्या मैं तुम्हारा रब्ब (ईश्वर) नहीं हूँ ? तो सबने कहा— कि 'कालू ब ला' कि हां तू ही हमारा खुदा है, तो हज़रत ने कहा कि यह खरीदो–फ़रोख्त भी उसी दिन हुई थी।

अब यह देखिए कि जिनको क्रय किया गया उनको किसी को भी यह पता नहीं कि हमें खरीद लिया गया है, या हम किसी के हाथों बिक चुके हैं। अस्तु किसी ने सत्य ही कहा है, कि जो काफिर हैं उनको तो हूरें और महल यहाँ ही मिल गये हैं और बैचारे मुसलमानों को फक्त वायदे हूर। केवल हूर इस वायदे पर ही मुसलमानों को खरीद लिया गया। जिस वादे पर मुसलमानों को क्रय किया गया है, उसी स्वर्ग का चित्र हम इस पुस्तक में खींच रहे हैं।

कुरआन की सूरत तूर में स्पर्ग का बड़ा लम्बा-चौड़ा वर्णन है। हम अरबी को न लिखते हुए केवल उसका अनुवाद यहाँ दे रहे हैं। **आयत १६ इन्नलमुत्तकीना से आयत २६ मुशफ़्फ़कीन** तक का अर्थ और व्याख्या हम तफ़सीर कादरी से लिख रहे हैं तथा अन्य तफसीरों में जो अन्तर और विभिन्नता होगी, उसे हम विशेषकर पृथक से उल्लेखित करेंगे।

तफसीर कादरी में निम्न प्रकार है:—

निसन्देह परहेज़गार (संयमी) लोग जिन्होंने कुफ्र (अविश्वास) और शिरक (दुसरे खुदा) से परहेज़ किया बागों में है, और क्या बाग हैं ? और नियामतों में क्या नियामतें हैं ? खुश और मज़ा उड़ाने वाली उन वस्तुओं के कारण जो प्रदान की है उनको, उनके रब्ब (खुदा) ने हमेशा के लिए बज़ुर्गियां उस कारण से बचाया उनको, उनके रब्ब ने दोज़ख (नर्क) के अज़ाब से।

और जन्नत के फ़रिश्ते उनसे बराबर कहेंगे कि खाओ जन्नत के खाने (भोजन) और पियो पीने की वस्तु, खाना-पीना सब पाचक है, न कि अपच हो। और न कम करे तुम्हारे लिये यह जज़ा (कर्मफल व बदला) इस कारण कि जो तुम दुनिया में अमल करते थे।

इमाम ज़ाहिद ने फरमाया कि हर चन्द वादा बन्दे के काम पर है, किन्तु उसकी कृपा वास्तविक है। अन्यथा प्रत्यक्ष है कि हमारे काम की मज़दूरी क्या होगी ?

मुत्तकी (परहेज़गार) लोग स्वर्ग में सोने-चांदी से मढे तख्तों पर तकिया लगाये होंगे, जो एक-दूसरे से मिले हुए बिछे होंगे और जोड़ा कर देंगे हम उनको उन औरतों (हूरईन) के साथ जिनका रग गोरा और आंखे कुशादा [खुली हुई बड़ी] हैं। और वह लोग जो खुदा और रसूल का ईमान लाये, और पैरवी की उनकी, उनकी सन्तान ने ईमान के कामों में। रोज़े मीसाक [आरम्भ के दिन] में हम उनके साथ उनकी सन्तान को स्वर्ग में मिला देंगे या उनके दर्जों [पदों] पर पहुँचने में। अर्थात—यदि उनके बाप-दादों के दर्जे बुलन्द होगे तो उनकी औलाद के दर्जे भी हम बुलन्द [ऊँचे] कर देंगे [यह न्याय हो रहा है ?]

ताकि पिताओं [बापों] की आंखें सन्तान के दीदार (देखने) से रोशन [प्रकाशमान] हो, और हम सन्तान को बापों के साथ मिला देने के कारण उनके नेक कामो में कोई वस्तु, अर्थात- सन्तान को हम उनके बापों के दर्जे तक पहुँचा देंगे, मां-बाप का सवाब(पुण्य) बिना कम किये, बल्कि हम [खुदा] अपने फ़ज़लोकरम [कृपा और क्षमा] से सन्तान के रुतबे [पद] में हम बुलन्दी (श्रेष्ठता) प्रदान करेंगे ।

आगे शैखुल इस्लाम के माध्यम से लिखा है कि ईमान और अमल विश्वास और पालन) दर्जात और दर्जात बहिश्त के लिये कारण नहीं......हर पुरूष आकिल और बालिग (बुद्धिमान और व्यस्क) उस वस्तु के साथ गिरवी [रहन] है, जो उसने की है, कयामत के दिन तक, अर्थात-- अपने कर्मों के फल के साथ बँधा हुआ है । उससे मुक्ति कठिन है......और हम मुत्तकियों (नेक लोगों) को अधिक देंगे । अर्थात--जो कुछ हम उनको दे चुके हैं, और अधिक देंगे जिस प्रकार के मेवे वह चाहेंगे । और उस गोश्त (माँस) को देंगे जिसे वह चाहेंगे । वह एक दूसरे को स्वर्ग की शराब से भरे हुए कासे (प्याले) लेंगे-देंगे, अर्थात-सभी को ऐसी शराब पिलायेंगे कि उसके पीने से लग्व (अन्ट-शन्ट) बकेंगे, न झगड़ेगें । और न गुनहगार होंगे......और उनके गिर्द (आस-पास) सेवा के लिए (गिलमान) गुलाम फिरेंगे जो उनकी सेवा करने वाले हैं । लड़को की सूरत पर उत्पन्न किय गये, गोया कि वह सफाई और लताफ़त (स्वच्छता सुन्दरता) में मोती हैं सीपी में छुपे हुए कि उन तक किसी का हाथ नहीं पहूँचा । (यह बात व्याख्याकार ने रहस्य की कही है ।)

तिबयान में है कि मुशरिकों के लड़के बहिश्तियों के गुलाम होंगे और लड़कियाँ हूरेइन, और मोमिनों की सन्तान अपने बापों के साथ उसी हैअत (आकृति) पर होगी, जिस प्रकार दुनिया में

थी। (क्यों श्रीमान ! दुनिया में तो सन्ताने एक स्थिति में नहीं रह पाती हैं, क्यों कि जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक स्थितियाँ परिवर्तित होती हैं। न जाने लेखक का तात्पर्य किस उम्र या स्थिति से सम्बन्ध रखता है ?) और आपस में हाल और एमाल पूछते होंगे। और हम कहेंगे इस बात में सर्व-प्रथम डरने वालों में से हैं।

तफसीर कादरी पृष्ठ ४७३-७४ भाग, २

तफसीर मज़हरी पारा २७, पृष्ठ ९७ पर है, कि बहिश्त में दस हजार गुलाम होंगे।

और दुसरी रवायत (कथन) में है, कि छोटे दर्जे वाले के पास पाँच हजार गुलाम होंगे।

तफसीर हक्कानी, पारा २७, पृष्ठ ७ पर सूरत तूर की इन्ही आयतों की व्याख्या में लिखा है कि कुलवशरबू हनीआ की तफसीर में लिखा है,(कि खाना-पीना) बिना मुशक्कत, बिना रञ्ज, बिना खटके, न मर्ज का खटका, न पकाने और कमा कर लाने का दगदगा (झन्झट) न कम होने की फिक्र।

फिर आगे इसी पृष्ठ (७) पर लिखा कि मोमिन स्वर्ग में जाकर अपने माँ-बाप, पत्नि और सन्तान को दरियाफ़्त (मालुम) करेगा। उसको कहा जायेगा कि वह तेरे दर्जे (श्रेणी) तक नहीं पहुँचे हैं। वह प्रार्थना करेगा, इलाही (ऐ खुदा) मैंने अपने लिये और उनके लिये अमल किया था। तब आज्ञा होगी उनको भी साथ मिलादो। (तफसीर हक्कानी, पृष्ठ ७) (जन्नत क्या है ? और खुदा क्या है ? मुसलमानों की ज़र खरीद है, जो चाहे खुदा को मनवालें)।

इसी प्रकार सूरत रहमान में भी स्वर्ग का अत्याधिक विस्तृत वर्णन है, उसकी भी अरबी न लिखते हुए तफसीर से व्याख्या

लिख रहे हैं, यह व्याख्या आयत ४६ लिमन ख़ाफ़ा से आयत ७५ **अबकरिय्यिन सूरतुर्रहमान** तक है। व्याख्या निम्न प्रकार है:-

लिमन खाफ़ा मकामा रब्बे ही जन्नतान् (सूरतुर्रहमान)

नज़लत हाजेहिल आयत फी अबी बकरूस्सद्दीक।

तफसीर मज़हरी, पृष्ठ १५६

यह आयत हज़रत अबा बकर के विषय में नाज़िल हुई।

जो खुदा के सम्मुख खड़ा होने से डरता है, उसके लिये दो स्वर्ग है--जन्नते अदन और जन्नते नईम......... ...और मौज़ह में है, कि स्वर्ग मे उनको दो बाग देगे, उनमें से प्रत्येक एक सौ वर्ष मार्ग की भाँति लम्बा और इतना ही चौड़ा होगा. और हर बाग में खूब मकानात और मेवे मरग़ूब (स्वादिष्ट) और सुन्दर हूरे होंगी... ... ... एक स्वर्ग खाईफ़ (डरने वाले) के लिये और एक उसके दासों और सम्बन्धियों के लिये। दो बाग शाखों वाले हैं, अर्थात—उनमें बहुत वृक्ष होगे और प्रत्येक वृक्ष में भाँवि-भांति के मेवे। उन दोनों बागों में दो चश्में हैं, कि हर जगह बहते हैं, जहाँ चाहे ऊँचे मकानों पर या नीचे स्थानों पर, एक तस्नीम (चश्में का नाम) है, एक सलस्बील (चश्में का नाम)

मुआलम में है कि एक स्वच्छ पानी का चश्मा है, और एक स्वादिष्ट शराब का। इन दोनों बागों के वृक्षों में हर मेवे से दो किस्म है- एक तो पहिचाना हुआ दुनिया में देखा हुआ होगा और दुसरा आश्चर्यजनक कि न किसी ने देखा हो और न सुना हो। डरने वाले (अल्लाह से) लोग उन स्वर्गों में बिछोनों पर तकिया करने वाले होंगे, जिनका कि लिहाफ रेशमी मजबूत कपड़े का होगा।

एक बुजुर्ग से पूछा, कि इन बिछोनों का लिहाफ़ तो ऐसे बढ़िया रेशम का होगा, तो अबरा (ऊपर का वस्त्र) कैसा होगा?

फरमाया--कि नूर (प्रकाश) से बना हुआ । बुज़ुर्ग ने भी खूब उत्तर दिया । एक दूसरे बुज़ुर्ग ने फरमाया कि उसका अबगा इस आयत में दाखिल है:—फ़ला तालमो नफ़सुम्मा उखफ़िया लहुम ।

कुरआन पारा २१, सूरत सजदा, रकू २.१५

अर्थात-पस, उनके लिये क्या नफ्स (व्यक्ति) छुपाया गया है, यह कोई नहीं जानता । (यह बुज़ुर्ग अच्छे रहे, गप्प नहीं मारी और सीधा कह दिया कि कोई नहीं जानता अर्थात केवल खुदा जानता है ।)

और उन दोनों स्वर्गों के वृक्षों के मेवे समीप हैं, कि खड़े- बैठे और लेटे हुए का हाथ उन पर पहूंचता है ।

और बाजों(अन्यान्यो)ने कहा है, कि जो व्यक्ति फर्श पर तकिया लगाए बैठा होगा और मेवे की इच्छा करेगा, तो वृक्ष की शाखा झुक आयेगी, और जिस मेवे की इच्छा है वह उसके मुँह में आ जाएगा । (स्वर्ग के वृक्ष भी हृदय की बात जान लेते है ।) उन दोनों स्वर्गो के प्रासादों मे आँखों को बन्द रखने वालियां हैं, अर्थात हूरें अपने पतियों के अतिरिक्त और को देखने से अपनी आंखे बन्द रखेगीं । (क्या स्वर्ग मे भी दीदारबाजी का भय है ?) और उनके पहले न मनुष्यों ने छुआ होगा स्वर्ग में उनकी अजवाज़ (स्त्रियाँ) के पूर्व और न जिन्नों ने, अर्थात-जो हूरें मनुष्यों के लिए निश्चित है, उनके दामन तक किसी व्यक्ति का हाथ न पहूंचा होगा और जो हुरें जिन्नों के लिए निश्चित है, उन पर किसी जिन्न ने अधिकार न किया होगा ।

और बावर (विश्वास) नहीं करते कि वह हुरें उत्पन्न हुई हैं सफाई और सुर्खी में याकुत (लाल जवाहर) से, और सफेदी

और चमक में पाकीज़ा मोती से, और विश्वास नहीं करते क्या जज़ा (फल) अमल में नेकी करने की होती है, किन्तु नेकी करना सवाब में या जो कोई 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहे और मुहम्मद रूसूलिल्लाह के अवामर (आज्ञाओं) और नवाही (निषेद्ध) पर आचरण करे। उसकी जज़ा (बदला) स्वर्ग है।

और इसका सार यह है, कि नेकी का जज़ा (फल) नेकी है, और आज्ञाकारी का फल दर्जात (ऊचे पद) हैं, और शुक्र (आभार) का बदला नियामत (पद या पदार्थो की देन) की अधिकता और तकवा (संतोष) की फरहत (उत्कृष्टता), और तौबा (पाप से फिरना या क्षमा माँगना) की स्वीकृति, और दुआ (प्रार्थना) की अजाबत (स्वीकारी), और सवाल (माँग) की अता (प्रदान) और इस्तिग़फार (अपराधों की क्षमा याचना) का मगफ़रत (पाप की क्षमा), और दुनियाँ में ख़ौफ़ (भय) का अमने आखिरत, और खिदमत (सेवा) का बदला सल्तनत (शासन) फल है।

और इन दो स्वर्गों के अतिरिक्त जो वर्णित हुई या उनसे कमतर (न्यून) दो स्वर्ग और हैं। बाज़ों (कुछ एक) ने कहा है, कि दो स्वर्ग जिनका वर्णन पहले हो चुका है, साबको (स्वर्ग में प्रथम जाने वाले) के लिये सोने के हैं और यह दो स्वर्ग चाँदी के हैं, असहाबे यमीन (दाहिने ओर वाले) के लिये हैं।

दो स्वर्ग (हरियाली) तेज होने से स्याही (श्यामला) मारते हैं। इन दो स्वर्गों में दो चश्में होंगे, खूब जोश मारते होंगे। दोनों स्वर्गों में मेवा बहुत होगा और खुरमा व अनार के पेड़ होंगे।

इन चारों स्वर्गों में सुन्दर स्त्रियां भी होंगी, जो सदाचा-चारिणी होंगी। खेमों में छुपी हुई हूरें हैं, जो तराशे और खाली किये हुए मोतियों के हैं। उनके पतियों से पूर्व उनको किसी व्यक्ति

ने न छुआ होगा, जिनके साथ वह सम्बन्धित हुई और न जिन्न ने उनको हाथ लगाया है। **'असहाबुल यमीन'** तकियां लगाये होंगे सब्ज तकियों और अत्याधिक मूल्यवान बिछोनों पर।

तफसीर कादरी, पृष्ठ ४९६-९७

तफसीर हक्कानी में हूर के विषय में लिखा है, कि उन बागों में खेमें होंगे, जिनमें हूरें पर्दे में होगी। (हूर के लिये) जमहूर के नज़दीक वह (हूर) एक नई प्रकार की स्त्रियाँ होंगी, जो खुदा ने स्वर्ग में उत्पन्न की हैं। तफसीर हक्कानी, पृष्ठ ४५

सूरत वाकिआ में भी स्वर्ग का उल्लेख है। सूरत रहमान और सूरत वाकिआ में यह अन्तर है, कि सूरत रहमान में खास गिरोहों (समुदाय विशेष) का और सूरत वाकिआ में आम (साधारण) का उल्लेख है। अतः आयत १३ **'अलासुरो रिम्मोजूनतिन** से प्रारम्भ कर **आयत ४० 'सुल्लातुम्मिनल आख़ेरीन'** तक की तफसीर की व्याख्या :-

हजरत बरीदा की हदीस में वर्णन है, कि जन्नतियों की १२० सफ़े (पक्तियाँ) होंगी। (हजरत मुहम्मद ने कहा) उसमें ८० सफ़े मेरी उम्मत (अनुयाईयों) की होगी और शेष ४० सफ़े और समस्त उम्मतों की होंगी।

तफसीर कादरी, पृष्ठ ४९८

काला काल रसूलिल्लाहे सल्लअम अहललजन्नते इशरून व मे अता सफ्फन समानून मिन हाजेहिल उम्मते व अरबऊन मिन सायरिल उममें। तफसीर मज़हरी पृष्ठ १९८

अर्थात- रसूलिल्लाह ने फरमाया कि स्वर्ग में जाने वाली कुल १२० सफ़े होंगी, उसमें ८० सफ़े मेरी उम्मत की और ४० सफ़े सब उम्मतों की होंगी।

'**अला सुरू रीम्मौजूनतन**' सोने के तारों से बने हुए तख्तों और छप्पर पलंगों पर आमने-सामने बैठे होंगे तकिया लगाये हुए। उनके पास' **विलदानुम्म् खल्लदून्**' लड़के, कि जिनका लड़कपन हमेशा रहेगा जो बड़ी आयु वाला हो और उसकी सूरत में अन्तर न आये, उसे '**मुखल्लद**' कहते हैं। अर्थात--वह लड़के सदा हुस्नोजमाल के साथ रहेंगे।

सईद बिन जुबैर कहते हैं, कि वह (लड़के) कानों में बाला पहिने हुए होंगे। वे लड़के काफिरों और मुशरिकों की छोटी सन्तान होगी, जो नाबालिगी (अल्प आयु) में मर गए और सम्भव है कि हूरों की तरह वह भी एक नई मखलूक हो, दुनिया के लड़के न हो। खिदमत के लिये लड़कों का वस्तुएँ लाना, ले जाना केवल हुस्न के कारण से नहीं बल्कि उनकी फुर्ती और बाले पहिने के साथ हँसने-बोलने में अजब लुत्फ (आनन्द) देता है। उनके पास प्याले और आबखोरे, रकाबियां और तश्तरियां, लोटे और आफताबे अर्थात चमकते हुए दस्तादार बर्तन (मूठवाले पात्र) और जाम, जिनमें सोने का काम किया होगा (कास········ !) लायें, ले जायेंगे, फिर उन बर्तनों में क्या होगा सर्व-प्रथम जाम की वस्तु बतलाता हूं, जिसके पीने से शरूर हो, वह क्या है? **मुईन**– साफ शफाफ पानी या कोई स्वर्ग का अर्क या कोई विशेष वहां की साखत (बनावट) की शराब, जो किसी बर्तन में से न उंडेली जाएगी, बल्कि उसका चश्मा वहां जारी होगा। जिससे न सिर में दर्द और न खुमार होगा, न बेहोशी होगी·········और बर्तनों में क्या होगा ? '**व फाकेहतिम्मिम्मा यतखय्यरून**' वह श्रेष्ठ मेवे कि जिनको वह पसन्द करेंगे। '**व लहमे तैरिम्मिम्मा यशतहून**' और उन पक्षियों का मांस, कि जिनको खाना चाहेंगे। पक्षियों का मांस भी मजेदार होता है। फिर उनमें से भी वो, जो उनको रूचिकर हो। यह तो खाने-पीने का सामान था,

परन्तु उसकी ज़ीनत और जान हुसीन (रूपवान) स्त्रियों से होती है। (उचित ही है, कि जहां शराब और कबाब हो, वहां शबाब (स्त्रियों) का होना तो अनिवार्य ही है, और फिर स्त्रियां भी कैसी ?) **'व हूरून इनुन कअमसालिल लोलु उलमकनून'** अर्थात-हूरें गोरे रंग वालियां, बड़ी-बड़ी आंखों वाली, जैसे सीप के अन्दर मोती, न कोई एब होगा, न किसी के खर्च (प्रयोग) में आई होगी, जैसे सीप का मोती किसी के काम में आया हुआ नहीं होता..... यह बदला होगा सांसारिक नेक कामों का उन समस्त विशेषताओं के साथ। दुख और कष्ट का न होना भी बड़ी खूबी है। इसलिए फरमाया है:—

' ला यस्मऊना फीहा लग़व ' वहां कोई बेहूदा और कष्ट-दायक बात सुनने में नहीं आएगी। केवल सलाम कहना और जो दिल को खुश करने वाली बात हो।

दुसरे गिरोह असहाबे यमीन की चर्चा है, कि उनके लिए स्वर्ग में यह नियामतें हैं — **'फ़ी सिदरिम्मख़जूद'** बागात होंगे, जिनमें कुछ यह वृक्ष होंगे—बेरी, बिना काँटे की शाखें झुकी हुई, जो फलों के बोझ से झुक पड़ी है। (कुछ व्याख्याकारों ने बेरी को केला भी कहा है।) और इनके अतिरिक्त बड़े-बड़े सायादार वृक्ष होंगे।

'व ज़िल्लिम्ममदूदिन् व माइम्मसकूब' और स्थान-स्थान से पानी ऊपर से नीचे गिरता होगा और **'फाकिहतिन कसीरतिन'** बहुत से मेवे (**ला मकतूअतिन**) कतान होंगे, अर्थात—किसी समय समाप्त न होंगे। **'व ला ममनूअतिन'** मना नहीं होगा जहां से किसी का दिल चाहे खाये **'व फुरूशिम्मर्फूअतिन'** फर्श ऊँचे तख्तों पर बिछे होंगे। कुछ व्याख्याकारों ने कहा है, कि फर्श से तात्पर्य स्त्रियां है, यह पुरूषों के तले बिछती है। (क्या खूब ! बहुत दूर

की सूझो) 'इन्ना अनशानाहुन्ना' और हमने (खुदा ने) उनको पैदा किया है और अजब उठान उठाया हैं, कि उनको अबकारा (क्वारियां) बना दिया। इससे पूर्व उनको किसी ने हाथ न लगाया होगा और इस क्वांरेपन के कारण ऐसी न होगी कि उनको पुरूष से घृणा या विद्रोह हो, अर्थात—दिल लुभाने वाली प्रेम करने वाली, प्यार और कटाक्षों से मन को आकर्षित करने, वाली होंगी, और समान आयु वाली होंगी।

तफसीर हक्कानी, सूरत वाकिआ, पारा २७

तफ़सीर मज़हरी (अरबी) पारा २७, पृष्ठ १६९ में है, कि हज़रत ने फरमाया कि स्वर्ग में ऊँट के समान लम्बी गर्दन वाला एक जानवर होगा जो दस्तरखान पर आ जाएगा। उसको आग और धुँवा असर न करेगा (पकाने का साधन भी खुदा ने कर रखा है)।

अब हम इसकी क्या आलोचना करें। इसकी आलोचना करना तो आलोचना की भी अवहेलना है। यह है कुरआन के बहिश्त (स्वर्ग) का नमूना ! अब आप इस स्वर्ग में पहुँचने का दृश्य भी देखें। स्वर्ग में जाने के लिये जिस पुल को पार करना पड़ता है, उसको पुल सिरात कहते हैं।

असा रब्बोकुम् अय्यु कफिरा अनकुम सय्ये आतेकुम व युदखिलकुम जन्नातिन तजरी मिन तहतेहल् अनहारो यौमा ला युखाजल्लाहुन्नबिय्या वल्लाजीना आमनू मअहू नूर हुम यस्आ बैना ऐदीहीम व बऐमानेहिम यकूलूना रब्बना अतमिम लना नूरना वगिफर लना इन्नका अला कुल्ले शयईन कदीर।

कुरआन पारा, सूरत तहरीम, रकू २/२०

अर्थात—जब तुम तौबा करो, तो शायद तुम्हारा रब्ब यह कि मिटा दे तुम से तुम्हारे गुनाह और तुमको स्वर्गों में प्रविष्ट

करे। उसके वृक्षों और मुहल्लों के नीचे से नहरें सदैव बहती हैं, और स्वर्गो में प्रविष्ट करना कब होगा ? उस दिन जब खजल (शर्मिन्दा) न करेगा अल्लाह पेगम्बर (हज़रत मुहम्मद) को, अर्थात— न उनकी ज़ात पर अज़ाब करेगा, और न पापियों के बाब (सम्बन्ध) में उनकी शफ़ायत (सिफारिश) रद्द फरमाएगा, और रुसवा (ज़लील) न करेगा उन लोगों को जो भी रसूल के साथ ईमान लाए हैं, अर्थात—उनकी सिफारिश भी उनके मित्रों के विषय में स्वीकार फरमाएगा। उनका नूर (जो खुदा ने उन्हें प्रदान किया है) दौड़ता और चलना होगा उनके आगे, और उनके दहने पर उस समय जब सिरात (पुल) पर गुज़रेंगे, और उस समय मुनाफिकों का नूर बुझ जाएगा। मोमिन कहेंगे—कि ऐ मेरे रब्ब ! हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर दे ताकि हम सिरात (पुल) पर से सहीह सलामत गुज़र जाएं और हमको बख्श दे, अर्थात— गुनाह की तारीकी (अंधकार) से पाक (पवित्र) कर दे। निःसन्देह, तू समस्त वस्तुओं पर नूर पूरा करने और अपराध क्षमा करने पर भी कादिर (समर्थ) है।

तफसीर कादरी, सूरत तहरीम पृष्ठ ५५६

यहाँ पर स्पष्ट लिखा है, कि खुदा हज़रत मुहम्मद की तथा अन्य मुसलमानों की सिफारिश भी स्वीकार करेगा और उनको नूर देगा। जिसके प्रकाश में वह दोज़ख (नर्क) का पुल, जिसका नाम सिरात पुल है, उसे सुविधा से पार कर जाएंगे। उस पुल का उल्लेख कुरआन में इस प्रकार आता है:—

व इम्मिनकुम इल्ला वारिदुहा काना अला रब्बेका हत्‌मम्म मक्ज़िय्या सुम्मा नुनज्जिल्ला जीनत्तकव्वा नज़रज्ज़ाले मीना फीहा जिसिय्या। कुरआन पारा १६, सूरत मर्यम, रकू ५/८

अर्थात— और नहीं कोई तुम व्यक्तियों में से मगर पहुँचने वाला और गुज़र करने वाला दोज़ख पर, लेकिन जब मोमिन दोज़ख पर गुज़रेंगे तो आग बुझ जाएगी और ठंडी हो जाएगी।

इसलिए कि हदीस में आया है, कि कतिपय (कुछ एक) जन्नती लोग एक-दुसरे से पूछेंगे— कि क्या हक तआला ने हमसे वायदा न किया था, कि तुम सब दोजख पर गुज़रोगे, तो क्या माजरा है कि हमने तो आग देखी ही नहीं। फ़रिश्तें कहेगे—कि तुमने तो दोज़ख पर गुज़र किया किन्तु उसकी आग तुम्हारे ईमान के नूर से बुझ गई है। दोज़ख पर गुज़रना तेरे रब्ब पर आवश्यक और निश्चित काम, हुक्म किया हुआ है, अर्थात--ऐसा वायदा है कि अवश्य पूरा होगा और कभी न टलेगा।

कुछ मुफ़स्सिर (व्याख्याकार) इस बात पर गये कि (यहां) वरूद दखूल (प्रविष्ट होने) के अर्थ में है। अत: हज़रत जाबर बिन अब्दुल्लाह ने हज़रत मुहम्मद से रवायत की है, कि **वरूद दाखिल होना है**। अर्थात सबको नर्क में उपस्थित करेंगे, कोई भला और बुरा ऐसा न होगा, जो नर्क में उपस्थित न हो, परन्तु ईमानवालों पर आग बुझ जाएगी, जिस प्रकार हज़रत इब्राहीम पर बुझ गई थी, और इसी बात का समर्थन खुदा का यह कथन करता है:—

फिर हम उन्हें नज़ात (मुक्ति) देंगे, जिन्होंने शिर्क से परहेज़ किया, अर्थात--उन्हें नर्क से निकाल लेंगे और ज़ालिमों को घुटने के बल पर गिरे हुए आग में छोड़ देंगे।

तफसोर कादरी, पृष्ठ २२-२३, भाग २

इस आयत के विषय में तफसीर जलालैन में लिखा है कि :— "**वारिदुहा**" **ए दाखिले जहन्नमा**, अर्थात--वारिदुहा का अर्थ नर्क में प्रवेश होना है। फिर हाशिये पर इस प्रकार है—ऐ **मामिनकुम**

अहदन ऐ मुस्लिमन काना औ काफ़िरन' अर्थात मुसलमान हो या काफ़िर, 'व फिल् मदारके अलवरून्दद्दखूलो' अर्थात--वरूद का अर्थ दाखिल होना है। 'इन्दा अलय्युन वा इब्ने अब्बास अनहुमा वा अलैहे जमहूर अहलस्सुन्नत' अर्थात--हज़रत अली और इब्ने अब्बास दोनों से तमाम अहले सुन्नत की ओर से (मुत्तफिक अलैह) 'फ़ऊरदा हुमुन्नार' अर्थात--वह सब नर्क में दाखिल होंगे, और इस पर अगली आज्ञा दलालत करती है :-

'सुम्मा नुनज्जिलजीनत्तकू अविन्नजाते इन्नमा यकूना यकूनो वादद्दखूले' अर्थात—हम निसन्देह प्रवेश के पश्चात नजात देंगे। 'वा लिकौलेही अलैहिस्सलाम्' अर्थात:-और रसूलिल्लाह का वचन है। 'अलवरूदद्दखूलो लायब्का बर्रुन व ला फ़ाजिरन इल्ला दख़लहा' अर्थात--दाखिल होगा दोजख में, नहीं बाकी रहेगा कोई परहेज़गार (संयमी) और फ़ाजिर (पापी) किन्तु वह दाखिल होगा दोज़ख में (फिर दोज़ख) 'फतकूना अअल मोमिनीन् बरदव्व सलामन कमा कान्त अला अब्राहीम' अर्थात—पस, वह दोजख सलामती (सुरक्षित) गली और ठण्डी हो जाएगी, जैसे कि हज़रत इब्राहीम पर हो गई थी।

तफसीर जलालैन, पृष्ठ २५८

तफसीर बैज़ावी ने भी जावर की हदीस की रवायत पर लिखा है, कि मुसलमान आपस में कहेंगे, कि हमारे साथ दोज़ख जाने का वायदा था, हम तो गये ही नहीं"""" इत्यादि।

तफसीर बैज़ावी, पृष्ठ २०४

इसी प्रकार तफसीर कुरानुलअजीम में भी है, कि 'ए मा [मिनकुम] अहदन (इल्ला और दहा) ए दाखिले जहन्नमा' अर्थात—तुम में से प्रत्येक नर्क में प्रविष्ट होगा।

प्रत्येक के नर्क में जाने की यह कथा है, जो हम लिख रहे थे। हज़रत मुहम्मद और अन्य मुसलमान की शफ़ाअत खुदा स्वीकार करेगा। आगे स्वर्ग के विषय में जो सूरत दहर में लिखा है। उसे हम तफसीर मज़हरी से लिखते हैं। मूल अरबी और उसकी व्याख्या दोनो ही प्रस्तुत हैं। **आयत ११ जन्नतन व हरीरन से आयत २१ शराबन तहूरा, सूरत दहर, पारा २९ रकू १/१९** तक पढ़िए:—

'**जन्नतंव्व हरीरा**' जन्नत (स्वर्ग) जिसमें वह दाखिल होंगे, और रेशमी लिबास (पोसाख) जो उनको पहिनाया जाएगा।

'**मुत्तकेईना फ़ीहा अलल् अराएके**'

अर्थात—जन्नत के अन्दर मसहरियों पर वह तकिया लगाये होंगे। अराएक- छत्री और पर्दे लगे हों तो वह पलग 'अराएक' कहाता है। '**ला यरौना फ़ीहा शम्संव्व ला ज़महरीरा**'

अर्थात— जन्नत में न गर्मी होगी न सर्दी होगी।

अब्दुल्लाह बिन अहमद तथा इब्ने मसऊद ने बयान किया- न उसमें सर्दी है, न गर्मी, अथवा ज़महरीर से तात्पर्य चाँद या चमकते सितारे, तब यह अर्थ होगा कि स्वर्ग स्वयं खुदा के नूर (प्रकाश) से रोशन है। (स्वर्ग में विद्युत (बिजली) का काम खुदा का नूर देगा। यदि उस समय, जब हज़रत मुहम्मद थे, बिजली होती तो निश्चित ही स्वर्ग के लिये बिजली का उल्लेख होता, परन्तु खुदा को क्या पता था कि आगे चल कर प्रकाश हेतु बिजली का भी आविष्कार हो जाएगा? न उसको सूर्य की आवश्यकता है और न चन्द्रमा की, '**दानियतन**' अर्थात- अल्लाह एक स्वर्ग और प्रदान करेगा, जिसके साये निकट होंगे। (गोया दो स्वर्ग दिये जाएँगे)

'अलैहिम जला लहा' अर्थात- उनसे स्वर्ग के साये समीप होंगे। **'व जुल्लेलत कुतूफुहा तजलीला'** अर्थात:-- स्वर्ग के फल बड़े सहलुल हसूल (बिना परिश्रम के प्राप्य) जन्नत वाले जैसे चाहेंगे, तोड़ेंगे। खड़े होकर, बैठ कर, लेट कर (पूर्व में लिख चुके हैं कि स्वर्ग-निवासी जिस फल की इच्छा करेंगे, वह स्वयं उनके मुंह में आ जाता था।) **'व युताफ़ो अलैहिम बे आनियतिम्मिन फ़िज्जतिव्व अकवाबिन कानत कवारीरन'** अर्थात— अकवाब यानी बिना दस्ते (मूठ) के आफताबे अर्थात वह कूजे बने हुए हैं और क्लोरे के समान है, वह चाँदी के बर्तन, जिनकी सफाई शीशे की तरह है।

हज़रत इब्ने अब्बास ने फरमाया कि स्वर्ग में कोई वस्तु ऐसी नहीं, कि तुमको संसार में उसके मशाबह (सदृश्य) वस्तु न दी गई हो।

कल्बी का कथन है, कि अल्लाह ने हर कौम के बिल्लौरी बर्तन उन्हीं के मुल्क (देश) की मिट्टी से उत्पन्न किये और स्वर्ग की धरती चाँदी की है, इसलिए वहाँ चांदी के बिल्लौरी बर्तन होंगे। जिनसे स्वर्ग वाले पीयेंगे **'कद्दरूहा तक्दीरन'** अर्थात-स्वर्ग में रहने वालों की सैराबी (सन्तुष्टि) के अंदाजे (परिणाम) के समान पिलाने वाले खादिम (सेवक) गिलमान (सुन्दर लड़के) कूज़ों की मिकदार (अनुमान) मुकर्रर (निश्चित) कर लेंगे। न कम न अधिक।

हनाद ने मुजाहद का कथन उद्धृत किया है, कि **'तकदीरे अकवाब'** का यह अर्थ है कि, स्वर्ग वाले स्वयं अपने दिलों में अंदाजा निश्चित कर लेंगे और उनके अनुमान के अनुसार कूज़े (मिट्टी के बर्तन) उनके सम्मुख आयेंगे अथवा यह कि नेक एमाल (शुभ कर्म) के अंदाजे के मुआफिक उनको कूजे मिलेंगे (यह ठीक

है, कि कर्मों के अनुसार कूज़ों पर कन्ट्रोल रहेगा। मानते हैं खुदा की व्यवस्था भी)

'व युस्कूना फ़ीहा कासन काना मिजाजुहा जन्जबीला'

अर्थात: – और उसमें सौंठ की आमेज़श (मिलावट) वाली शराब के प्याले पिलाये जायेंगे।

सौठ की पुट दी गई शराब अरब के ज़ौक (शोक) के लिए बहुत लज़ीज (स्वादिष्ट) होती थी। अल्लाह ने भी उन्हीं के ज़ौक के एतबार से वादा फरमाया (और भी स्वर्ग में जो हैं, वह अरबों की इच्छा नुसार ही है)

किसी एक का कथन है, कि **'जन्जबील'** स्वर्ग का एक चश्मा है। जिसके पानी में सौंठ का मज़ा होगा। शराब में विभिन्नता पीने वालों के स्वभाव को लक्ष्य में रख कर होगी। गर्म स्वभाव वालों के लिये काफूर (कपूर) की मिलावट (पुट) वाली शराब रुचिकर होती है और सर्द स्वभाव वालों के लिये सौंठ की मिलौनी वाली शराब। इस कारण शराब में विभिन्नता है।

ऐनन फीहा तुसम्मा सलसबीला, अर्थात--(स्वर्ग में सलसबील नामक चश्मे का नाम सलसबील है, जो आसानी से गले में उत्तर जाये और खुशगवार हो।

मकातल और अबू आलिया ने कहा है, कि वह चश्मा स्वर्ग में रहने वालों के मार्ग में और उनके घरों में बहता रहेगा। अर्श (अल्लाह का सिहासन) के नीचे से अदन (नाम है) के स्वर्ग से फुट कर निकलेगा.... ....स्वर्ग की शराब मे काफूर की ठंडक सौंठ का स्वाद और कस्तूरी की सुगंध होगी।

'व यतूफो अलैहिम विल्दानुम्मु खलेदून' अर्थात --और उन पर हमेशा रहने वाले लड़के फिरेंगे, गिलमान, जिनको अल्लाह स्वर्ग के निवासियों की सेवा के लिये उत्पन्न करेगा या काफिरों के अल्प

आयु के बच्चे, जिनको स्वर्ग-निवासियों का सेवक बनाया गया है, न मरेंगे, न बूढे होंगे ।

'**इज़ा रएतहुम हसिब्तुम लोलो अम्मन शूरा**' अर्थातः-जिस समय तू उनको देखेगा, गुमान घमण्ड) करेगा तू उनको मोती बिखरे हुए । गिलमान स्वर्ग निवासियों की सेवा के हेतु बिखरे हुए होंगे और मोतियों के समान बिखरे हुए दिखाई देंगे ।

इब्ने मुबारिक और हनाद एवं बैहकी ने इब्ने उमर का कथन उद्धृत किया है, कि सबसे छोटे दर्जे (श्रेणी) का स्वर्ग-निवासी वह होगा, जिसकी सेवा में एक हजार सेवक लगे होंगे और हर सेवक का कार्य दूसरे सेवक से भिन्न होगा (शराब पीने, खाना खाने और विषयभोग करने के अतिरिक्त वहाँ और क्या कार्य होंगे, जो एक हजार सेवक करेंगे ? यह विचारणीय है ।)

इब्ने अबीदुनिया ने हज़रत अन्स की रवायत से बयान किया है, कि रसूलुल्लाह (हज़रत मुहम्मद) ने फरमाया कि सबसे कम दर्जा के स्वर्ग-निवासी के सिर के पीछे दस हजार सेवक (सेवा के हेतु) खड़े रहेंगे । (जितना मन चाहे उतनी संख्या लोगों को भ्रमित कर देने को लिख दी । क्योंकि कोई लेन-देन की बात तो है ही नहीं ? एक मियाँ के पीछे दस हजार सेवक ! अत्युक्ति की भी एक सीमा होती है । न जाने इन मुस्लिम व्याख्याकारों के मस्तिष्क कैसे थे, कि वह इतना भी नहीं समझ सकते थे कि यह दस हजार सेवक क्या करेंगे और पढ़ने वाले लोग यह पढ़कर हमें क्या कहेंगे ?) फिर अबीद्दुनिया ने दूसरी रवायत अबू हुरेरा से की है, पांच हजार सेवक होंगे और हर सेवक के पास ऐसा बर्तन होगा, जो दूसरे सेवक के पास न होगा । (क्या शान है ?)

हज़रत उमर ने हज़रत मुहम्मद को खजूर की एक चटाई पर सोते हुए देखा और हज़रत के शरीर पर उसके निशान पड़ गये, तो हज़रत उमर ने रोकर कसरा, हुर्मुज और हब्शा की

हुकूमतों का उल्लेख करते हुए कहा:- कि आप अल्लाह के रसूल होकर खजूर की शाखाओं (पत्तों) की चटाई पर विराजमान हैं। हज़रत ने फरमाया--क्या तुम इस बात पर संतुष्ट नहीं कि उनके लिये संसार है और हमारे लिये आखेरत (परलोक) है। इस पर निम्नलिखित आयत उतरी:—

व इज़ा रएता सुम्मा रऐता नईमव्व मुल्कन कबीरा।

अर्थात:—और जब देखेगा तू उस जगह, फिर देखेगा तू नियामत (वैभवता) और बादशाहत बड़ी।

हज़रत उमर की हदीस गुज़र चुकी है, कि कम मर्तबा (पद) वाला स्वर्ग-निवासी वह होगा, जो अपने बागात (उद्यानों) को, बीबीयों को, सेवकों को और तख्तों (मसहरियों) को हजार वर्ष (और एक अन्य रवायत मे है) दो हजार वर्षों की राह की मुसाफ़त (यात्रा) से देखेगा और उसको अपनी सीमा का अंतिम छोर इस प्रकार दृष्टिगोचर होगा, जिस प्रकार समीपस्थ भाग दिखाई देता है। **'मुल्कन कबीरा'** का अर्थ है स्थाई शासन। फरिश्ते आकर सलाम करेंगे और दर्शन की आज्ञा के प्रार्थी होंगे। स्वर्ग में स्वर्ग वालों को वह सब कुछ प्राप्त होगा, जो उनकी ईच्छा होगी। खुदा को भी देखेंगे।

'आलियाहुम सियाबो सुन्दुसिन खज़रूंव्वस्तबरकुन'

अर्थात:--उनके ऊपर लाही, सब्ज और तापते के वस्त्र होंगे। (महीन रेशमी और मोटी दरियाई के वस्त्र)

हज़रत उमर से रवायत है, कि एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद से स्वर्ग निवासियों के वस्त्रों के विषय में पूछा, तो रसूलिल्लाह ने फरमाया—(वह वस्त्र) ऐसी वस्तु है, जो स्वर्ग से फूट कर निकलेगी। वह स्वर्ग का एक फल है।

इसको (उक्त) निसाई, बज़ार और बैहकी ने मजबूत जय्यद सनद (दृढ़ विश्वस्त प्रमाण) के साथ कहा है।

हज़रत जाबर का कथन लिखा है, कि स्वर्ग के एक वृक्ष से सुन्दस उत्पन्न होगा। जिसमें स्वर्ग के निवासियों के वस्त्र तैयार होंगे।

इसको (उक्त) बज़ार, तिबरानी और अबू याली ने विश्वसनीय प्रमाण के साथ रवायत किया है। (किन्तु वस्त्र कौन बुनेगा ?)

'व हुल्लू असाविरा मिन फिज्ज़तिन'

अर्थात:— स्वर्ग--निबासियों को चांदी के कंगनों से आरास्ता किया जाएगा।

दुसरी आयत में सोने के कंगन पहिनाये जायेंगे। इन दोनों आयतों में मतभेद नहीं है। दोनों प्रकार के साथ पहिनाये जायेंगे। इन दोनों आयतों में मतभेद नहीं है। दोनों प्रकार के एक साथ पहिराये जायें या एक के बाद दुसरे प्रकार के पहिराये जाये या किसी को चांदी के और किसी को सोने के पहिराये जाये। यह भी सम्भव है कि असावरों (कंगनों) को सेवकों के समान स्थिति में बयान करार दिया जाये। उस समय सेवकों के कंगन चादी के होंगे और स्वर्ग-निवासियों के सोने के। चाँदी के कगनों के विषय में व्याख्याकार ने जितने हेर--फेर किये हैं)और एक कंगन चांदी का और दूसरा मोतियों का होगा।

अबुल शैख ने अल अज़मत काबे अहवार का कथन उद्धृत किया है, कि अल्लाह का एक फरिश्ता सृष्टि-उत्पत्ति के समय से ही स्वर्ग निवासियों के आभूषण बना रहा है तथा कयामत (प्रलय) आने तक बनाता रहेगा, और अहले जन्नत (स्वर्ग) का कोई एक आभूषण भी नमूदार (प्रत्यक्ष) हो जाये, तो सूर्य का प्रकाश (पर, गालिब आ जाए) जाता रहे। (क्या बात है ? गज़ब कर दिया।)

क्यों मोमाना ! जब खुदा के अतिरिक्त समस्त वस्तुए

नष्ट हो जायेगी, तो क्या यह आभूषण भी विनाश को प्राप्त होगे, तो फिर उस फरिश्ते की इतनी लम्बी मेहनत पर तो पानी फिर जाएगा, और यदि कहो कि प्रलय (कयामत) के दिन ऐसे आभूषण खुदा पुनः बना लेगा, तो फिर उस फरिश्ते की लाखों वर्षों की मेहनत का क्या मूल्य रहा ? खुदा तो वैसे भी बना लेता। (हे प्रभू ! तू ही ऐसे मिथ्यावादियों से अपने बन्दों को बचा।)

एक हदीस और

सहीहैन (बुखारी व मुस्लिम) में हज़रत अबू हुरेरा से रवायत है, कि रसूलुल्लाह ने फरमाया कि मोमिन के हाथ के आभूषण वहाँ तक पहुँचेंगे, जहां तक वज़ू का पानी पहुँचता है (या पहुँचेगा)।

(यह तो बड़ा सुन्दर रहेगा। मियाँजी की सारी बांह हो कँगनों से भर जायेगी, किन्तु मालाना ! सारी बांह पर चढ़े कँगन कैसे लगेंगे ? यह भी सोचा है कि नहीं ? हज़रत मुहम्मद ने अरब वालों को खुश करने के हेतु क्या-क्या रचना की है, और खूब भरमाया है खुदा के नाम पर।)

'व सक़ाहुम रब्बोहुम शराबन तहूरा।

अर्थात—और उनका रब्ब उनको पवित्र शराब पिलायेगा।

समस्त गन्दगियों से और हाथों के छूने से पाक (पवित्र) अबू कलावा और इब्राहीम का कथन (कौल) है, कि स्वर्ग की शराब स्वर्ग-निवासियों के शरीर में अपवित्र मुत्र (पेशाब) नहीं बन जायेगी, बल्कि पसीना बनेगी, जिसकी सुगन्ध कस्तूरी की तरह होगी। उसकी सूरत यह होगी कि पहले खाना दिया जाएगा, फिर शराब तहूर दी जायेगी। शराब पीने से उनके पेट पाक (स्वच्छ) हो जायेंगे (शराब से न होगे तो फिर किससे होगे ?)

और जो कुछ खाया होगा वह पसीना बन कर शरीर से शीघ्र खारिज हो जाएगा। जिसकी सुगन्ध शुद्ध कस्तूरी जैसी होगी। (पसीना आने के पश्चात) फिर खाने की ईच्छा और होगी।

(हाँ ठीक है, यह एक तसलसल [अनुवस्था क्रम] खाया, पसीना आया, फिर भूख लग गई, फिर खाया, फिर पसीना आया, फिर भूख लग गई इत्यादि, तो फिर स्वर्ग के निवासियो को और काम ही क्या है? किस प्रकार लोगों को असत्य आश्वासन दे देकर पथभ्रष्ट [गुमराह] कर दिया गया है। इन भ्रमित लोगों को इस अँधकार से कौन निकालेगा? जो इतनी गलत बातें भी नहीं समझ सकते।)

मकातल ने कहा—स्वर्ग के द्वार पर पानी का एक चश्मा है, जिसका नाम तहूर है। जो मनुष्य उसका पानी पियेगा, अल्लाह उसके दिल से हर तरह का कीना और हसद [कुटिलता और द्वेष] निकाल देगा।

[कीना और हसद रखने वाले भी क्या स्वर्ग में जायेंगे? और स्वर्ग में जाकर भी लोगों के दिल में कुटिलता और द्वेष रह जायगा, कि यह चश्मा ए तहूर स्वर्ग के द्वार पर बनाना पड़ा। क्या यही स्वर्ग और स्वर्ग के निवासी है? भगवान ही इन गुमराह कुनिन्दों के भ्रमजाल से लोगों को बचायें)

बैज़ावी ने कहा— कि इन वचनों से उत्तम है वह वचन कि जिसमें कहा गया है, कि यहाँ शराब की एक और विशेष किस्म की मुराद है [हां यहां शराब की बात है, फिर वचन उत्तम क्यों नहीं होगा जो दोनों बयान की गई किस्मों से उत्तम है। उसी को प्रदान करने की निस्बत खुदा ने अपनी ओर की है। [अर्थात स्वयँ खुदा शराब पिलायेगा] और उसी को तहूर फरमाया है, क्योंकि उसको पीने वाला समस्त हिस्सी लज्ज़तें [साँसारिक स्वादों] की ओर मीलना (झुकाव) और ग़ैरल्लाह

की रग़बत (इच्छा) से पाक हो जाता है (हां भाई ! शराब पीकर भी यह पद प्राप्त नहीं होगा तो फिर और किससे होगा।) और केवल दीदारे खुदा (खुदा के दर्शन) की ओर ध्यान करता है ..... ।

साहिब मदारक ने लिखा है, कि बाज [कुछ एक] का कौल है कि फ़रिश्ते अहले जन्नत को शराब पेश करेंगे, तो वह स्वीकार करने से मना कर देंगे और कहेंगे कि दरम्यानी वसाइल (मध्यवर्ती साधन) से तो हम चिरकाल से लेते ही रहे हैं । अब तो बराहे रास्त (सीधे) लेंगे। अचानक ग़ैब (अदृश्य) से बगैर हाथों की वसातत (सहायता) के प्याले मुँह से लग जायेंगे.....।

हज़रत अबू ने फरमाया–स्वर्ग निवासी मनुष्य शराब की इच्छा करेगा। शराब शीघ्र ही उसके हाथों में आ जायेगी। वह पी लेगा, पीने के पश्चात प्याला स्वयं लौट कर अपने स्थान पर चला जायेगा। (यह विज्ञान की पराकाष्ठा है।)

शैख याकूब करंवी ने फरमाया कि--'**साबकीन मकर्रबीन**' (अर्थात सर्वप्रथम समीपता प्राप्त करने वाले प्रथम समीपस्थ,को अर्श (खुदा के सिंहासन) के नीचे से बिना किसी मध्यवर्ती साधन के शराब प्राप्त होगी और दर्म्यानी दर्जा (मध्य श्रेणी) वालों को अबरार (फरिश्ते) देंगे। शेष स्वर्ग निवासियों को, अर्थातः--उन लोगों को जो पापों की क्षमा के पश्चात अथवा दण्ड भुगतने के पश्चात स्वर्ग में प्रविष्ट हुए होंगे, उन्हें गिलमान शराब पेश करेंगे ..... इत्यादि। (देखिए—खुदा के स्वर्ग में शराब वितरण की भी कैसी सुन्दर व्यवस्था है । ऐसा प्रबन्ध तो आधुनिक बार में भी नहीं होता है।) 'इन हाजा कान लकुमजज़ाअन' अर्थात- यह सुविधा तुम्हारे कर्मों के बदले हैं।

तफसीर मज़हरी के लेखक हज़रत अल्लामा काज़ी सना-उल्लाह उस्मानी मज़्ददी पानी पत्ती पृष्ठ २४१ से २४७ तक पारा

२६ **सूरत दहर**, इसमें जो आयत के अर्थ लिखे हैं, वह शाह रफी-उद्दीन के हैं और व्याख्या तफसीर मज़हरी से उद्धृत की गई है।

कुरआन के पाठकों को ज्ञात है कि कुरआन में शराब पीने पिलाने का बारम्बार उल्लेख होता है और कई विभिन्न प्रकार की शराब को प्रस्तुत कर तालिबान शराब (शराब का इच्छुक) का दिल आकर्षित किया गया है। देखिए:—

'युस्कौना मिर्रही कुम्मुख़तुम रहीक'

अर्थात—स्वर्ग की स्वच्छ सफेद पवित्र शराब मुहर की हुई।

व्याख्या:-अबरार (फरिश्ते) ही उसकी मुहर को खोलेंगे। इसके पूर्व कोई उनको हाथ न लगा सकेगा। तात्पर्य यह कि फरिश्तों को उनकी मख़सूस (विशेष) स्वच्छ सफेद पवित्र शराब पिलाई जायेगी। जिसकी मुहर (सील) वह स्वयं तोड़ेंगे। **'खिता-मुहु मिसकुन'** जिस पर मुहर लगी होगी वह (मिट्टी या मोम नहीं) मुश्क (कस्तूरी) होगा। इब्ने मसऊद ने फरमाया कि उसका अन्तिम घूंट मुश्क से मिला होगा।

'व फी जालिका' उसी शराब या राहत (की तलब) **'फल्यतना-फसिल्मतनः फिसूना'** और उस शराब में चाहिये कि रग़बत (इच्छा) करें। रग़बत करने वाले **'व मिज़ाजुहू मिन तस्नीम'** स्वर्ग की शराब में तस्नीम (चश्मा तस्नीम का पानी) की मिला-वट होगी।

बग़वी ने (कतादा के कौल की रोशनी में) लिखा है, कि तस्नीम वह शराब होगी, जो अबरार के कमरों और घरों में ऊपर से बरसेगी। मैं कहता हूं कि प्रत्यक्ष यह जान पड़ता है, कि अर्श के ऊपर से बरसेगी, क्योंकि स्वर्ग के ऊपर से बरसेगी, क्योंकि स्वर्ग के ऊपर अर्श छत के समान होगा।

यह भी कहा गया है कि ऊपर वायु में शराब रवां (चलती) होगी और स्वर्ग के निवासियों के बर्तनों में, उनको भरने के

परिमाण से गिरेगी। जब बर्तन भर जायेंगे, तो शराब की वर्षा रूक जाएगी।

जुहाक ने कहा-- तस्नीम एक शराब का नाम है। स्वर्ग के श्रेष्ठ शराबों में उसकी गणना है।

हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत इब्ने अब्बास ने फरमाया:- कि तस्नीम अहले कुर्ब (खुदा से विशेष सम्बन्धित) के लिये विशेष है। यह अहले कुर्ब मिलावट के बिना उसको पीएँगे और शेष स्वर्ग निवासियों के लिए उसमें मिलावट की जाएगी। (वाह रे मुसलमानों ! खुदा के बन्दों ! तुमने शराब की प्रशंसा और श्रेष्ठता हेतु सीमा का भी उल्लंघन कर दिया। शराब की नहरें चला दी, चश्में बना दिये और उस पर भी सतोष नहीं हुआ तो फिर वर्षा में भी शराब का बरसना बता कर लोगों को पथभ्रष्ट और भ्रमित कर दिया तथा उनको शराब में इतना तल्लीन कर दिया कि वह शराब के ही तालिब (इच्छुक) बनकर स्वर्ग में रहें। मुसलमानों ने नजात को मयखाना बना दिया।)

'ऐनैय्यशरबो बिहा' चश्मा है, कि उससे मुकर्रब (खुदा के उपासक) लोग पीते हैं। अर्थात:— उस शराब से लज्ज़तयाब होंगे (स्वाद प्राप्त करेंगे) ' **बिहल मुकर्बून** ' मुकर्रब लोग उससे पीएँगे। अर्थात—जो नबी है, या जिन्होंने उन नबियों के द्वारा कमाल प्राप्त किया है। (पीयेंगे)

तफसीर मज़हरी, पारा ३० सूरत ततफीफ पृ. ३४८ से ३५० तक

कुरआन में जो स्वर्ग के विषय में लिखा है, उसको हमने पूर्ण रूप से लिखा है, अतिरिक्त उन आयतों के जो बारम्बार छोटी-छोटी, जगह जगह पर आती है।

स्वर्ग का समस्त वर्णन पढ़ने से क्या कोई बुद्धिमान व्यक्ति इस बात पर विश्वास कर सकता है, कि यह स्वर्ग का वर्णन उस स्वर्ग का चित्र है, जो कि विश्वकर्ता, जगत पालक भगवान

द्वारा निर्मित एवं घोषित है । क्या ऐसी असम्भव और मिथ्या बातें भगवान (खुदा) लिख या कह सकता है ? क्या विलासिता, भोग, शराब व कवाब और भारी संख्या में हूरें तथा गिलमान आदि मुक्ति के साधन और माध्यम माने जा सकते हैं ?

ध्यानपूर्वक देखने से प्रत्येक बुद्धिजीवी मनुष्य इसी परिणाम पर पहुँचेगा कि यह मनघढ़न्त कथा-कहानियां अरब के शराबियों, सौंदर्य-प्रशंसकों तथा माँसखोरो को प्रभावित करके अपने मत (इस्लाम) में प्रविष्ट करने हेतु साधन मात्र थी, और इसके अतिरिक्त इनमें कोई सत्य--तथ्य या सार नहीं है । खुदा को क्या प्रयोजन कि वह इस प्रकार के मिथ्या प्रलोभन देकर मनुष्यों को गुमराह करे। पाठकगण स्वयं विचार करें कि क्या ऐसी निस्सार बातें खुदा का कलाम (कथन) हो सकती है ? पस, समझो और इस भोगवाद से बचो और अन्यों को बचाओ।

इस पुस्तक में हमने कुरआन से जो कुछ लिखा और इसके अतिरिक्त जो हदीसों में है, उसको क्रमबद्ध मिर्जा हैरत देहलवी ने अपनी तफसीर **मुकद्दमाए तफसीरूल फुरकान'** में लिखा है। उसे इस पुस्तक के उपसहार के रूप में हम दे रहे हैं, ताकि पाठकों को यह लाभ हो कि स्वर्ग सम्बन्धी पूर्ण विवरण सिल-सिलेवार पढ़ने को मिल जायेगा।

मिर्जा हैरत देहलवी कृत-
मुकद्दमाए तफसीरूल फुरकान में स्वर्ग का वर्णन

आप लिखते हैं:—

हम मुनासिब (उचित) समझते हैं, कि कुरआन मजीद और अहदीस में जन्नत (स्वर्ग) और उसकी नियामतों का जो बयान हुआ है, उसका इख्तेसार (संक्षेप) कर दें।

इस जन्नत के हाल पर नज़र कर के उनके चेहरों पर आराम की ताज़गी होगी और उन्हें मुहर (सील) की हुई शराब

पिलाई जाती होगी। याकूत सूर्ख (लाल जवाहर) के मिम्बर पर और शादाबों (सुन्दर) सफेद खेमों (डेरों) में बैठे हुए होंगे। जिनमें सब्ज (हरे) छाप के बिछौने बिछे हुए और तख़्तों पर तकिये लगे होंगे, और वह खेमे शराब और शहद की नहरों के किनारों पर खड़े, गुलामों और बच्चों से पूर (भरे), गौरी-गौरी बड़ी आंखों वाली स्त्रियों से आरास्ता (विभूषित) खुशखुल्क (अच्छा स्वभाव और खूबसूरतों से सुशोभित होंगे। वह हूरें याकूत और मूँगे के समान होंगी और उन्हें स्वर्ग-निवासियों से पूर्व किसी ने आंख भर के न देखा होगा। जन्नत के दर्जों में खुराम नाज़ (नखरे) करेगी और जब उनसे कोई हूर तबख्तर (आलिंगन) करेगी, तो उसके दामन (आँचल) को ७० हजार लड़के (गिलमान) उठायेंगे, और उन पर सफेद हरीर (रेशम) की चादरें उस शोख रंग की होंगी, जिन्हें देख कर आंखों में चकाचौंध उत्पन्न हो जाये। उन पर मोती और मूँगे जड़े हुए होंगे। उनके सिर पर ताज, आंखों में सूर्ख (लाल) डोरे, नाज़ोअदाज़ की पुतलियाँ लाल के मुहल्लों में पर्दानशीन, नीची निगाहों वाली होंगी। उनके मकान स्वर्ग के बगीचों के मध्य बने होंगे और फिर उन पुरूषों और स्त्रियों में जामो-सुराही (शराब के प्यालों) के दौर चलेंगे। शराब खास और लज्ज़तदार (स्वादिष्ट) अर्क उनमें बाहम (परस्पर) पिये जायेंगे, उन प्यालो में जिनमें यह शराब वगैरा पिलाई जायेगी, वह लड़के लिये होंगे, जो दुर्रे आबदार (चमकदार मोती) के साफ और ताबाँ (आलौकित) के समान होंगे। यह अहले जन्नत की कमाई का बदला (फल) होगा कि आसायश (सुविधापूर्वक) और आराम के स्थान में, बगीचों और चश्मों के मध्य में, गुलजारों (बहारों) और नहरों के वस्त (मध्य) में पुरतकुल्लुफ निशस्तगाहों (बैठने के सुन्दर स्थानों) में बैठे अपने कादिर जुलजलाल (उत्कृष्टकर्ता) के नूर (प्रकाश) से

रूहानी लज्ज़त (आत्मिक आनन्द) लेंगे, और उस लज्ज़त की शादाबी (प्रसन्नता) उनके चेहरों से टपकती होगी। न उनमें गर्द (धूल) होगी न जिल्लत (परेशानी) बल्कि वह मुअज्ज़िज़ (प्रतिष्ठित) बन्दे होंगे और खालिके अर्जो समा (धरती-आकाश के कर्ता) की ओर से नये-नये तुहफों (भेंटों) से उनकी खबर-गीरी (कुशल क्षेम) होती होगी।

अभिप्राय यह कि अपनी ख्वातरखाह आरज़ूओं (मनपसद इच्छाओं) में सदा रहेंगे। न किसी का भय होगा, न गम करेंगे और मृत्यु की शंका भी उनके पास होकर भी नहीं फटकेगी। उनकी दाएमी क़याम [हमेशा रहना] स्वर्ग में होगा। उसी की ग़िज़ाएँ उन्हें मिलेंगी:— नहरों में से दूध-शहद और शराब पीयेंगे। उन नहरों की ज़मीन चाँदी की होगी, कंकर सोने के और मिट्टी मुश्के अजफ़र की, सब्जा ज़ाफरान (केशर) का जो बादल उसमें बरसेगा उसका शीरी (मीठा पानी काफूर कपूर) के टीलों पर पडेगा, जो आबखोरे (प्याले) पानी पीने को मिलेंगे उनमें मोती, लाल और मूँगे जड़े हुए होंगे। उन प्यालों से सर ब्पुहर शराब जिसमें सल्सबील (एक चश्मा) की मिलावट होगी साफ और प्रत्यक्ष नज़र आएगी। उनको किसी मनुष्य ने नहीं बनाया, जिनकी बनावट में किसी प्रकार का कसूर या फतूर रहा हो। वह प्याले ऐसे सेवकों के हाथों में होंगे, जिनके चेहरे ताबां और दरख़शानी [चमक दमक से आलोकित] में सूरज की रोशनी के बराबर होंगे, किन्तु सूरज में, सूरत की मुलाएमत [कोमलता] काली जुल्फों [बालों की लटों] की विशेषता और आंखों की मलाहत [आकर्षण] कहाँ है ?

हज़रत अबू हुरैरा फरमाते हैं—रसूलुल्लाह ने फरमाया (मुस्लिम) कि एक पुकारनेवाला पुकारेगा कि ऐ अहले जन्नत तुम्हें वह तन्दुरस्ती मिली है, कि तुम कभी बीमार न होगे और

तुम्हें वह जिन्दगी अता (प्रदान) हुई है, कि कभी न मरोगे, और तुम्हें वह जवानी दी गई है, कि कभी बूढ़े न होओगे, और तुम में वह तवगरी (सम्पदा) वदीअत की गई है, कि कभी मुहताज न होओगे।

सूरत रहमान में जिन दो जन्नतों का संकेत है, उसकी तफसीर में यह हदीस है। बुखारी और मुस्लिम ने अबू मूसा से इस हदीस को रवायत किया है।

रसूलिल्लाह (हज़रत मुहम्मद) फरमाते हैं कि वह दोनों जन्नतें चान्दी की होंगी। उनके ज़रूफ़ (बर्तन) और उनकी कुल वस्तुएँ चान्दी की होंगी और दो जन्नतें बर्तनों सहित घरों का समस्त सामान सोने का होगा और लोगों में अपने परवरदिगार का जलाल (तेज) देखने के अतिरिक्त चादर किबरियाई (उत्कृष्टता) के कोई वस्तु हाइल (रूकावट) न होगी।

हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं (बुखारी व मुस्लिम ने रवायत की है)– रसूलिल्लाह ने फरमाया—जो मनुष्य अपने माल में से दो जोड़ खर्च करेगा, वह स्वर्ग के दरवाजों से बुलाया जाएगा और स्वर्ग के आठ द्वार हैं, पस, जो कोई नमाज़ी होगा, वह बाबुस्सलात (नमाज के द्वार) से पुकारा जायेगा, और जो मनुष्य रोज़दार होगा, वह बाबुर्रयान से बुलाया जाएगा, और जो मनुष्य सदका (उपहार) देने वाला होगा, उसे बाबुस्सदका में से बुलाएँगे और जो अहले जहाद (धर्मयुद्ध) होगा, उसे बाबुलजहाद से आवाज़ दी जायेगी। हज़रत अबू बकर ने प्रर्थना की.....कि कोई ऐसा भी है, जो समस्त द्वारों से बुलाया जाये। नबी (हज़रत मुहम्मद) ने फरमाया-ऐसे भी लोग होंगे जो समस्त द्वारों से बुलाये जायें. और मुझे तवक्का (आशा) है, कि तू (अबू बकर) उनमें से है।

आसम हज़रत अली से रवायत करते हैं, कि हजरत अली ने पहिले अपनो तकरीर (भाषण) में नर्क की चर्चा की और फिर:—

वसीकल्लाजीनत्तको रब्बहुम हलल्जन्नते जमरन ।

कुरआन, पारा २४,रकू ८/५

अर्थात— वह लोग जो अपने रब्ब (ईश्वर) से डरते थे दल के दल स्वर्ग में भेजे गये ।

फरमाया—जब यह लोग उसके किसी द्वार पर पहुँचेगे, तो उसके पास वृक्ष देखेंगे। जिसकी जड़ के पास दो चश्मे बहते होगे। वह आज्ञानुसार उन दोनों में से एक की और जाएँगे ओर उसमें नहायेंगे। उन पर राहत (आनंद) की शादाबी (प्रसन्नता) अयाँ (प्रत्यक्ष) हो जाएगी । फिर कभी उनके बालों में अन्तर नहीं आएगा, और वह उलझने, और गन्दे न होने पायेंगे । सदैव यह मालूम पड़ेगा, कि बालों में तेल पड़ा है । फिर स्वर्ग में पहुँचेंगे, तो स्वर्ग का दरोग़ा उनसे यों कहेगा—'**सलामो अलैकम**' तुमको सलाम पहुँचे । तुम पवित्र हो, सो हमेशा रहने के, इसमें बैठो । फिर उनसे लड़के (गिलमान) मिलेंगे और ऐसे चिपकेंगे, जैसे किसी सम्बन्धी से चिपकते हैं, जो चिर काल के पश्चात वापिस आया हो । वह लड़के उसे कहेंगे-तुझे बशारत (शुभ सूचना) हो उस करामत (प्रतिष्ठा) की, जो खुदा ने तेरे लिये तैयार की है । फिर उन लड़कों में से एक लड़का जाकर उस स्वर्ग की हूरों को सूचना देगा- कि फलाँ व्यक्ति आया है, और वही नाम लेगा जो नाम उसका संसार में था । वह बेताब होकर बोलेगी-तूने उसे देखा है ? लड़का कहेगा हाँ देखा है, और वह मेरे पीछे आता है। वह हूर खुशी से शीघ्र उठ खड़ी होगी । और अपने द्वार की देहरी पर पेशवाई (स्वागत) के लिए आ खड़ी होगी । जब जन्नती अपने घर में प्रविष्ट होगा, तो देखेंगा कि

पत्थरों की जगह मोती हैं और उन पर एक आलीशान इमारत (भव्य भवन) सुर्ख-ज़र्द-सब्ज़ (लाल पीली हरी) हर रंग की बनी हुई है । फिर जन्नती अपना सिर उठाएगा, तो उसे छत बिजली के समान चमकती नज़र आएगी । यदि खुदा दृष्टि को शक्ति न देता, तो क्या आश्चर्य था कि उस चमक से दृष्टि जाती रहती । फिर वह अपनी नज़र को नीची करेगा, तो देखेगा कि उसकी पत्नियां बैठी हुई हैं, प्याले रखे हुए हैं और फर्श बिछे हुए हैं, और उन पर गाव तकिये लगे हुए हैं । फिर स्वर्ग-निवासी तकिया लगा कर कहेगा— खुदा का शुक्र (धन्यवाद) है, जिसने मुझे हिदायत की । यदि खुदा हिदायत न करता तो हम इस योग्य न थे कि हिदायत पाते । फिर आवाज़ आएगी:— तुम जीवित रहोगे, कभी तुम्हें मौत न आएगी । तुम्हारा यहां रहना दाएमी (अनादि) होगा । यात्रा के कष्ट का स्वप्न भी तुम्हें नहीं आएगा । तन्दुरस्ती तुम्हारे लिये अनिवार्य कर दी गई है । तुम कभी अस्वस्थ न होओगे ।

अन्स से रवायत है, हज़रत मुहम्मद ने फरमाया—कयामत के दिन मैं स्वर्ग के द्वार पर आकर उसे खुलवाऊँगा । दरोगा कहेगा—आपसे पेशतर (पूर्व) मुझे किसी को द्वार खोलने की आज्ञा नहीं..... ।

स्वर्ग की खिड़कियों के सम्बन्ध में हज़रत मुहम्मद ने फरमाया—कि यह खिड़कियाँ उनको मिलेगी, जो इस्लाम का प्रचार करें, भोजन कराये और रज़ा (आज्ञाकारी) रखे, और रात को लोगों के सोते हुए नमाज़ पढे ..... ।

किताबुल अज़मत रवायत हसन अबी हुरेरा से, कि हज़रत मुहम्मद ने 'व मसाकिने तैबतन फी जन्नते अदन' कि मसाकिन से तात्पर्य यहां मोती के महल से है । प्रत्येक महल में ७० घर लाल सुर्ख के, और प्रत्येक घर में ७० हुज़रे (कक्ष) सब्ज़

ज़मुर्द (जवाहरात) और प्रत्येक हुज़रे में तख्त हैं और हर तख्त पर ७० फर्श हर रग के बिछे हुए, और हर फर्श पर एक पत्नि हूरू में से बैठी हुई, और हर हुज़रे में ७० दस्तरखान हैं, हर दस्तरखान पर ७० रंग के भोजन है, और हर हुज़रे में ७०लौंडिया (दासियां) है, और ईमानदार को प्रतिदिन इतनी शक्ति दी जाएगी कि उन सब से ताअल्लुक (सम्बन्ध) पैदा करे। (और तो जो हो सो हो, पर गणित के छात्रों के लिये यह प्रश्न अच्छा है। यह है इस्लाम को दिये गये खुदा के वायदे।)

अबू हुरैरा से रवायत है- कि रसूलिल्लाह ने फरमाया-कि स्वर्ग की नहरें मुश्क(कस्तूरी)के टीलों या पहाड़ों से निकलती है।

अबू हुरैरा से रवायत है कि स्वर्ग के लोगों के पास सब से कम जिस के पास आभूषण हैं, और समस्त ससार के आभूषण से उसका मुकाबिला (तुलना) किया जाए, तो जो आभूषण अल्लाह आखिरत (परलोक) में देगा, वह समस्त संसार के आभूषण से उत्तम होगा।

अबू हुरैरा ने कहा, कि रसूलिल्लाह ने फरमाया- कि स्वर्ग में एक वृक्ष ऐसा है, कि यदि सवार उसके साये में सौ वर्ष चले फिर भी उसको पूरा न कर सके.....खुरमा आदि के वृक्षों के सम्बन्ध में हज़रत मुहम्मद ने फरमाया:— कि वह लकड़ी और तिनकों के न होंगे, उनकी जड़ें मोती और सोने की होगी, और उनमें फल लगे हुए होंगे (क्योंकि स्वर्ग में तिनके तक नहीं होंगे) स्वर्ग में कोई मुहताज न होगा, न पुराने वस्त्र होंगे, न जवानी में तनज्जुल [ह्रास] होगा, स्वर्ग में वह नियामतें होंगी, जो न आंखों ने देखी और न कानों ने सुनी। स्वर्ग का लिबास [पोषाख] मेवों में से निकला करेगा।

हज़रत ने फरमाया— कि पहला गिरोह [दल] जो स्वर्ग में प्रविष्ट होगा, उनकी सूरतें चौहदवीं रात के चन्द्रमा सी होगी।

वह स्वर्ग में न थूकेंगे, न छींकेंगे, न जायज़ रूर [पाखाना] जायेंगे, उनके बर्तन और कंघियां सोने-चांदी के होंगे। पसीने में कस्तूरी की सुगन्ध आएगी। प्रत्येक के लिये दो-दो पत्नियाँ होगी, जिनकी पिंडलियों का गूदा हुस्नो लताफत (विशेष सुन्दरता) के कारण माँस में से नज़र आयेगा। स्वर्ग-निवासियों के ताज के अदना (साधारण) मोती की चमक ऐसी होगी, कि पूर्व से पश्चिम तक रौशन कर दे। स्वर्ग निवासियों का खेमा मध्य से खाली होगा और उसकी ऊँचाई तीस कौस होगी और उसके हर गोशा (कोना) में मोमिन के घरवाली होगी, जिसे दुसरी पत्नियां न देखेगी।

हज़रत इब्ने अब्बास ने फरमाया– कि खेमा मुजव्वफ (पोले) मोती का है। उसका तूलो अर्ज़ (लम्बाई-चौड़ाई) एक फ़रसख (चार मील) का होगा, और उसके ४ हजार दरवाज़े सोने के होंगे।

यहूद के प्रश्न के उत्तर में हज़रत (मुहम्मद) ने फरमाया– कि पुल सिरात में सर्व प्रथम फ़ुकरा और महाजिर (फकीर औ देश त्यागी) लोग उतरेंगे और उनका पहला खाना मछली के जिगर का कबाब होगा। उसके पश्चात स्वर्ग का बैल, जो उसके किनारे चरता फिरता है, वह उनके लिए जिबह (कत्ल) होगा और पानी चश्मा सलसबील का होगा।

हज़रत ने एक यहूदी को, उत्तर में कहा:— कि कसम है उस ज़ात की, जिसके हाथ में मेरी जान है। स्वर्ग-निवासियों में से एक-एक को सौ-सौ पुरूषों की शक्ति खाने-पीने और ऐश (भोग) करने की अता (प्रदान) होगी, और पाखाना (शौच) जाने के बदले में यह होगा कि उनके जिस्मों (शरीरों) से कस्तूरी की सुगन्ध का पसीना बहेगा, और पेट साफ हो जाएगा।

हज़रत इब्ने मसऊद कहते हैं, कि ज्योंही तू पक्षी को देख कर इच्छा करेगा, त्योंही वह तत्काल तेरे सामने जिबह [कत्ल] होकर भुन जायेगा।

हज़रत ने अबू बकर को फरमाया--कि स्वर्ग में कुछ पक्षी बखती ऊँट के समान है। तू उनको खायेगा..... ...और स्वर्ग-निवासियों के लिये ७० प्यालों का दौर जारी रहेगा। प्रत्येक प्याले में नये प्रकार का भोजन होगा, जो दुसरों में नहीं होगा।

हज़रत अबो दरदा ने फरमाया- कि स्वर्ग-निवासियों को एक शराब चाँदी के रंग की मिलेगी, और वह ऐसी शराब होगी कि यदि कोई सांसारिक अपना हाथ उसमें डाले और फिर निकाल ले, तो इतना सुगन्धित हो जायेगा कि कोई प्राणी ऐसा शेष न रहे, जिसको उसकी सुगन्ध न पहुँचे।

हज़रत ने फरमाया— कि उनकी सूरतें पर्दों में दर्पण से भी साफ़ नज़र आयेगी, और उनके आभूषण का साधारण मोती पूर्व से पश्चिम तक प्रकाशित कर देगा, और उन पर ७० वस्त्र होंगे, जिनसे व्यक्ति की नज़र पार हो जाये। यहां तक कि उनकी पिंडलियों का गूदा भीतर से मालूम हो।

हज़रत ने फरमाया-कि मैंअराज़ (खुदा से भेंट ने) की रात में स्वर्ग में मैं एक स्थान पर पहुँचा। वहाँ मोतियों, जवुजर्द (जवाहरात) और लाल सुर्ख के डेरे खड़े थे, जो उन खेमो में स्त्रियाँ थी, उन्होंने मुझे अस्सलाम आलेकुम कहा.....उन्होंने कहा-हम राज़ी हैं, नाराज़ न होंगी, हम मुकीम (स्थाई) हैं, यात्रा न करेंगी।

एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद से प्रश्न किया—कि स्वर्ग वाले जमा [स्त्री सम्भोग] भी करेंगे ? आपने फरमाया:— कि व्यक्ति को अहले जन्नत में से इतनी शक्ति मिलेगी, कि तुम में से ७० पुरूषों से अधिक होगी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने फरमाया:— कि स्वर्ग के रहने वालों में से अदना मर्तबा (साधारण पद) का वह व्यक्ति होगा, कि उसके ६० हजार सेवक होंगे और प्रत्येक सेवक का काम अलग होगा।

हज़रत ने फरमाया·· कि एक व्यक्ति ५०० हूर, ४ हजार बाकरा (क्वाँरी) स्त्रियों, ८ हजार मर्दरसीदा (विवाहिता) स्त्रियों से निकाह (ब्याह) करेगा, और उनमें से प्रत्येक के साथ इतना मुआनिका (सम्बन्ध) करेगा, जितना संसार में जीवित रहा होगा।

हज़रत ने फरमाया:- कि स्वर्ग में एक बाज़ार है, जहाँ पुरूषों और स्त्रियों के हुस्न [सौदर्य] के अतिरिक्त और किसी वस्तु का क्रय-विक्रय नहीं होता। पस, जब कोई व्यक्ति किसी हसीन (सुन्दर) स्त्री की ख़्वाहिश [इच्छा] करेगा, तो वह उस बाज़ार में जायेगा। जहां बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें जमा (एकत्रित) हैं। वह इतनी ऊँची आवाज़ से कहती हैं, कि किसी ने नहीं सुनी होगी और वह आवाज़ यह है·· हम दाइम-काइम (सदा स्थाई) हैं। हम कभी फ़ना (नष्ट) न होंगी। मुबारिक [ध य] वह व्यक्ति जो हमारा हो, और हम उसकी हों।

अब देखिए कि प्रत्येक स्वर्ग निवासी को न जाने कितनी हूरें, गिलमान और पत्नियां प्राप्त होगी। इस पर भी खुदा को स्वर्ग वालों के लिए इस प्रकार का बाजार खोलने की आवश्यकता अनुभव हुई। इस हदीस ने तो मानो इस्लाम के चरित्र का दिवाला ही निकाल दिया है। क्या मुसलमान जन इस सम्बन्ध में कुछ सोचने को तत्पर होंगे।)

हज़रत अन्स का बयान है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया- कि स्वर्ग में हूरें गाती हैं, और कहती हैं: हम सुन्दर दासियाँ हैं, और हम करीम (प्रतिष्ठित) पुरूषों के लिए सुरक्षित हैं।

यह्या बिन कसीर कहते हैं- कि स्वर्ग में राग-रागिनी होंगे।

अबू अमामा बाहली का कथन है- कि रसूलुल्लाह ने फरमाया- कि जो बन्दा स्वर्ग में प्रविष्ट होता है, उसके पाएँ (पैरों की ओर) बैठ कर हूरें गीत सुनाती है। जिस गीत को मनुष्य

और जिन्न सुनते हैं, उनमें खुदा की हमद (प्रशंसा) और तक़द्दस (पवित्रता) का वर्णन रहता है।

हज़रत उमामा बिन ज़ैद कहते हैं:-- हज़रत ने फरमाया--- कोई है, जो स्वर्ग की तैयारी करे। वहाँ दृढ़ महल बने हुए हैं, नहरें बहती है, वृक्षों पर पके मेवे लगे हुए हैं, खूबसूरत और साहिब जमाल [अति-सुन्दर] पत्नियाँ हैं, प्रसन्नता और ऐश्वर्य का अनादि स्थान है। लोगों ने प्रार्थना की, कि हम उसकी तैयारी करने वाले हैं। रसूलुल्लाह ने फरमाया-कहो **'इन्शा अल्लाह'** फिर आपने जहाद (धर्मयुद्ध) की आज्ञा दी।

हज़रत से एक व्यक्ति ने कहा--- कि जन्नत में घोड़ा भी होगा ? आपने कहा- कि याकूत सुर्ख [लाल जवाहर] का घोड़ा तुझे मिलेगा, कि स्वर्ग में जहां तू चाहे तुझे लिये उड़ता फिरेगा।

हज़रत से एक व्यक्ति ने पूछा--- कि क्या स्वर्ग में ऊँट भी होगा ? आपने फरमाया:--- कि जब तू स्वर्ग में प्रविष्ट होगा, जिस वस्तु को तेरा दिल चाहेगा, मिलेगी।

अबू सईद खुदरी ने कहा—कि हज़रत ने फरमाया--जब स्वर्ग निवासी का दिल चाहेगा, तो उसकी सन्तान होगी। उसका हमल (गर्भ) वजा हमल (उत्पत्ति) और जवानी (युवावस्था) एक ही साइत (समय) में हो जायेगी।

हज़रत ने फरमाया-स्वर्ग में भाई, भाईयों से मिलेंगे, पस मुलाकात के लिये एक का तख्त दुसरे के पास चला जायेगा। स्वर्ग वाले बेरीशो बरूत (बिना दाड़ी मूछों के चाक चुस्त (स्फुर्तिक) सुरमा लगाये हुए ३३ वर्ष की आयु के हज़रत आदम की पैदाईश पर होंगे। उनका कद ६० हाथ और चौड़ाई ७ हाथ की होगी।

आपने फरमाया--कि अहले जन्नत में अदना (स्वर्ग निवासियों में छोटा) वह होगा, जिसके पास ८० हजार सेवक होंगे और

७२ पत्नियां होंगी, और उसके लिये एक खेमा जबुर्ज़द और मोतियों का इतना बड़ा खड़ा किया जायेगा कि वह जविया और सिन्आ (दो पहाड़) के मध्य में आ जाए। उनके सिर पर ताज (मुकुट) होंगे, और उनमें अदना (छोटा) श्रेणी का मोती पूर्व से पश्चिम तक प्रकाश कर देगा।

हज़रत ने फरमाया--मैंने स्वर्ग को देखा, तो उसके अनार इतने बड़े हैं, जैसे पालान (ओहदा, कसा ऊँट। उसके पक्षी बखती ऊँट के समान है। उसी में एक लौंडी (दासी) को देखा और उससे मैंने पूछा-कि तू किसकी है ! उसने कहा-ज़ैद बिन हारसा की हूँ। (अब तो चश्मदीद (आँखों देखा) साक्षी है। क्या अब भी इस स्वर्ग की वास्तविकता और अस्तित्व को नहीं मानोगे ?)

हज़रत हसन वसनी फरमाते हैं—कि स्वर्ग के अनार ढोल जैसे हैं। उसकी नहरें उस पानी की है, जो सड़ता नहीं, और दो नहरें दूध की है, जिनका मज़ा (स्वाद) बदलता नहीं, और नहरें स्वच्छ शहद की है जिन्हें मनुष्यों ने साफ नहीं किया, और नहरें ऐसे शराब की है, जो पीने वालों को आनन्द दे, न नींद से सरूर (मस्ती) जाए, न सिर में बोझ (भारीपन) हो।

फलों की स्थिति खुदा के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता (फलों का खुदा जाने किन्तु शराब का तो आप जानते ही हैं। यही क्या कम है ?) उनकी सुगन्ध ५०० वर्षों के मार्ग से आती है।

स्वर्ग वालों को तेज़ रौ घोड़े और तेज़ कदम ऊँट मिलेंगे। जिनकी काठियाँ, बागें (रास) और ज़ीन याकूत के होगे। वह लोग स्वर्ग में सैर करेगे और उनकी पत्नियां हूरें होगी, जैसे लिपटा हुआ मोती…… और वह हूरें अपनी दोनों ऊँगलियों में ७० लिबास (पौषाख) पकड़ कर पहिरेगी।

उपरोक्त वर्णन के पश्चात आप लिखते हैं, कि यह स्वर्ग की कैफियत (स्थिति) है, जो हमने न केवल कुरआन में से बल्कि

अहादीस सहीहा और सहाबा (हज़रत मुहम्मद के साथी) और उलमा (विद्वान) अकवाल (वचनों) से बयान की है।

एक बुद्धिमान मुनसिफ मनुष्य स्वर्ग के इस सम्पूर्ण वर्णन से यह परिणाम निकाल सकता है, कि जो कुछ वर्णन किया गया है, हकीमाना उसूल (चातुर्यपूर्ण सिद्धान्त) पर है।

हमारे पैग़म्बर (दूत) उन लोगों में आये थे, जिन्हें शहद, दूध, मेवे और सुन्दर स्त्रियों अथवा जवाहरात के मकान सीमा से अधिक प्रिय थे, और वह इन्हीं वस्तुओं को इन्तहाये शादमानी (असीम प्रसन्नता) समझते थे। यदि उन्हें उनके ख्याल (विचार) उनकी तबीयत (स्वभाव) उनके मज़ाक (रूचिकर) के मुआफिक (अनुसार) स्वर्ग की न्यामतों का भागीदार न बनाया जाता, तो आज कुफ़रो विदअत (बुराईयों) में सारा संसार का संसार गिरफ्तार होता और कहीं नाम को भी खुदा की खुदापस्ती न होती।

मुकद्मा तफसीरूल फ़ुर्कान, पृष्ठ ७७ से ८४

उपरोक्त वाक्यों से स्पष्ट यह परिणाम निकलता है, कि मिथ्या बातों का प्रलोभन देकर उनकी मनोकामनाओं से लाभ उठा कर हज़रत मुहम्मद ने स्वर्ग का एक ऐसा चित्र प्रस्तुत किया, जो कि सत्य और यथार्थ से एकदम परे हैं, और उसमें कोई सार या तथ्य नहीं है।

स्वर्ग के सम्बन्ध में सर सय्यद अहमदखां की सम्मति

यह समझना कि स्वर्ग एक बाग के रूप में उत्पन्न किया हुआ है, और उसमें सगमर्रर और मोती के जड़ाऊ महल है। बाग में सर सब्जों शादाब (हरे-भरे) वृक्ष है। दूध व शराब और शहद की नदियां बह रही है, और हर प्रकार का मेवा खाने को प्रस्तुत है। साकी व साकनीन (शराब देने वाले) अत्याधिक खूबसूरत चाँदी के कंगन पहिने हुए, जो हमारे यहाँ की घोसीनें पहनती है, शराब दिला रही है, और एक स्वर्ग निवासी एक हूर के

गले में हाथ डाले पड़ा है, एक ने रान (जंघा) पर सिर धरा है, एक छाती से लिपट रहा है, एक ने लबे जाँ बख़्श (प्राणदायी अधर) का बोसा (चुम्बन) लिया, कोई किसी कोने में कुछ..... ऐसा बेहूदापन (असभ्यता) है, जिस पर आश्चर्य होता है। यदि स्वर्ग यही है, तो बिला मुबालिग़ा (बिना सोचे समझे) हमारे ख़राबात (वैश्यालय) इससे हजार गुणा उत्तम है।

तफसीरूल कुरआन, पृष्ठ ३३ भाग १

सर सय्यद ने भी आगे वही लिखा, जो हैरत मिर्ज़ा देहलवी ने लिखा— उल्माए इस्लाम (विद्वान मुसलमानों) ने बसबब अपनी रिकत कलबी (दिल की चाहत) और बवजह दिली इक्तदार और खौफ़ [महत्वकांक्षा-भय] और रजा [आज्ञा] के ग़लबा [अत्याधिक प्रभाव] के.....जो मनुष्य को असल हकीकत के बयान की जरूरत नहीं रहती.....इसलिए वह बुज़ुर्ग [बड़े लोग] समस्त इन बातों को स्वीकार करते हैं, जिनको कोई भी मान नहीं सकता, और वह बातें, जैसी कि [अकिल बुद्धि] और मकसद [लक्ष्य] बानिए मजाहिब [सम्प्रदाय के संस्थापक] के विरूद्ध है। पृष्ठ ३४

जन्नत के ख्याल [विचार] से उसके दिल में एक बेइन्तिहा [असीमित] जन्नत की, और एक तरग़ीब [प्रेरित करना] अवामर [विधि] के बजा लाने में और नवाही [निषेध] से बचने की उत्पन्न होती है।

एक कुंदमग़ज [रूढ़िवादी] मुल्ला या शाहवतपरस्त [विषय-भोगी] ज़ाहिद यह समझता है कि वास्तव में स्वर्ग में अत्याधिक खूबसूरत अनगिनत हूरें मिलेंगी, शराब पीयेंगे, मेवे खायेंगे, दूध और शहद की नहरों में नहायेंगे, और जो दिल चाहेगा मज़े उड़ायेंगे, और इस लग़्व (निरर्थक)

बेहूदा ख्याल से दिन--रात अवामर [विधि] को बजा लाने और नवाही [निषेध] से बचने की कोशिश करता है, और इस नतीजे पर पहुँचता है । पृष्ठ ३५

सर सय्यद के विचारों से यह तो ज्ञात हो गया कि स्वर्ग का अक़ीदा [बिश्वास] गलत है और भ्रान्तिजनक है ।

● मिर्ज़ा हैरत तथा सर सय्यद के निस्सार हेतु ●

दोनों महानुभावों ने यह हेतु बहिश्त [स्वर्ग] के सम्बन्ध में दिया है । यद्यपि स्वर्ग का यह सिद्धान्त मिथ्या है, तथापि इससे लाखों लोग इस्लाम के सिद्धान्तों का पालन [करने लगे और] करते हैं । अतः यह इस्लाम के लिये हितकर है ।

हम कहेंगे कि क्या यह दोनों महाशय [मिर्ज़ा हैरत और सर सय्यद] यही हेतु दुसरों के लिये भी मान्य करेंगे ?

यथा:---मूर्तिपूजक हिन्दू यही हेतु दें कि मूर्तिपूजा यद्यपि मिथ्या है, तथापि इस मूर्तिपूजा से करोड़ो लोग हिन्दू धर्म का पालन करते हैं, तो क्या उक्त दोनों सज्जन मूर्तिपूजा को भी ग्रहित और प्रशसनीय मान लेंगे ?

इसी प्रकार बौद्ध भी कह सकते हैं, कि हमारे ईश्वर के न मानने से करोड़ों मनुष्य बौद्ध बन गये, तो क्या यह भी प्रशंसनीय माना जायेगा ?

किन्तु हम कहेंगे कि मिथ्या बातों की आड़ लेकर धर्म प्रचार करना, उत्तम पुरूषों का कार्य नहीं । यह स्पष्ट धोखा और छलावा है । अतः सत्य धर्म का प्रचार सत्य साधनों से ही करना उचित है, मिथ्या साधनों से नहीं ।

जब कोई मनुष्य अपने मन और मस्तिष्क को किसी का दास बना देता है, तो उसकी स्थिति सत्यासत्य के विवेक करने योग्य नहीं रहती ।

यही स्थिति समस्त संसार में देखी जाती है, और उन्हीं लोगों में मुसलमान भी हैं। इन्होंने भी अपनी बुद्धि और ज्ञान को हज़रत मुहम्मद कें सम्मुख अर्पण कर रखा है। इसलिए यह ऐसी बुद्धि के विपरीत बातों को मानते चले आ रहे हैं, और किंचित भी इस बात पर विचार नहीं करते, कि यह बातें जो हम मानते हैं, वह सम्भव भी है या नहीं ?

मेरे विचार में यह स्वर्ग का चित्र जो इस अध्याय में चित्रित किया गया है, कि वह एक सत्य क जिज्ञासु व्यक्ति के लिये दर्पणवत है। यदि कोई सत्याभिलाषी व्यक्ति है ? तो उसके लिये आवश्यक है कि वह ऐसी मिथ्या बातों को, जो खुदा के नाम पर बनाई गई है, कदापि स्वीकारने को तत्पर नहीं हो सकता।

यदि एक भी मुसलमान इस मिथ्यावाद को त्याग कर सत्य को ग्रहण करेगा, तो हम अपना लघु प्रयास सफल समझेंगे। अब इसके आगे हम पाठकों के ज्ञातव्य हेतु कुरआन में वर्णित और इस्लाम में सर्वमान्य दोज़ख (इस्लामी नक) का वर्णन प्रस्तुत कर रहे हैं। जिससे आपको यह ज्ञान होगा कि कुरआनकार ने इस्लाम के प्रचार खुदा के नाम पर किस भांति जनसाधारण को दोज़ख का भय दर्शा कर इस्लाम का अनुयायी होने हेतु विवश कर अपना साम्प्रदायिक स्वार्थ साधा है, और लोगों को सत्यमार्ग से पथभ्रष्ट किया है। आपने कुरआन में वर्णित कयामत व स्वर्ग का दिग्दर्शन कर ही लिया है, अब आगे इस्लामी नर्क का वर्णन पढ़िए।

[दोज़ख]

दोज़ख़

पाठक बन्धुओं ! अब हम कुरआन में वणित दोज़ख अर्थात इस्लामी नर्क का वर्णन प्रस्तुत कर रहे हैं। सर्वप्रथम यह ज्ञातव्य आवश्यक है, कि अन्ततः नर्क क्या और किसके हेतु है। कुरआन में वर्णित है:—

फ़त्तकुन्नारल्लति वकुदोहन्नासो वल्हिजारतो ओइद्दत लिल्काफेरीन

कुरआन पारा १ रकू १/३

अर्थः–तो फिर नर्क से बचते रहो, कि जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं, और यह अग्नि काफिरों हेतु हैं।

हज़रत मुहम्मद ने फरमाया— **'नारोकुम हाज़ोही जुज्उम्मिन सब्ईना जुज्उम्मिन्नारे जहन्नामा'** अर्थात तुम्हारी यह अग्नि नर्काग्नि के ७० हिस्सों में से एक हिस्सा है।

इस हदीस को बुखारी व मुस्लिम ने उद्धृत किया है और यह सर्वमान्य है।

अबू हुरैरा से उद्धृण है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया–नर्काग्नि १ हजार वर्षों तक धधकाई गई। यहां तक वह लाल हो गई, तत्पश्चात १ हजार वर्षों तक पुनः धधकाई गई, पश्चात सफेद हो गई। फिर १ हजार वर्षों तक धधकाई गई, कि वह काली हो गई। तफसीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ ४०—४१

नर्काग्नि इस भांति तीव्र की गई है, जिसमें काफिरों को झोंका जाएगा।

● कर्म पत्र ●

आयत:—

इन्ना किताबल्फ़ुज्ज़ारे लफी सिज्ज़ीन व मा अद्‌राका मा सिज्जीन किताबुम्मर्कुम । क़ुरआन पारा ३० रकू १/८

अर्थ:—निसन्देह, बुरों के कर्म पत्र '**सिज्जीन**' में हैं, और क्या जाने तू ! क्या है '**सिज्जीन**' ? लिखित बही है ।

व्याख्या:— अर्थात काफिरों के कर्मपत्र, जिन्हें फरिश्ते लिखते हैं, '**सिज्ज़ीन**' में हैं । हदीसों और संकेतों से प्रकट है, कि '**सिज्जीन**' उस स्थान का नाम है, जहां काफिरों के बही-खाते हैं । (क़ामूस) काफिरों के कर्मपत्र वहाँ रखे जाते हैं । '**सिज्जीन**' नामकरण का तात्पर्य यह है, कि काफिरों की आत्माएँ वहाँ कैद कर दी जाती है । 'सिज़्ज़ीन' ७ वीं भूमि के नीचे है ।

बग़वी ने लिखा है, कि हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर, कतादा, मुज़ाहिद और ज़ुहाक ने वर्णन किया है, कि '**सिज्ज़ीन**' सबसे अन्तिम ७ वीं भूमि है, जिसमें काफिरों की आत्माएँ रहती हैं ।

क़ाब अहबार ने फरमाया--फ़ाजिर (काफ़िर) की आत्मा को आसमान की ओर चढ़ाया जाता है, किन्तु आसमान उसे स्वीकार करने से मना कर देता है, फिर उसे भूमि की ओर उतारा जाता है किन्तु भूमि भी उसे ग्रहण करना अस्वीकार कर देती है । अन्तत: ७ वीं भूमियों के नीचे उसे प्रविष्ट किया जाता है । यहाँ तक कि उसे '**सिज्ज़ीन**' तक पहुँचा दिया जाता है । यह स्थान इब्लीस (शैतान) की सेना के नीचे है ।

इब्ने जरीर ने व्याख्या में हज़रत मुआज़ का कथन लिखा है, कि रसूलिल्लाह से प्रश्न किया गया—कयामत के दिन नर्क को कहाँ से लाया जाएगा ? हज़रत ने फरमाया— उसे ७वीं भूमि से लाया जाएगा, उसकी हजार वलगाएँ होगी और प्रत्येक

बल्गा को ७० हजार फरिश्ते खेंचते होंगे। जब मनुष्यों से उसका अन्तराल १ हजार वर्षों की यात्रा का रह जाएगा, तो वह एक साँस खीचेगा, जिससे प्रत्येक प्रभूभक्त और पैगम्बर घुटनों के बल बैठ कर कहेंगे:-- **रब्बे--नफ़्सी--नफ़्सी** अर्थात हे प्रभू मुझे बचा बचा। तफसीर मज़हरी पारा ३० पृष्ठ ३३८ से ४०

नर्क में कितने जाएंगे ?

तफसीर मज़हरी ने कुरआन की आयत '**यज अलिल् विल्दाना शीबन्**' की अपनी व्याख्या में लिखा है, कि हज़रत अबू सईद खुदरी ने प्रमाणिक हदीस उद्धृत की है, कि अल्लाह कयामत के दिन फरमाएगा-- आदम ! नर्क का भाग पृथक कर लो। आदम निवेदन करेगा– नर्क का कितना भाग है ? अल्लाह फरमाएगा-- १ हजार में से ९९९ उस समय अत्यन्त भय व्याप्त हो जाएगा। बच्चे वृद्ध हो जाएगे और प्रत्येक गर्भिणी स्त्री का गर्भपात हो जाएगा। तफसीर मज़हरी पारा २९ पृष्ठ १७१

नर्क को कैसे लाया जाएगा ?

आयत:–

व जीआ योमाएज़ीन बिजहन्नमा। कुरआन पारा ३० रकू १/१४

अर्थ: - उस दिन नर्क को लाया जाएगा।

व्याख्या:-- हज़रत इब्ने मस्ऊद से उद्धृण है, कि रसूल्लिल्लाह ने फरमाया:-- उस दिन नर्क को इस प्रकार लाया जाएगा, कि उसकी ७० हजार वल्गाएं होगी और प्रत्येक वल्गा को ७० हजार फरिश्ते खेंचते होंगे। (मुस्लिम व तिर्मज़ी)

कर्तबी ने कहा-- नर्क को उसके उत्पत्तिस्थल से बन्दी बना कर कयामत की भूमि पर लाया जाएगा और पुल सिरात (नर्क का पुल) के अतिरिक्त स्वर्ग जाने हेतु कोई मार्ग न रहेगा।

तफसीर मज़हरी पारा ३० पृष्ठ ४०४

पाठक बन्धुओं ! यहां तक हमने जो नर्क का चित्र प्रस्तुत किया है, उससे आप भलिभाँति परिचित हो गए हैं, कि नर्काग्नि किस भाँति धधकाई जाकर प्रचण्ड की गई है और वह केवल काफिरों हेतु है, और फिर यह प्रचण्ड दावाग्नि, जिसमें प्रति हजार में से ९९९ लोगों को झोंका जाना भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। इससे स्पष्ट प्रतीत होता है, कि इस्लाम की दृष्टि में प्रति हजार में से ९९९ मनुष्य काफ़िर हैं।

हमने 'कुरआन परिचय' के प्रथम खण्ड में लिखा है, कि जब अल्लाह ने शैतान को स्वर्ग से निष्कासित किया था, तब उसने खुदा को चुनौती दी थी, कि मैं तेरे भक्तों को पथभ्रष्ट करूँगा, तो शैतान अपनी चुनौती को कार्यान्वित करने में पूर्ण-रूपेण सफल रहा और उसकी प्रतिस्पर्धा में अल्लाह अपने भक्तों को शैतान के चगुल से बचाने में बुरी तरह असफल रहा, जब कि अल्लाह ने मनुष्यों को सुमार्गी बनाने हेतु ढेर सारे पैगम्बर और उनके साथ अपनी खुदाई पुस्तकें भेजी, तदोपरान्त भी शैतान अपने कार्य में सफल रहा और प्रति हजार में से ९९९ व्यक्तियों को पथभ्रष्ट कर नर्कगामी बना ही लिया तथा बेचारे अल्लाह के निरन्तर और अथक प्रयासों के बावजूद भी हजार में से १ व्यक्ति ही हिस्से में आया। विचारणीय है, कि शैतान की प्रतिस्पर्धा में अल्लाह की प्रतिष्ठा क्या रही ?

नर्क में कौन जाएंगे ?

यह तो विख्यात ही है, कि नर्क में मात्र काफ़िर ही जाएंगे इस सम्बन्ध में हम कुरआन से वर्णित करते हैं। आयतः--

वत्ताकुन्नारल्लति ओ इद्दत लिल्काशेरीन्।

कुरआन पारा ४ रकू १४/५

अर्थः— और उस अग्नि से बचो, जो काफिरों हेतु तैयार की गई है। तफसीर इब्ने कसीर पारा ४ पृ. २४

आयतः—

फ़ अम्मल्लज़ीना कफरू फ़ ओ अज़्ज़ोबोहुम् अज़ाबन शदीदन् फ़ि-द्दुनिया वल्आख़ैरते फ़ मा लहुम्मिन्नासेरीन।

कुरआन पारा ३ रकू ६।१४

व्याख्या -पस, जो लोग काफिर हो गए अर्थात यहूदी व ईसाई, पस संकट दूँगा, उनको कठोर सकट। संसार में हत्या-कैद और कर अनिवार्य होने के व अपमानित होने हेतु और कयामत में विभिन्न कष्टों की कठोरताएं सदैव नर्क में रहने से।

तफसीर कादरी पारा ३ पृष्ठ ११०

आयतः—

व मंय्युशाके क़िर्रसूला मिम्बादे मा तबय्यना लहुलहूदा व यत्तबे-ओग़ैरा सबीलिल्मोमेनीना नवल्लेही मा तवल्ला व नुस्लेही जहन्नम व साअत् मसीरा।

कुरआन पारा ५ रकू १७।१४

व्याख्या:-और जो प्रकट शिक्षा और स्पष्ट उदाहरणों से परिचित होने पर समकालीन पैगम्बर की अवज्ञा कर इस्लाम का सीधा मार्ग त्याग कर उनके विरोधी मार्ग का अनुकरण करेगा, तो हम उसी ओर ही उसका ध्यान केन्द्रित कर देंगे, जिसका वह इच्छुक है, और अन्त में उसे नर्क में डालेंगे, जो अत्यन्त ही बुरा स्थान है।

आज़मुत्तफासीर पारा ५ पृष्ठ ९३

इस आयत की व्याख्या में इब्ने कसीर ने लिखा है, कि इस्लाम के मार्ग के अतिरिक्त अन्य मार्ग ढूँढना यथार्थ में रसूल से शत्रुता और विरोध करना ही है।

तफसीर इब्ने कसीर पारा ५ पृ. ९१

इब्ने कसीर ने यह भी लिखा है, कि जो व्यक्ति पैगम्बर का विरोध करेगा, तत्पश्चात कि उस पर सत्य प्रकट हो चुका

था व इस्लाम का मार्ग त्यागकर दूसरे पर हो लिया। हम उसे जो कुछ करता है, करने देंगे और अन्ततोगत्वा उसे नर्क में डाल देंगे।

तफसीर इब्ने कसीर पारा ५ पृष्ठ ६०

आयतः—

व मंय्यक्फुर्बेही मिनल अहजाबे फन्नारो मोएदह।

कुरआन पारा १५ रकू २/२

व्याख्याः—जो मनुष्य दूसरे सम्प्रदायों में से इसका (इस्लाम का) अस्वीकार करेगा, तो उसके अनुबन्ध का स्थान नर्क है। 'एहजाब' से तात्पर्य इस्लाम के अतिरिक्त अन्य धर्मावलम्बी हैं।

हज़रत अबू हुरैरा का उद्धृण है, कि रसूल्लिल्लाह ने फरमाया—शपथ है, उस सत्ता की जिसके हाथों में मुहम्मद के प्राण हैं। इस समुदाय के आमन्त्रण में से जो कोई यहूदी व ईसाई ऐसी स्थिति में मरेगा कि जिस (शिक्षा) को मुझे देकर भेजा गया है, वह इस पर ईमान न लाया होगा, तो वह अवश्य ही नर्कगामियों में से होगा। (रवाहुल मुस्लिम) तफसीर मज़हरी पारा १२ पृष्ठ ३४

उपरोक्त प्रमाणों व उद्धृणों से यह सिद्ध हो चुका है, कि नर्क में मात्र काफ़िर ही जाएंगे और काफ़िर कौन होंगे? यह भी दर्शा चुके हैं, कि जो इस्लाम का मार्ग त्याग कर अन्य मार्गों पर चलेंगे, वह काफ़िर होंगे अब इसके आगे यह वर्णन करेंगे कि बहिश्त (स्वर्ग) में कौन लोग प्रविष्ट होंगे? आगे पढ़िये:—

स्वर्ग में कौन जाएगा?

आयतः—

व लस्सोफा योतीका रब्बोका फ़तर्जा

कुरआन पारा ३० रकू १/१८

व्याख्याः— रसूल्लिल्लाह ने फरमाया— मेरे समुदाय में से एक भी नर्क में रह गया, तो मैं प्रसन्न नहीं होऊँगा।

हज़रत अली का उद्धृण है, कि रसूल्लिल्लाह ने फरमाया

-मैं अपने समुदाय की सिफ़ायत (अनुशंसा) करूँगा और अल्लाह उसको क्षमा कर देगा। यहाँ तक कि मेरा प्रभु आवाज देगा--मुहम्मद ! क्या अब तू प्रसन्न हो गया ? मैं निवेदन करूँगा—हाँ मेरे स्वामी ! मैं प्रसन्न हो गया।

अता का उद्धृण है, कि हज़रत इब्ने अब्बास का कथन है, कि 'यौती का रब्बोका फ़तर्ज़ा' का अर्थ यह है, कि अल्लाह तुझको (मुहम्मद को) अनुशंसा की आज्ञा प्रदान करेगा और तेरे समुदाय को तेरी सिफ़ायत पर क्षमा कर देगा और यहाँ तक कि तू प्रसन्न हो जाएगा।

हज़रत अली और इमाम हसन से भी यही उद्धृण है। हज़रत अब्दुल्ला बिन आस से वर्णित है, कि रसूलिल्लाह ने प्रार्थना की-या खुदा ! मेरे समुदाय को क्षमा कर दे। मेरे समुदाय को क्षमा कर फिर रोने लगे। अल्लाह ने जिब्रील को आदेश दिया-ऐ जिब्रील ! हज़रत मुहम्मद से कह दो, कि तेरे समुदाय के विषय में हम तुझे प्रसन्न कर देंगे और तुझे कष्ट न देंगे। (मुस्लिम) तफसीरामज़हरी पारा ३० पृष्ठ ४४२

नर्क अवैध है।

कुरआन की इस आयत 'फ़ मय्यामलो मिस्काला ज़र्रातिन खैरंय्यरह' (कुरआन पारा ३० रकू १/२५) की व्याख्या में मज़हरी ने लिखा है, कि हज़रत उस्मान गनी के कथन को सलीम ने उद्धृत किया है, कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया:-जो व्यक्ति यह विश्वास रखते हुए, कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, मृत्यु को प्राप्त हो गया। वह स्वर्ग में प्रविष्ट होगा।

मुस्लिम ने हज़रत अबादह बिन सामत का उद्धृण इन शब्दों में लिखा है, कि जिस व्यक्ति ने साक्षी दी, कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, उस पर नर्क अवैध होगा।

सहीहैन (बुखारी व मुस्लिम) में हज़रत अन्स और हज़रत अतबान बिन मालिक का उद्धृण है, और हाकिम की सम्मति में हज़रत इब्ने उमर का कथन है, व मुस्लिम की सम्मति में हज़रत मुआज़ के कथन से यह हदीस आई है । मुस्लिम ने हज़रत इब्ने मस्ऊद के उद्धृण से यह हदीस उद्धृत की है, जिसके हृदय में राई के कण सदृश्य भी ईमान होगा, वह नर्क में प्रवेश नहीं पाएगा । तफसीर मज़हरी पारा ३० पृष्ठ ५०३

बुखारी की हदीस—

काला रसूलुल्लाहे अलैहे व सल्लअम् इन्नल्लाहा कद हर्रमन्नारो अला मन काला ला इलाहा इल्लल्लाह यम्बवी बज़ालेका वज्हुल्ला ।

अर्थात:— रसूलिल्लाह ने फरमाया:— खुदा ने उस पर नर्क को अवैध कर दिया, जिसने 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहा । जब कि अल्लाह की प्रसन्नता के अतिरिक्त और कोई अभिप्राय न हो ।

तजरीदे बुखारी हदीस २७० पृष्ठ १०१

उपरोक्त आयतों व हदीसों से हमने यह सिद्ध किया है, कि काफ़िर कौन है ? और काफिर ही नर्क में प्रविष्ट होंगे तथा जो कोई भी हज़रत मुहम्मद के प्रति ईमान नही लाया और इस्लाम के अतिरिक्त अन्य सम्प्रदायों का अवलम्बन किया, तो वह निश्चित ही नर्कगामी होगा एवं जिस किसी ने **'ला इलाहा इल्लल्लाह'** कह दिया और जिसके हृदय में राई के दाने के समान भी ईमान होगा, वह अवश्य ही स्वर्ग में प्रवेश पाएँगे । अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद की प्रार्थना पर यह विश्वास दिलाया, कि मैं तेरी उम्मत को क्षमा कर तुझको प्रसन्न करूँगा और तुझे तेरी उम्मत के विषय में कोई कष्ट न दूंगा ।

नर्क क्या करेगा ?

सउस्लीहे सकर् व मा अद्राका मा सकर् ला तुब्की व ला

तज़र् लव्वाहातुल्लिल्बशर अलैहा इस्अतह अशर व मा जअलना अस्हाबन्नारे इल्ला मलाएकतन ।

कुरआन पारा २९ रकू १/१५

अर्थः—तत्काल हम उनको प्रविष्ट कर देंगे 'सकर्' (नर्क) में । तू ! क्या जाने, कि क्या 'सकर्' है ? नहीं शेष रखती उन्हें,और नहीं छोड़ती, झुलस देने वाली है चेहरों को । उसके ऊपर १९ फरिश्ते हैं और हमने नर्क के पहरेदार फरिश्ते ही नियुक्त किये हैं । अनुवादशाह रफीउद्दीन पारा २९ पृष्ठ ८१६

व्याख्या–'सकर्' नर्क के नामों में से एक नाम है । यह महान प्रतिष्ठायुक्त है । जो वस्तु इसमें डाल दी जाए, उसे शेष न छोड़ती है, नष्ट किये बगैर ।

मुज़ाहिद ने दोनों वाक्यों की व्याक्या इस भांति की है, कि 'सकर्' किसी को जीवित नहीं छोड़ता और न कोई पदार्थ उसमें मृतावस्था में ही रहता है । जब नर्कगामी उसमें भस्म हो जाएंगे, तो उनकी शारीरिक स्थिति तत्काल ही सुधर जाएगी ।

ज़ुहाक का कथन है, कि प्रत्येक पदार्थ की तीव्रता एक सीमा तक पहुँच कर असक्त हो जाती है, किन्तु 'सकर्' (नर्क) की तीव्रता मन्द नहीं होती । वह बच्चों को विकृत कर देने वाली है, सफेदी को श्यामला में परिवर्तितकर्ता है । नर्क पर १९ फरिश्ते नियुक्त होंगे । यह समस्त नर्क के रक्षक होंगे । उनमें से एक अधिपति और शेष १८ उसके अधीन कार्यरत होंगे । रसूलिल्लाह ने फरमाया-- उनमें से प्रत्येक फरिश्तों के दोनों कधों के मध्य एक वर्षीय मार्ग होगा । दया उनके हृदयों से निकाल ली गई है। प्रत्येक फरिश्ता ७० हज़ार को उठा कर नर्क में जहां चाहेगा, फेंक देगा । तफसीर मज़हरी पारा २९ पृष्ठ १९६

पाठक बन्धुओं ! नर्क के इतने अत्याधिक शक्तिवान और समर्थ रक्षकों के होते हुए भी काफ़िरों को लौह शृंखलाओं में

जकड़ना पड़ेगा और वह शृंखलाएं मीलों लम्बी होंगी तथा उनकी एक कड़ी संसार के सम्पूर्ण इस्पात से भी भारी होगी। तत्पश्चात भी उन काफिरों को सन्दूकों में कैद किया जाएगा। तथा खम्बों से बांधा जाएगा। आयतः--

कल्ला लय्युनबजन्ना फ़िल्हुतमह व मा अद्राका मल्हुतमह् नारूल्ला हिल्मुकदतुल्लाति तत्तलेवो अलल्अफ़्एदह् इन्नाहा अलैहिम् मौसदतुन फ़ी अमदिम्म मुमद्दह। कुरआन पा. ३० रकू १/२६

अर्थातः-(कदापि नहीं यूँ अवश्य डाला जायगा हत्माह और तू क्या जाने कि हत्माह क्या है ? (हत्माह नर्क का एक नाम है।) इसके अर्थ तोड़ने के हैं जो चीज उसमें डाली जायगी वह टूट जायगी) कोई उसको फेंकता नहीं है। उस रौंदने वाली में तूने क्या समझा, क्या है रौंदने वाली ? अग्नि है अल्लाह की सुलगाई हुई, जो हृदयों पर चढ़ आती है। निस्सन्देह उनके ऊपर दरवाजे बन्द किये हुए है। वह जो हृदय को झांक लेती है ! उनमें उनको बाँधना है ! खींचे हुए स्तम्भों के मध्य, जो बडे बड़े लम्बे हैं।

आज़मुत्तफासीर पारा ३० पृष्ठ ३०७

कल्ला के अर्थ झिड़क देना है। जिस वस्तु में उन्हें भ्रम हुआ था, वह अवश्य हत्माह में डाला जायगा (अर्थात नर्क में) और नर्क का नाम हत्माह इसलिये है कि जो वस्तु उसमें डाली जाती है, उसे वह खण्ड कर डालती है ! ऐ मोहम्मद तुझे किस चीज ने बताया कि हत्माह और उसका विवरण क्या है ? अल्लाह की भली प्रकार से सुलगाई हुई आग है ! ऐसी आग जो हृदयों के बीच चढ़ जाती है और हृदय को जलाना बहुत बड़ा संकट है। और निस्सन्देह वह अग्नि उन काफ़िरों पर बन्द की गई है। और उसके दरवाजों को उन स्तम्भों के साथ दृढ़ किया गया है। तात्पर्य यह है कि नर्क के दरवाजों को स्तम्भों से बन्द कर दिया गया है। आज़मुत्तफासीर तफसीर फैजी पारा ३० पृ. ३१०

तफसीर मज़हरी में इतना विशेष है, इस कारण के अनादि काल तक रहने वाला संकट मालूम हो जाय ! क्योंकि सांसारिक अग्नि जब किसी को जलाती है, तो हृदय तक पहुँचने से पहले ही उसका विनाश कर देती है ! परन्तु नर्क की अग्नि हृदय तक पहुँचने पर भी विनाश नहीं करती । सूजन का संकट सदा होता रहता है । अथवा हृदय के वर्णन करने का कारण यह है कि समस्त शरीर में हृदय सबसे सूक्ष्म होता है । या यह कारण है कि निकृष्ट कर्मो का केन्द्र हृदय ही है ! आगे लिखा है कि नर्कगामी नर्क से क्यों न भाग सकेंगे ? इसका उत्तर यह दिया कि नर्क ऊपर से बन्द होगी ! इब्ने मर्दु इया ने अबू हुरेरा के उद्धृण से लिखा है । इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातम, इब्नेद्दुनिया और बहकी ने इब्ने मस्ऊद का कथन लिखा है कि नर्क के भीतर जब सदैव रहने वाले नर्कगामी रह जायेंगे, तो उनको लोहे के सन्दूकों में बन्द कर दिया जायगा और सन्दूको में लोहे की कीलें ठोक दी जायगी । और उन लोहे के सन्दूकों में बन्द करके नर्क के तल में फैंक दिये जायेंगे । ताकि कोई दूसरा उनके सकट को न देख सके ! और यह भी लिखा है कि उनको लम्बे लम्बे स्तम्भों के अन्दर जकड़ दिया जायगा । ....और उनकी गर्दनों में जंजीरें पड़ी होगी । मकातल ने कहा कि नर्कगामियों को अन्दर करके उन पर दरवाजे बन्द कर दिये जायेंगे । फिर उनमें आग की कीलें ठोक दी जावेगी ।

तफसीर मजहरी पारा ३० पृष्ठ ५२६ से ५३१ तक

इन्नलदैना अनकालव्वंजहीमंव्व तुआमन ज़ा ग़ुस्सतिव्व अज़ाबन अलीमा । कुरआन पारा २९ रकू १/१३

अर्थात:— निस्सन्देह हमारे निकट अग्नि और बेड़ियां है और खाना है गले में अटकने वाला, और संकट है दु:ख देने वाला ।

कुरआन पारा २९ पृष्ठ ८१३

व्याख्या— (बहकी ने हसन बसरी का कथन लिखा है। अनकालन आग की बेड़ियां होगी, और खाना ऐसा जिससे फन्दा लगेगा (न अन्दर उतरेगा न बाहर निकलेगा)..... .....इब्ने अब्बास के निकट ये थूवर का पेड़ है इब्ने अब्बास ने कहा, ज़री (सीन्ढ़ या थूवर का वृक्ष है) नर्क के अन्दर कांटों वाली झाड़ी की तरह एक वस्तु होगी जो एलवा से अधिक कडवी, मृतक वस्तु से अधिक दुर्गन्ध युक्त और अग्नि से अधिक गर्मी होगी जब नर्क-गामियों को वह खिलायी जायगी तो न पेट में जायगी न मुँह के अन्दर रहेगी। बीच में रूकी रहेगी। न भूख को दूर करेगी। इब्ने अबीद्दुनिया ने हज़रत हुज़ैफ़ा के उद्धृण से लिखा है कि नर्कवासियों पर आग के साँप और बिच्छू गिरेंगे। यदि उनमें से एक साँप पूर्व में फूँक मारे तो पश्चिम वाले जल जांय। यदि एनमें से एक बिच्छू संसार के लोगों को डस ले तो सब जल जांय। वह साँप और बिच्छू नर्कवासियों पर गिरेंगे और उनके माँस और खाल के भीतर प्रविष्ट हो जायेंगे।

अबू सईद खुदरी की रवायत है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया कि नर्कवासियों में सबसे सरल सकट अबूत आलम पर होगा। उसको अग्नि के दो चप्पल पहनाये जायेंगे जिससे उसका मस्तिष्क उबलने लग जायगा मुस्लिम ने नौमान बिन बशीर से उद्धृत किया है कि नर्कवासियों में सबसे हल्का सकट उस व्यक्ति को होगा जिसके दोनों चप्पल और चप्पलों के तस्मे आग के होंगे। जिसके कारण से हांडी के उबाल के सदृश्य उसका मस्तिष्क उबलेगा। तफसीर मज़हरी पारा २९ पृ. १६९

(खान पान के सम्बन्ध में दूसरी आयत)

तस्ला नारन हामियह, तुस्का मिन ऐनिन आनियह लैसा लहुम तआमुन इल्ला मिन जरीइल्ला युस्मेनो व ला युगनीमिन जूए।

कुरआन पारा ३० रकू १।१३

अर्थात—जलती अग्नि में प्रविष्ठ होंगे। और उबलते हुए चश्मों में से पानी पिलाया जायगा। और उनके लिये ज़री (थूवर जैसा वृक्ष या कांटेदार वृक्ष) खिलाया जायगा न वह भूख को रोकता है न शरीर को पुष्ट करता है। पारा ३० पृष्ठ ८४२

व्याख्या—वे अत्यन्त गर्म अग्नि में प्रविष्ट होंगे। इब्ने अब्बास ने कहा कि अग्नि प्रचण्ड की जायगी और अल्लाह के शत्रुओं पर उसे भड़काया जायगा। उनको उबलते हुए चश्मों का पानी पिलाया जायगा।

इब्ने अबी हातम ने सद्दी का कथन लिखा है कि आनियाह (गर्मी की अन्तिम सीमा को कहते हैं) जिसके ऊपर गर्मी की कोई डिग्री न हो, बहकी ने हसन बशरी के प्रमाण से लिखा है कि जिसके ऊपर गर्मी का कोई दर्जा न हो उसमें काफिरों को डाला जाएगा। कई एक ने लिखा है कि दुनिया के आरम्भकाल से नर्क दहक रहा है। इसलिए उसकी गर्मी अन्तिम सीमा तक पहुँची हुई है। व्याख्याकारों ने लिखा है कि नर्कगामी नर्क में प्यासे प्रविष्ठ होंगे। तो उन्हें उबलता पानी पिलाया जायगा। ऐसा उबलता हुआ कि यदि संसार के पहाड़ों पर एक बून्द गिर जाये तो पहाड़ पिघल जांय। अबूदर्दा ने वर्णन किया है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया कि नर्कवासियों पर ऐसी तीव्र क्षुधा लगाई जायगी। जो अन्य सारे संकट के सदृश्य होगी।

तफसीर मज़हरी पारा ३० पृष्ठ ३८९

आगे आयत है:—

इन्ना आतदना लिज़्ज़ालेमीना, नारन अहाता बैहिम सुरा दिकोहा व इंय्यस्तगीस् युगासू बेमाइन कल्मुहले यशविल्वुजूहो।

कुरआन पारा १५ रकू ४/१६

अर्थात—इस आयत की व्याख्या मज़हरी में इस प्रकार है और अत्याचारियों अर्थात काफ़िरों के लिये अग्नि तैयार कर

रखी है जिसकी कनाते उनको घेर लेंगी । (कनात उसे कहते हैं जो दीवार की तरह किसी को घेर ले) ये इस दीवार की मोटाई ४० वर्ष के मार्ग के सदृश्य होगी । यदि वह अधिक प्यास के कारण पानी मागेंगे तो उन्हें मोहल की तरह होगा । 'मोहल' की व्याख्या में रसूलल्लाह ने फरमाया कि यह तेल कि तिलछट के सदृश्य होगा, मुँह के निकट लाते ही चेहरे की खाल गिर पड़ेगी । और वह चेहरों को भून डालेगा ।

तफसीर मज़हरी पारा १५ पृष्ठ २१६ से २१८ तक

दूसरी आयत है:—

इन्ना आतदना लिल्काफेरीना सलासला वा अग़लालन वा सईरा

कुरआन पारा २९ सू०दहर रकू १/१९

निस्सन्देह हमने काफिरों के लिये जंजीरें, तौक (फन्दा) और अग्नि तैयार कर रखी है ।

व्याख्या:— (आदेश होता है कि हमने काफिरों के और कृतघ्नी व्यक्तियों के लिये लौहे की जजीरें तैयार कर रखी हैं जिनमें उन्हें फरिश्ते बांध कर नर्क में बुरी तरह से घसीटेंगे । और बड़ी बड़ी भारी जजीरें और उनकी गर्दनों में फन्दे डाले जायेंगे । और धधकती अग्नि में अनादि काल तक उन्हें भुना जायगा । और फन्दों से उनके हाथ गर्दन के साथ बाँधकर धधकती आग में झोंक देंगे ।) आजमुतफासीर पारा २९ पृष्ठ १६८

नर्क के सम्बन्ध में मिर्ज़ा हैरत देहलवी ने अपनी पुस्तक मुकद्दमा ए 'तफसीरूल फ़ुर्कान' मे बहुत से प्रमाण एकत्र कर दिये हैं । हम चाहते हैं कि उस लेख को हम यहाँ पर उद्धृत कर दें ताकि ईस्लाम के नर्क के सम्बन्ध में आपको पूरी जानकारी हो जाय । मिर्ज़ा साहब लिखते हैं कि:—कुरआन मज़ीद में नर्क की अग्नि का ईंधन मनुष्यों को बनाया गया है ।

सूरत हजरमें लिखा है कि नर्क के सात द्वार हैं । उनमें से

प्रत्येक का पृथक भाग है। सूरत रहमान में नर्कवासियों के कपड़ों का वर्णन है जो अग्नि के बने हुए होंगे। सूरत हज में वर्णित है कि वह अग्नि में लिपटे हुए होंगे। पहली सूरत में उस पानी का भी वर्णन है जो पिघले हुए पीतल के सदृश्य होगा। सूरत कहफ में है कि ठन्डक की वायु तक उनको नहीं लगेगी। सूरत नबा में है कि जितनी बार उनकी खाल जल भुन जायगी हम हर बार नई खाल उत्पन्न करेंगे। सूरत नसा में है कि उनके लिये बादे समून (इस हवा के लगने से आदमी मर जाता है।) और काले धुँए का साया होगा। सूरत कारआह में है कि गहरे पीले रग के ऊँटों के सदृश्य अंगारे उन पर फैंके जायेंगे, सूरत हज़ में है कि वे चीख-पुकार करेंगे। और सदैव नर्क में रहेंगे। ये तो उन लेखों का संक्षेप हुआ जो नर्क के सम्बन्ध में कुरआन में वर्णित है। आगे हदीसों के सम्बन्ध में लिखते हैं:—

नर्कवासियों को अन्धेरा आ के घेर लेगा और उन पर अग्नि की लपटें छा जायगी। ध्वनि और झनझनाहट उनके कानों में आयेगी। इसमें अत्यन्त कठोरता होगी। उस समय अपराधियों को अपनी मृत्यु का विश्वास हो जायगा और सब घुटनों के बल गिर जायेंगे।

नर्क के फरिश्तों में से एक फरिश्ता ये ध्वनि करता हुआ निकलेगा कि अमुक व्यक्ति का अमुक बेटा कहाँ है। जिसकी आत्मा दुनिया में बुरे कर्म करने की अभ्यस्त थी। उस पर लौहे की गदा लेकर लपकेंगे। और बहुत बड़ी बड़ी धमकियां देंगे। और अत्यन्त संकट में डालेंगे। और औधे मुँह नर्क की गुफा में डाल देंगे और कहेंगे कि ले 'इसका स्वाद ग्रहण कर' तू तो बड़ा उत्कृष्ट और प्रतिष्ठित है। अब इस गृह में निवास कर जिसके तट तंग और मार्ग अंधेरा और घातक है। तुझे इसमें सदैव रहना है और यह सदा अग्नि गृह बना रहता है। इसमें कैदियों को पीने

के लिये उबलता हुआ पानी है और उनका निवास नर्क है। अग्नि के फरिश्ते उन पर गदा से प्रहार करेंगे और स्वयं आग उन्हें जला भुना कर कबाब करेगी। उनकी इच्छा उसमें मर जाने की होगी परन्तु उससे मुक्ति असम्भव है। उनके पैर बालों से बंधे होंगे और पापों के अंधेरे से मुँह काले होंगे। वह प्रत्येक ओर कोनों में शोर मचायेंगे और कहेंगे– ऐ! मालिक हमारे साथ जो संकट का वचन था वह पूरा हो चुका। बेड़ियां हमें अत्यन्त कष्ट देती है। हमारी खाल जल गई है। हमें यहाँ से निकाल दे। अब भविष्य में हम ऐसा न करेंगे। नर्क का दरोगा उत्तर देगा:— बस अब आराम के दिन गये अब तुम्हारे भाग्य में इस निकृष्ट घर से निकलना असम्भव है। यहीं नीच अवस्था में पड़े रहो। मुझसे बातचीत न करो। यदि तुम निकाल भी दिये जाओगे तो भी अपने कृत्यों से न हटोगे। और जिस बात से तुम्हें रोका गया है वही कार्य रूप में लाओगे। नर्कवासी यह उत्तर सुनकर निराश हो जायेंगे और अपने कृत्यों पर पश्चाताप करेंगे। परन्तु अब क्या होता है? अब न तो आपत्ति से काम चलेगा और न ही पश्चाताप से रक्षा हो सकती है। अग्नि ही उनकी शायिका होगी। अर्थात वह लोग आग के कपड़े और गंधक के कुर्ते पहिनेंगे। उनके पैरों में भारी बेड़िया पड़ी होगी। नर्क के तंग मार्गों मे शोर मचाते और इधर उधर शौकातुर अवस्था में फिरते होंगे अग्नि उन्हें हाँडी के उबाल के समान उबालेगी और वे दुःख, कष्ट में ग्रस्त होकर शोर मचाते होंगे। उनके सिरों पर खोलता पानी डाला जायगा जिससे उनकी अंतड़ियां और खाल पिघल जायेगी। और फिर गदाओं से उन पर प्रहार किये जायेंगे जिससे उनके सिर खण्ड खण्ड होकर मुँह से पीप बहने लगेगा प्यास के कारण ज़िगर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। नेत्रों की पुतलियाँ गालों पर आ जायेगी। गालों तथा हाथ-पैरों का माँस सब झड़ पड़ेगा।

और जब शरीर की त्वचा जल जायगी तो फिर नई खाल बदल ली जायगी। हड्डियाँ मास रहित हो जायगी। और जीवन केवल नाड़ियों तथा पठों में रह जायगा। उनकी आग की लपटों से अत्यन्त दुःख होगा। और नर्कवासी इस अवस्था में मृत्यु की इच्छा करेंगे। परन्तु उन्हें मत्यु न आयेगी। जब तुम उन लोगों का हाल देखोगे कि उनके मुँह कोयले से भी ज्यादा काले, आँखों से अन्धे, जिव्हा से गूंगे, हड्डियाँ तथा पीठ टूटी हुई नाक कान कटे हुए, खाल फटी हुई, हाथोंकी जंजीरें गर्दन में पड़ी हुई माथे के बालों से पांव बन्धे हुए, तो तुम्हें शिक्षा होगी कि वह इस अवस्था में आग पर सिर के बल कैसे चलेंगे। लोहे के गौखरु अपनी आंखो के ढेलों से कुचलेंगे, अग्नि की लपटें उनके भीतरी अगों में दोड़ेगी। और बाहर के अगों में नर्क के सांप बिच्छू लिपटे होंगे। आगे-- मिर्जा साहब लिखते हैं कि अब हम खोल कर वर्णन करते हैं।

हज़रत मुहम्मद सा. फरमाते हैं कि नर्क में ७० हजार जंगल हैं। और हर जंगल में ७० हजार शाखाए हैं। और हर शाखा में ७० हजार सांप और ७० हजार बिच्छू हैं। काफ़िरों और मुनाफिकों को ये संकट देने वाले हैं।··· ···· ··· ये हाल तो नर्क के क्षैत्र का तथा उसकी शाखाओं का है। ··· ····· ··· नर्क के ७ दरवाजों की गिनती मनुष्य के सात अंगों के सदृश्य हैं। ऊपर के भाग का नाम जहन्नुम है। दूसरे का सकर, तीसरे का लज़ी, चौथे का हत्माह, पांचवें का सईर, छटे का ज़हीम, सातवं का हाविया। इनकी गहराई की कोई सीमा नहीं।

अबू हुरेरा ने वर्णन किया है कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया कि (तिरमज़ी और इब्ने माजा) यह एक पत्थर है जो १०० वर्ष हुए नर्क में छोड़ा गया था। अब उसके तल पर पहुँचा है। हजरत मुहम्मद ने फरमाया(बुखारी व मुस्लिम वरवायत रवायत नौमान बिन बशीर) कयामत के दिन मनुष्य पर छोटे से छोटा

संकट यह होगा आग की जूतियाँ पहनायी जायगी जिससे उसका (दिमाग) मस्तिष्क उबलने लगेगा। इब्ने अब्दुल बर ने यह उद्धृत किया है कि संसार की अग्नि ७० बार ८ रहमत (दया) के पानी से धोई गई। इसकारण उसमें इतनी तीव्रता नहीं है जितनी नर्काग्नि में है। एक हदीस में है। हज़रत मुहम्मद ने फरमाया कि अल्लाह की आज्ञा से नर्क की अग्नि हजार बार झोंकी गई (तीव्र की गई) यहाँ तक की लाल हो गई। फिर तीव्र की गई यहां तक की सफेद हो गई, फिर तीव्र की गई, यहां तक कि काली हो गई अब वह काली अंधेरी नर्क की अग्नि है! एक हदीस में आया है [बुखारी व मुस्लिम ने यह हदीस लिखी है] नर्क ने अपने खुदा से शिकायत की ऐ! खुदा मेरे भाग ने कुछ को खा लिया। उसको आज्ञा मिली की दो सांस ले लिया कर एक जाड़े में और एक गर्मी में अतः गर्मी के मौसम में जो तुम्हे सख्त गर्मी प्रतीत होती है यह उसी की सांस की गर्मी है। और जाड़े में जो जाड़े की अधिकता मालूम होती है तो उसी की सांस का परिणाम है। हजरत अन्स फरमाते हैं कि कयामत के दिन सबसे पहले बड़े दोलतमन्द काफिर को लायेंगे फिर उसे अग्नि में डुबकी देंगे। पुनः उससे पूछेंगे बतातो सही की दुनिया में तूने कभी आराम पाया था। वह कहेगा नहीं।

हजरत अबु हुरेरा फरमाते हैं यदी मस्जिद में लाख आदमियों से भी ज्यादा हो और एक नर्कवासी जोर की सांस लें तो सब के सब तत्काल मर जायेंगे! नर्कवासियों के शरीर की पीप अत्यन्त ही दुर्गन्ध युक्त होगी। और पीप इस तरह से बहेगा की उसमें सब नर्कवासी डूब जायेंगे। उस पीप घसाक है। अबु सईद खुदरी फरमाते हैं कि हजरत मुहम्मद ने फरमाया (तिरमजी) कि यदि एक डोल नर्क के घसाक (पीप) का दुनिया में डाल दिया जाय तो सब रहने वाले दुर्गन्ध युक्त हो जायें। यही

पीप नर्कवासियों को पीने को दिया जाता है। हजरत इब्ने अब्बास का कहना है कि हजरत मुहम्मद (तिरमजी वा इब्ने माजा) कि यदि जक्कूम (थूहर) का एक बिन्दू संसार के समुद्र में गिर पड़े तो सारे संसार के लोग जीवन से तग आजांय, तो फिर उन लोगो का क्या हाल, जिनका खाद्य पदार्थ ही यह होगा।

अबु दर्दा का कथन है कि हजरत मुहम्मद ने फरमाया [तिरमजी] की नर्कवासियों को भूख इसलिये अधिक लगेगी ताकि उन्हे संकट का कष्ट पूरा पूरा हो। फिर वह खाने के लिये ! विनती करेंगे तो उन्हें कांटों का आहार दिया जायगा। जिससे न पेट भरे न भूख दूर होगी। जब बहुत खाने की प्रार्थना करेंगे तो खोलता हुआ पानी लोहे के आंकड़ों से उनके निकट किया जायगा। ज्योंही वह मुंह लगायेगे, झुलस कर कोयला हो जायेगे जब वह पानी पेट में जायगा तो भीतरी अंग सब जल जायेगे। फिर वे नर्क के दरोगा को पुकारेंगे। दरोगा आयेगा तो कहेंगे, तू अपने प्रभु से प्रार्थना कर कि किसी दिन हमारे सकट में कमी हो जाय दरोगा कहेंगे, तुम प्रार्थना किया करो तुम्हारी कोई नहीं सुनेगा। फिर पुनः नर्कवासी अपने प्रभु को पुकारेंगे कि हमें इस संकट से छुटकारा दें ! ईश्वर की तरफ से उत्तर मिलेगाः—तुम सदैव नर्क में ही रहो। इस विषय में यह वर्णन किया गया है कि रब से कहने और उसका उत्तर मिलने में १००० वर्ष लगेंगे, फिर नर्क वासी इसके उत्तर में कहेंगे कि ऐ खुदा ! हम दुर्भाग्य का शिकार बन गये, ऐ खुदा ! हमें इस संकट से मुक्ति प्रदान कर तब ईश्वर से उन्हें उत्तर मिलेगा कि तुम्हारे रहने का स्थान नर्क ही है। तुम नर्क में ही पड़े रहो और मुझसे न बोलो। नर्कवासी नाराज हो जायेंगे और चीखना, शोर मचाना व रोना आरम्भ कर देंगे।

हजरत अबु अमामा फरमाते हैं कि हजरत ने (तिरमजी) मुहम्मद ने फरमाया कि जब पानी नर्कवासियों के निकट किया

पायगा तो वे उससे नाक सिकोड़ेगें । मगर जब उनके मुँह से लगाया जायगा तो उनका मुँह झुलस देगा और सिर की खाल गिरा देगा और जब पियेगा तो अतांड़या कट-कट कर गिर पड़ेगी।

हज़रत मोहम्मद ने फरमाया कि नर्क में बख्ती ऊटों की गर्दन में साँप होंगे । यदि वे एक बार काटेंगे तो उसका प्रभाव ४० वर्ष तक रहेगा । और उसमें बिच्छू इतने बड़े होंगे जैसे पालान (ऊंट की काठी) उनके डंक की सूजन ४० वर्ष तक रहेगी ।

अबू हुरेरा ने वर्णन किया है कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया कि नर्क में काफ़िर की दाढ़ ओहद पहाड़ के बराबर होगी और इसके शरीर के खाल की मोटाई ३ दिन के सफर के बराबर होगी । एक हदीस में आया है (तिरमज़ी अबू सईद की रवायत से) कि कयामत के दिन काफिर अपनी जिव्हा नर्क के बंदीगृह में घसीटेंगे । और लोग उसे पांव के तले रोदेंगे । और शरीर बड़ा होने पर भी आग उन्हें बराबर जलाती रहेगी । नया नया माँस और ताजा खालें उन्हें तत्काल बदलती रहेगी ।

मुकद्मा ए तफसीरूल फुर्कान पृष्ठ ९१ से १०२ तक

इतना लिखने के पश्चात मिर्जा साहब ने लिखा कि यह जो नर्क के सम्बन्ध में वर्णन किया गया है वह वास्तविक नहीं है, उदाहरणहै । मिर्जा साहब को कोई उत्तर ज्ञात नहीं हुआ इसलिये उन्होंने ऐसी ऊटपटांग बात लिख दी जिसे अन्य मुसलमान नहीं मानते क्योंकि जो बात सिद्धांत की होती है उसके नियम यथार्थ पर निर्भर होते हैं, उदाहरणों पर नहीं । अतः जो कुछ नर्क के सम्बन्ध में लिखा गया है वह वास्तविकता है, उदाहरण नहीं, क्योंकि कब्रों से मनुष्यों को शरीर सहित उठाया जायेगा वही शरीर नर्क में डाले जायेंगे । दूसरी बात मिर्ज़ा साहब ने लिखी कि अरब के लोग बहुत कठोर थे इसलिये वे ऐसी ही बातों से भयभीत हो सकते थे । हम कहते हैं कि क्या हज़रत मुहम्मद

और उसके ख़ुदा को यह पता नहीं था कि ईस्लाम अरब के अतिरिक्त और स्थानों पर भी फैल जायगा ।

—: नर्क में सदैव रहने के सम्बन्ध में कुरआन के प्रमाण :—

खालदीना फ़ीहाला युख़फ़्फ़ो अन हुमुल्अजाबो वा ला हुम युन्ज़रून । कुरआन पारा २ रकू १६/२

वह सदैव के लिये नर्क में रहेंगे । उनका संकट कम नहीं किया जायगा न वे निकाले जायेंगे । कुरआन पारा २ पृष्ठ ३२

व्याख्या:—[जो लोग कुफ़ की हालत में मरेंगे अर्थात (मोहम्मद पर ईमान न लाये होंगे) तो उन पर अल्लाह और फरिश्तों की फटकार कयामत तक रहेगी और नर्क की अग्नि में ले जायेगी । न तो कभी संकट में न्यूनता होगी न सकट कभी समाप्त होगा, अपितु सदैव घोर से घोर संकट होते रहेंगे ।] इब्ने कसीर पारा २ पृष्ठ १६ यही आयत पारा ३ रकू ६/१७ में भी है ।

मन सद्दा अनहो वा कफ़ाजहन्नमा सईरा इन्नल्ला ज़ीन कफरू बे आ यातेना, सौफ़ा नुस्लीहिम नारन, कुल्लमानुज़ोजतजुलूदोहुम् वइल्नाहुम जुलूदन गैरहा लियज़ कुल्अज़ाब ।

कुरआन पारा ५ रकू ८/५

उसमें से वे हैं जो मुसलमान न हुआ और उसके लिये नर्क पर्याप्त है । निस्सन्देह जो लोग हमारे चिन्हों से विमुख हुए हम उनको अवश्य प्रविष्ट करेंगे। जब उनके चमड़े गल जायेंगे तो हम दूसरे चमड़े बदल देंगे, ताकि सकट को उठाते रहें । कु. पा. ३ पृ. ११६

व्याख्या— (यहुदियों ने हज़रत मुहम्मद का इन्कार किया और नुक्ता चीनी की । हम ऐसे दुर्भाग्यो को नर्क में जलायेंगे । जिस तरह संसार में नये-नये रग बदलते हैं । इसी तरह कयामत में उनके सकट की अवस्था होगी । जब एक खाल उनकी जल जायगी तब दूसरी खाल पैदा हो जायगी । इससे तात्पर्य यह है कि कोई यह न समझे कि यदि वह नर्क में डाले जायेंगे तो घड़ी

दो घड़ी में जलभुन कर भस्म हो जायेंगे और कष्ट जाता रहेगा। अपितु वे नर्क में हमेशा जलते रहेंगे । एक शरीर जलने के पश्चात अकस्मात दूसरा उत्पन्न हो जायगा।

तफसीर हक्कानी पारा ५ पृष्ठ २५

जो खुदा और रसूल को न माने वह सदैव नर्क में रहेगा। **वा मय्यासिल्लाहा व रसूलहू फ़इन्ना लंहू नारा जहन्नमा खालेदीना फ़ीहा अबदा।** कुरआन पारा २९ रकू २/१२

और जो कोई अवज्ञा करे अल्लाह और उलके रसूल की निसन्देह उसके लिए आग है नर्क की, सदैव उसके बीच रहने वाले हैं अनादि काल तक। कुरआन पारा २९ पृष्ठ ८११

और जो कोई अवज्ञा करे अल्लाह की, उसकी भक्ति में और अवज्ञा करे उसके रसूल की विधि निषेध में तो निस्सन्देह उसके लिए आग है नर्क की, सदैव रहेंगे उसमें अनादि काल तक कभी उस से छुटकारा न पायेंगे। तफ़सीर क़ादरी भाग २ पृष्ठ ५८२

नर्क में न मरेगा न जियेगा।

फ़इन्न लहू जहन्नमा, ला यमूतो फ़ीहा व ला यहया

कुरआन पारा १६ रकू ३/१२

निस्सन्देह उनके लिए नर्क है, न उसमें मरेगा और न जियेगा।

कुरआन पृष्ठ ४३५

व्याख्या:— जो व्यक्ति विद्रोही होकर अल्लाह के समक्ष जायगा उसके लिए नर्क निश्चित है उसमें न वह मरेगा न जियेगा अर्थात कुफ़र (ईमान न लाकर) और अवज्ञाकारी होकर मरेगा, नर्क के अन्दर उसको मृत्यु नहीं आएगी कि संकट से छूट जाय, और न अच्छा जीवन मिलेगा कि सुख पावे।

तफ़सीर मजहरी पारा १६ रकू पृ. ४१२

कपड़े आग के होंगे।

फ़ल्लजीना कफ़रू कुतेअत लंहुम सियाबुम्मिन्नारिन युसब्बो मिन

फौके रऊसेहिमुल्हमीम्। युस्हरो बिही मा फी बुतूनेहिम वल्जुलूदो वलहुम्मकामे ओमिन हदीद। कुल्लमा अरादु अंय्यखरोजू मिन्हा मिन ग़म्मिन् उईदू फीहा व जूकू अज़ाबल्हरीक।

कुरआन पारा १७ रकू २१६

इसकी व्याख्या मज़हरी ने इस प्रकार की है—कि सो जो व्यक्ति काफ़िर (इस्लाम से विमुख) थे, क़यामत (प्रलय) के दिन उनके पहनने के लिए अग्नि के कपड़े काटे अर्थात तैयार किये जाएँगे। अर्थात काफ़िरों के झगड़े का फैसला [निर्णय] करने के लिये आग के कपडे नाप के अनुमान से दिए जायेंगे। अल्लाह ने फ़रमाया है कि अल्लाह क़यामत के दिन उनके मध्य फैसला करेगा। जिसका वर्णन इस आयत में किया गया है। वह यही फैसला है। इमाम अहमद ने फरमाया विश्वस्त प्रमाण के साथ हज़रत जवेरिया से निरूपण किया है कि हज़रत मुहम्मद ने फ़रमाया, जिसने संसार में रेशम पहना, क़यामत के दिन अल्लाह उसे आग के कपड़े पहनायेगा। बज़ाज़ इब्ने अबी हातम और बैहकी ने प्रमाणिक रीति से अन्स से वर्णन किया है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया कि सबसे पहले आग का जोड़ा (पुरा पहनावा) शैतान को पहनाया जावेगा। वह उसको अपने दोनों भवों पर रखेगा फिर उसको घसीटा जायगा। और जिब्रील के पीछे उस की सन्तान आगे के कपडे खैंचती चलेगी। उनके सिरों में अत्यंत गर्म पानी डाला जायगा। जिसके कारण जो कुछ उनके पेटों के भीतर, चर्बी, अन्तडियां, जिगर, तिल्ली आदि होगा। वह पिघल जाएगा, और खालें भी पिघल जायेगी। तात्पर्य यह है, कि गर्म पानी बाहर तथा भीतर दौनों स्थानों के अंगों पर प्रभावशाली होगा। और उनको (मारने) के लिए विशेष रीति से लोहे के गुर्ज़ बनाये जायेंगें। इब्ने अब्बास ने फरमाया— कि नर्कवासियो को गुर्जो से मारा जायगा, और गुर्ज़ की चोंट प्रत्येक अंग पर बराबर पड़ेगी।

अबू याली और इब्ने अबी हातम, हाकम और बैहकी ने अबू सईद खुदरी की रवायत से वर्णन किया है कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया यदि लोहे का वह गुर्ज़ भूमि पर रख दिया जाए, और समस्त जिन्न और इन्सान उसे उठाना चाहें, तो उठा न सकें। और उसकी यदि एक चोंट पहाड़ पर पड़ जाए तो पहाड़ खण्ड खण्ड हो जाए, इस गुर्ज़ से नर्कवासियों को मारा जाएगा, वह जब भी नर्क से निकलने का यतन करेंगे उसी में लौटाए जायेगे। बैहकी ने अबू सालह का कथन लिखा है— कि जब नर्क में किसी काफ़िर को फेंका जायगा तो वह उसके तल तक पहुँचे बिना कहीं नहीं रूकेगा। फिर नर्क की आग का जोश उसे उठाकर नर्क के ऊपरी तल तक पहुँचा देगा। उस समय उसकी अस्थियों पर माँस का कोई अंश तक न होगा। सबको आग खा चुकी होगी, केवल पिन्जर शेष होगा, फिर फरिश्ते उनको गुर्ज़ों से मारेंगे तो वह लुढ़क कर तले तक पहुँच जाएँगे यह क्रम सदैव प्रचलित रहेगा।....बग़वी ने कहा कि वह सत्तर वर्ष तक लुढ़कते चले जाएँगे। तफसीर मज़हरी पारा १७ पृष्ठ १२६-२७

नर्क में चीखें चिल्लायेंगे।

वल्लज़ीना कफ़रू लहुम नारो जहन्नम, ला युक्ज़ा अलैहिम फ़मूतू व ला युखफ़्फ़ो अन्हुम्मिन अज़ाबेहा कज़ालेका नज्ज़ी कुल्ला कफ़ूर, व हुम यस्तरे ख़ूना फ़ीहा, रब्बना अख्रिजना नामलो स्वाले हन ग़ैरल्लाज़ी कुन्ना नामलो अवलम् नुअम्बिर कुम्मा यतज़क्करो फ़ीहे मन तज़क्करा वा जा अकुमुन्नज़ीर। फ़ज़ूकू फ़मा लिज़्ज़ा-लेमीना मिन्नसीर। कुरआन पारा २२ रकू ४/१६

निस्संदेह जो लोग काफिर (मुसलमानों से अतिरिक्त) हैं। उनके लिए नर्क की आग है। वहाँ न तो उनको मृत्यु आयगी और न

नर्क की वेदना ही उनसे कम की जाएगी (क्योंकि) हम हर काफ़िर को ऐसा ही दण्ड देते हैं। और वह लोग नर्क में चिल्लाएँगे, और कहेंगे कि ऐ हमारे खुदा हमको यहां से निकाल लीजिये। अब हम उत्तम तथा शुभ कर्म करेंगे। (खुदा कहेगा) क्या हमने तुमको इतनी आयु न दी थी, कि जिसे समझना होता वह समझ सकता। और तुम्हारे डराने वाला (अर्थात् पैग़म्बर) भी पहुँचा था, सो उसे न मानने का फल खाओ कि ऐसे अत्या चारियों का यहां तक कोई सहायक नहीं। तफसीर इब्ने कसीर पारा २२ पृ. ९१

(व्याख्या)— और जिन लोगों ने कुफ़र किया और तौबा नहीं की उनके लिए नर्क की आग है। न तो उसमें उसको मृत्यु आएगी और न संकट कम किया जायगा। हम प्रत्येक काफिर को ऐसा ही दण्ड देते हैं।··· ··· ··· अर्थात् पल भर के लिए भी नर्क का संकट न्यून नहीं किया जायगा। अपितु जब नर्कवासियों की खालें पक जायेगी, तो दूसरी खालें पहना दी जायेगी— ··· और वे नर्क के अदर चीखेंगे और कहेंगे— कि ऐ हमारे खुदा हमको (इस नर्क से) निकाल, ताकि हम उत्तम कर्म करें·····अल्लाह उनके उत्तर में कहेगा। क्या हमने तुमको इतनी आयु नहीं दी थी कि जिसके शिक्षा प्राप्त करते····· हज़रत मुहम्मद ने फ़रमाया कि जब अल्लाह किसी की आयु साठ वर्ष तक पहुँचा दें तो फिर उसकी ओर से किसी आपत्ति को स्वीकार नहीं किया जा सकता, (बुखारी ने कहा) इसी तरह बज़ार, अहमद वा अब्द बिन हमीद और अबू हुरैरा ने कहा····· फिर तुम्हारे पास डराने वाला (मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लअम) आ गए थे मगर तुमने उनकी बात न मानी, नज़ीर से तात्पर्य है (हज़रत मुहम्मद) अधिक व्याख्याकारों ने ऐसा ही कहा है·····इस आयत का अवतरण कुरआन और रसूल के अवज्ञाकारियों के सम्बन्ध में हुआ है। तफ़सीर मज़हरी पारा २२ पृ. ३४१

आगे आयत है इन्नल्मुज्रेमीना फ़ी अज़ाबे जहन्नमा ख़ालेदूना ला युफ़त्तारो अन्हुम व हुम फ़िहे मुबलेसून ।

कुरआन पारा २५ रकू ७/१३

निस्संदेह पापी नर्क के संकट में सदैव रहने वाले हैं। वह संकट हल्का नहीं किया जायगा और वह उस में निराश हैं। व्याख्या—अर्थात् दोषी और पापी लोग नर्क के अत्यन्त कष्ट दायक संकट में सदैव रहेंगें कभी किसी काल में उनके संकट में कमी न होगी। आजमुत्ताफासीर पारा २५ पृ. ३०

इस के अगली आयत है— **वा·नादौ यामीलको लेयक्ज़े अलैना रब्बोका काला इन्नकुम्माकेसून।** कुरआन पारा २५ रकू ७/१३

इस की व्याख्या में लिखा है (कि नर्कवासी दारोगा से कहेंगे) ऐ मालिक तू खुदा से प्रार्थना कर कि हमें वह सवर्था विनाश ही कर दे ताकि हम इस संकट से छुटकारा पावें ।

फ़रिश्ता हज़ार वर्ष के पश्चात् उनको इस प्रश्न का उत्तार देगा। कि तुम सदैव ही नर्का में रहोगे न तो तुम्हें मृत्यु ही आएगी और न संकट में कमी होगी। आज़मुत्ताफासीर पारा २५ पृ. ३२०

ऊपर हम ने कुछ प्रमाण इस विषय में लिखे हैं कि नर्क वासी सदैव नर्क में रहेंगे। वे चिल्लायेंगे, चीखेंगे कि ऐ खुदा हमें यहां से निकाल लो·अब हम उत्तम कर्म करेंगे परन्तु इसका उत्तर कुरआनी खुदा की ओर से यही मिलेगा कि तुम्हें नर्क से नहीं निकाला जायगा यही सिद्धान्त सुन्नत जमाअत का है।

इस नर्क के विवरण को देखते हुए प्रत्येक न्यायप्रिय यही कहेगा कि यह एक मिथ्या ढकोसला है न तो कभी ऐसा हुआ न

होगा न हो सकता है कि कर्म तोले जांय यदि किसी के पापों के तोल का पल्डा एक तोला भी भारी होगया तो वह सदैव के लिए नर्क अर्थात् ज़लती आग में डाल दिया जायगा हम इस पर कुछ भी नही लिखना चाहते हां, पाठकों से यह अपील करना चाहते हैं कि कयामत, स्वर्ग तथा नर्क के विवरण से आप को क्या आवाज़ आती है। आप हृदय के कानों से सुने आपको अवश्य आवाज़ आएगी कि यह सारे लेख सृष्टि नियम विरूद्ध मिथ्या कल्पना मात्र हैं इन में कुछ भी सत्यता नहीं लोगों को लुभाने और भयभीत करने के लिए इस्लाम के फैलाव का एक साधन मात्र है, न यह ईश्वरीय वाणी है। न किसी ईश्वर के भक्त का कथन है। अतः पाठकों का भी कर्तव्य है कि मिथ्यावाद में जकड़े हुए अन्ध विश्वासियों की इस पथभ्रष्टता से निकाल कर सन्मार्ग दिखाने का प्रयत्न करें आपका भी भला और उसके साथ समस्त संसार का भला होगा।

—देवप्रकाश

शुद्धि - पत्र.

पाठक बन्धुओं !

अत्याधिक सावधानी और सजगता रखते हुए भी पुस्तक में यत्र तत्र शब्दों में और मात्राओं के ऊपर अनुस्वर (ं) और अरबी के उद्-धणों में अक्षरों के नीचे नुक्ते अर्थात शून्य (़) और आधे (ॅ) तथा मात्राएँ आदि स्पष्टतः अमुद्रित रह गये हैं। अतः शुद्धि-पत्र प्रस्तुत है। फिर भी अनुस्वारों और नुक्तों को आप दृष्टि में रखेंगे तथा शुद्ध कर पढ़ेंगे।

१	५	५	हागा	होगा
२	५	१८	अकित	अंकित
३	७	४	मुन्कीर	मुन्किर
४	७	१२	लकद	लहद
५	९	२१	की	कि
६	११	४	कुसैतत	कुशैतत
७	१४	९	फजा	फ़ज़आ
८	१६	५	जिब्रिल	जिब्रील
९	१७	५	युन्फ़को	युन्फखो
१०	१७	५	अफ़वाजम	अफवाजंव्व
११	१७	६	अबवाबम	अबवाबन
१२	२१	९	यखस्खेमून	यखतसेमून
१३	२१	१०	यस्तति	यस्ततो
१४	२१	११	सेहतम	सेहतंव्वा
१५	२१	१२	आहलेहीम	आहलेहिम
१६	२१	१४	मम्बासना	मम्बाअसना
१६	२१	१५	सैहतम	सैहतंव्व
१८	२१	१८	अन्गमन	आगमन

१६	२५	१४	कथ्य	कथन
२०	२५	१६	दिवे	दिये
२१	२६	६	सफायत	शफायत
२२	२७	२०	सवथा	सर्वथा
२३	२६	२१	नही	नेही
२४	३६	६	की	वे चाँद की
२५	४२	१५	तरमजी	तिरमजी
२६	४३	८	सीतरा	तीसरा
२७	४६	४	मांगे	मांगोगे
२८	४६	१६	यज्लेमून	यज्लेमून्
२६	५४	१०	इस्राफिल	इस्राफील
३०	५५	१	स्याम	शाम
३१	५५	७	क	को
३२	५७	१	ज	जो
३३	५७	८	तात्त्पय	तात्पर्य
३४	५७	१५	हाहिने	दाहिने
३५	६०	४	होम्	हिम्
३६	६१	१५	पैर	पांव
३७	६१	२०	०	खुदा
३८	६५	५	भयकर	भयंकर
३६	६५	२४	जरा	बाह
४०	६६	२१	के	०
४१	७३	१३	खालिदन	खालेदीना
४२	७५	५	कि	की
४३	७५	१५	फ़िहा	फ़ीहा
४४	७५	१६	फ़िहा	फ़ीहा
४५	७८	१०	०	जन्नत में

४६	८७	१३	भावि	भान्ति
४७	८९	६	का	की
४८	८९	१८	स्वग	स्वर्ग
४९	८९	२३	सदा चा	सदा
५०	९१	१८	शरूर	सरूर
५१	९२	६	एब	ऐब
५२	१०२	२५	मोमाना	मोमिनो
५३	१०३	११	मालाना	मौलाना
५४	१०३	२३	होरे	होंगे
५५	१०५	२५	लखक	लेखक
५६	१०८	२२	अहदीस	अहादीस
५७	१०९	१	मिम्बरा	मिम्बरों
५८	११४	१५	होगा	होंगे
५९	११४	२४	(पोषाख)	(पौषाक)
६०	११७	१३	धयो	धन्य
६१	१२१	२२	शाहवत	शहवत
६२	१२२	१६	ग्रहित	ग्रहीत
६३	१२३	१५	नक	नर्क
६४	१२३	१७	०	हेतु
६५	१२९	५	१५	१२
६६	१२९	१९	लस्सोफ़ा	लसौफ़ा
६७	१४०	१२	अगा	अंगों
६८	१४१	२६	पी	पीप
६९	१४२	७	की	कि
७०	१४४	१७	०	नर्क

□●□

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 5327
दयानन्द महिला मह...